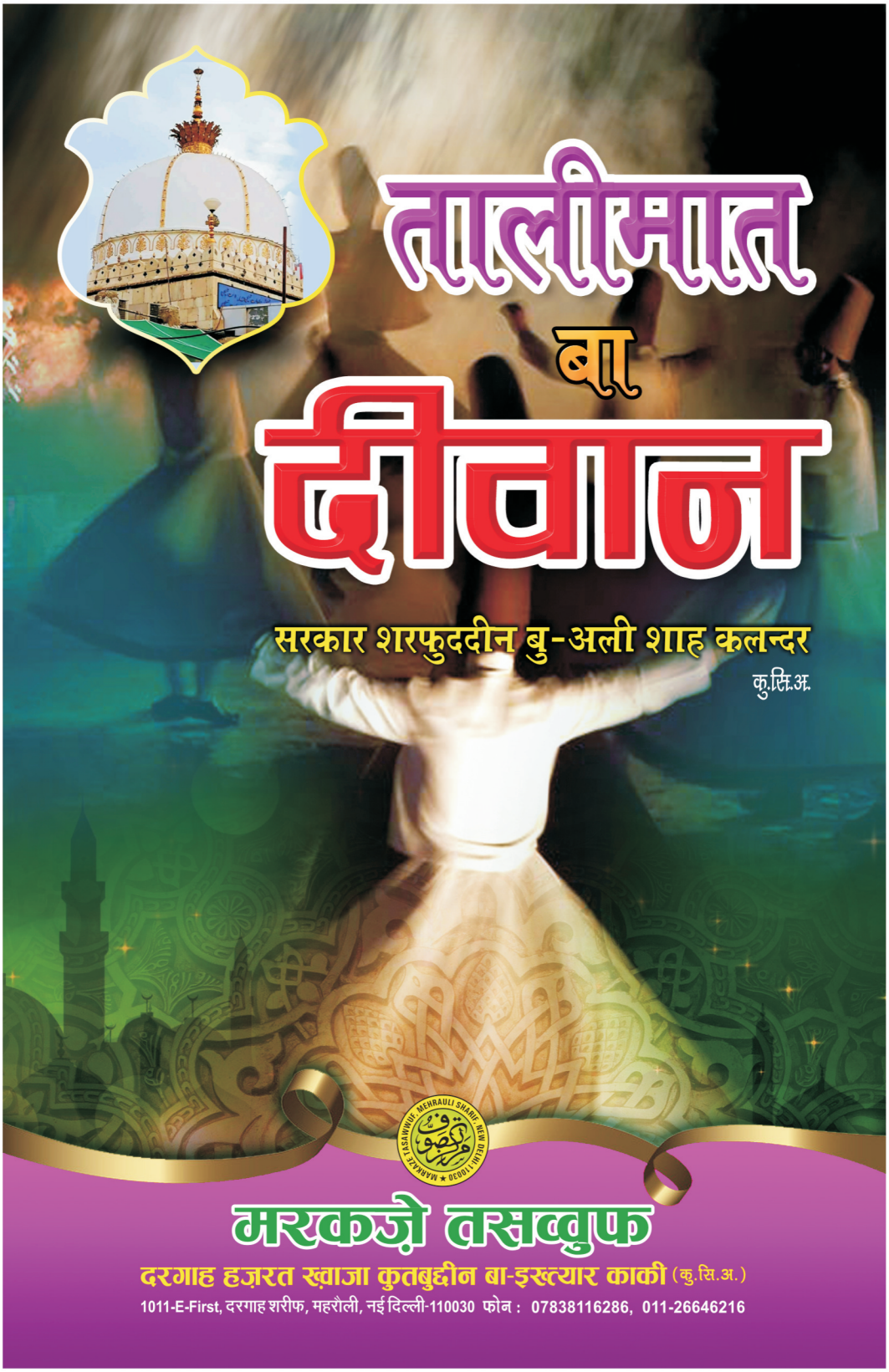
तालीमात
बा
दीवान
सरकार शरफुद्दीन बु-अली शाह कलन्दर
कु.सि.अ.
मरकज़े तसव्वुफ
दरगाह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)
1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030 फोन : 07838116286, 011-26646216

درگاہ سرکار خواجہ قطب الدین بختیار کاکی

قدس سرّہُ العزیز

MARKAZE TASAWWUF

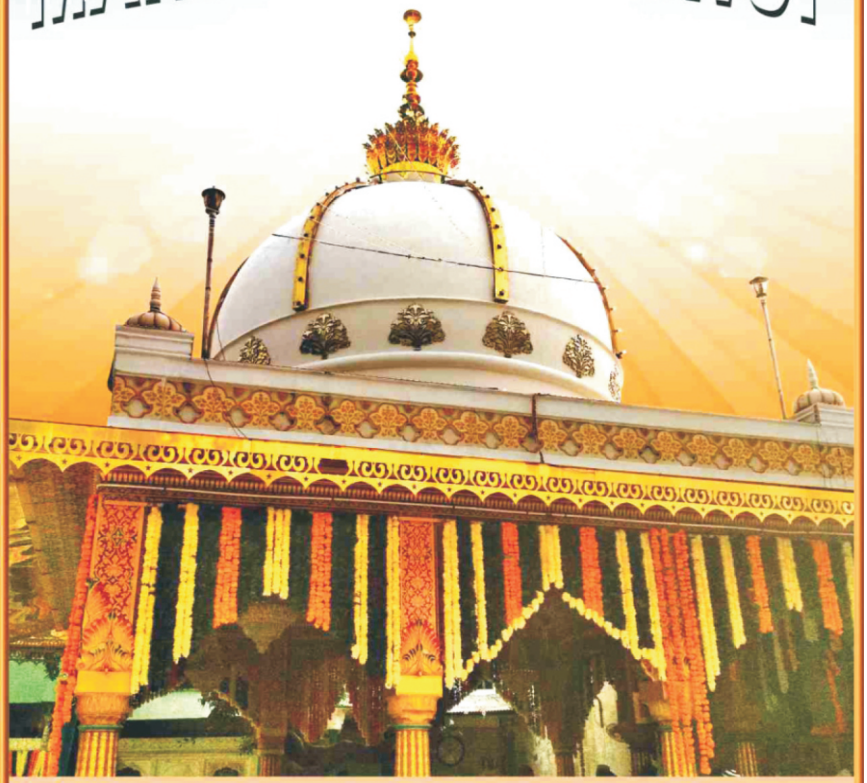

दरगाह सरकार ख़्वाजा

क़ुतबुद्दीन बा-इख़्तियार काकी

(क़ु.सि.अ.)

DARGAH SARKAR

KHWAJA QUTBUDDIN BA-IKHTIYAAR KAKI(Q.S.A.)

MEHRAULI SHARIF, NEW DELHI-110030

तालीमात
बा
दीवान

सरकार शरफ़ुददीन बु-अली शाह कलन्दर
क़ु.सि.अ.

MARKAZE TASAWWUF MEHRAULI SHARIF NEW DELHI 110030

सिर्फ़ हक़ीक़त का इल्म हासिल करने की
नियत रखने वाले मुरीदों के लिए

सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह

سرکار صوفی غیاث الدین شاہ

MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF

مرکز تصوف ★ مرکز تصوف ★ مرکز تصوف

SUFI SYED AMEERUDDIN
9899943607

SUFI KHURSHEED
8527260537

SUFI ASHRAF
9711116516

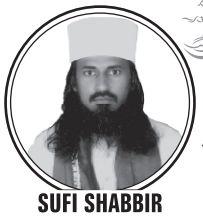

SUFI SHABBIR
08080436438

SUFI MAQSOOD ALI
9350081556

SUFI AKASH
9910567808

SUFI MEHTAB
9012386988

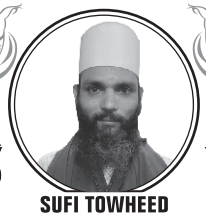

SUFI TOWHEED
8745976052

SUFI KASHAN
9911590331

SUFI GHOUS MOHAMMAD
8005977496

SUFI ARSHAD
8960494802

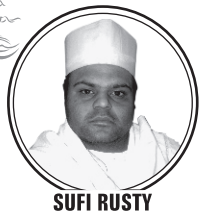

SUFI RUSTY
9716016611

SUFI SHAMIM
9716084184

SUFI SAMEER HUSAIN
9711060125

SUFI MUSTAQEEM
09811454523

पेशे-ख़िद्मत

मरकज़े-तसव्वुफ़ और इसके तमाम मेंबरों के नाम जिनकी वजह से मरकज़े-तसव्वुफ़ जो है सो है।

मेरे बच्चो!

मरकज़े-तसव्वुफ़ को पालना-पोसना, बड़ा करना, बस मुहब्बत और ख़िद्मत और हक़ीक़त का इल्म देते रहना। ये तसव्वुफ़ का ख़ादिम आपसे बहुत प्यार करता है।

आँसुओं के साथ.....जुदाई?

ख़ादिमे-तसव्वुफ़

सूफ़ी ग़यासुद्दीन

मरकज़े-तसव्वुफ़

दरगाह सरकार ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन

बा-इख़्तयार काकी कु.सि.अ.

मकान न. 1011-ई, फ़र्स्ट वार्ड न. 7,

महरौली, नई दिल्ली-110030

मोबाइल : 7838116286

जज़्बात

शुक्रिया बारीए-तआला कि तसव्वुफ़ की तालीम की ये किताब हमारे पास है। इसमें सरकार शरफ़ुद्दीन बू-अली शाह क़लन्दर पानीपत की फ़रमाई गई तसव्वुफ़ की तालीमात हैं। ये सरकार का दीवान जिसका फ़ारसी और फिर उर्दू में तर्जुमा था, उसका ये आम ज़बान में किया गया तर्जुमा है। इससे पहले कि इसे समझने के लिए पढ़ा जाए कुछ बातें समझ लेना ज़रूरी है।

ये सारी तालीम सरकार के दीवान से ली गई है लेकिन इसे शायरी समझने की भूल हरगिज़-हरगिज़ न की जाए क्योंकि अगर ऐसा किया गया तो लफ़्ज़ों में छुपे हुए असर से आप महरूम रह जाएँगे और इस तसव्वुफ़ के ख़ादिम की, तसव्वुफ़ के लिए की गई ख़िद्मत, मंजिल तक पहुँचना मुश्किल होगा। इसलिए बार-बार समझने के लिए पढ़ें।

इस सारी तालीम में फ़रमाई गई बातें आपको कुफ़्र लग सकती हैं लेकिन हक़ीक़त में ऐसा नहीं है। दरअस्ल हमारा दिमाग़ ऐसा बना दिया गया है कि हमें सच, झूठ लगता है और बार-बार दोहराया गया झूठ सच लगता है।

मरकज़े-तसव्वुफ़ का काम किताबें छाप कर बेचना और मुनाफ़ा कमाना नहीं है इसका काम तो तसव्वुफ़ की तबलीग़ करना है, इसके लिए मरकज़े-तसव्वुफ़ अपने मेंबरान को और आने वाले मेहमानों को मुफ़्त में तोहफ़े के तौर पर तसव्वुफ़ की किताबें पेश करता है। बेशक दरगाह शरीफ़ में मौजूद दुकान से भी ये किताबें लागत की क़ीमत पर दी जाती हैं कि जिससे और बेहतर तसव्वुफ़ की किताबें छापी जा सकें।

इस दौर में कहाँ रह गया है तसव्वुफ़ की अच्छी किताबें पढ़ने का शौक? कहाँ रह गया है हक़ीक़त को जान लेने, मुआरिफ़त हासिल करने का जुनून?फिर किसी का ये उम्मीद करना कि मुनाफ़ा कमाने के लिए ही छापी गई है समझदारी नहीं हो सकती। बस सवाब और तिजारत और सब-कुछ तैयार पा लेने का शौक़ है। किसे चाहिए तसव्वुफ़? किसे चाहिए हक़ीक़त?किसे चाहिए मुआरिफ़त?

ये तो सर ही माँगता है जनाब
तसव्वुफ़ पर कर्बला का साया है

बहरहाल हमें बस आपका जाग जाना और होश, तसव्वुफ़ की तरक़्क़ी चाहिए और यही मक़सद मरकज़े-तसव्वुफ़ का है। सबकी तरफ़ से सबके लिए सबको नज़्र है।

सय्यद अमीरुद्दीन
सज्जादा-नशीन मरकज़े-तसव्वुफ़
9899943607

ख़ादिमे-तसव्वुफ़
सूफ़ी ग़यासुद्दीन
मरकज़े-तसव्वुफ़
दरगाह सरकार ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन
बा-इख़्तयार काकी कु.सि.अ.
मकान न. 1011-ई, फ़र्स्ट वार्ड न. 7,
महरौली, नई दिल्ली-110030
मोबाइल : 7838116286

नसीहत न. 1

(1) हमारे सीने में हमारे महबूब का जलवा मौजूद है। हम बुत-परस्त हैं और हमारा दिल, हमारा बुतख़ाना है।

(2) ऐ ख़िज़्र हमेशा की ज़िन्दगी के जिस ज़रिये पर तू नाज़ करता है वो हमारे जाम की तह की तलछट का एक क़तरा है।

(3) जन्नत और दोज़ख़ हमसे सैंकड़ों मरहले दूर रह गए हैं। हमारी हिम्मते-मर्दाना इस तेज़ी से कहाँ जा रही है।

(4) अगर अर्श हमारे मस्ताने नारे को सुन ले तो अपनी जगह से हिल जाए और ऊँचे आसमानों पर गिर पड़े।

(5) अगर वो शमा हमारे मकान में अपना जलवा दिखाने के लिए रौशन हो जाए, हम परवानों की तरह इश्क़ मे जल मरें और इश्क़ से पनाह माँगे।

(6) अगर तू मिलन की रात हमारे घर आए तो हम तुझ पर नाज़ करें और घर तेरे हवाले कर दें।

(7) जब मैंने उसके दरवाज़े पर रोना और गिड़गिड़ाना शुरू किया तो उसने कहा कि शायद बू-अली हमारा दीवाना, आशिक़ है।

नसीहत न. 2

(1) जब वो महफ़िलों की शमा जैसा महबूब अपने चेहरे से नक़ाब उलटता है तो क्या दिल और क्या जानें, सब परवाने के पर की तरह जलते हैं।

(2) ऐ मजनूँ! तू हमसे राहे-रस्म तलब क्या पूछता है कि हमने तो आशिक़ी की सौ तरह की मंज़िलें तय की हैं।

(3) वहाँ आजिज़ी और नर्मी के सिवा किसी चीज़ की कोई अहमियत नहीं है अपने आपको मिट्टी की तरह मुलायम कर लेने के फ़ायदे ही से मुश्किलों को हल किया जा सकता है।

(4) तेरे दिल के अन्दर जब का'बे की रौशनी मौजूद है तो फिर तू का'बे की तरफ़ क्यों दौड़ता है, जब यार साथ है तो मंज़िलें तय करने का क्या फ़ायदा?

(5) शरफ़ुद्दीन! तू दिल और जान की आँख से हर तरफ़ हमेशा रहने वाले दिन की ख़ूबसूरती को देख रहा है। जब वो जानों के ज़ाहिर होने से ज़ाहिर और दिलों के छुपा लेने में छुपा हुआ है।

नसीहत न. 3

(1) ऐ हमें पिलाने वाले! पुरानी शराब से जाम भर।

जब तू कमज़ोर कोशिश करने वालों को देखे तो उनके सर पर हाथ रख।

(2) मैं नाम से बद्नाम आशिक़ हूँ, एक अच्छा नारा लगाता हूँ। मैं इज़्ज़त और आबरू नहीं चाहता और मैं नाम और निशान नहीं तलाश करता।

(3) वो बाज़ों का बादशाह! शायद हवाओं से नीचे आए। मैं जमीन पर दाने बिखेर रहा हूँ और जाल फैला रहा हूँ।

(4) ऐ कोशिश करने वाले! तू यहाँ से उठ और फ़रेब और धोखा देने वालों के गिरोह में चला जा। तू शराब पीने वालों की सोहबत के क़ाबिल नहीं।

(5) ऐ बू-अली! ख़ुदा, ख़ुदी के अन्दर नहीं समाता, तू बुतों को दोबारा का'बे में ले जाना चाहता है।

नसीहत न. 4

(1) अगर मैं किसी रात हक़ीक़त के शाह को अचानक देख लूँ तो अपना सर उसके क़दमों में रख दूँ और दिलो-जाँ को उस पर फ़िदा कर दूँ।

(2) मैं दिल में एक आग रौशन करूँ और दुनिया के क़िब्ले को जला दूँ फिर उसमें डूबी भँवों का क़िब्ला बनाऊँ।

(3) ऐ साक़ी! तेरा चेहरा मेरे लिए घर में रौशनी देने वाला है। मैं मयख़ाने के चारों तरफ़ चक्कर लगाऊँगा और मस्तों के पाँव चूम लूँगा।

(4) मैंने दिलो-जान बुतों पर क़ुर्बान कर दिए हैं। मैं चाहता हूँ कि कोई ख़रीदने वाला मिल जाए तो दीन और ईमान बेच दूँ।

(5) न तो मैं दोज़ख़ की आग से डरता हूँ, न मुझे जन्नत की परवाह है। मैं अपने महबूब का दीवाना हूँ और हूरो-ग़िलमानों की मुझे ख़्वाहिश नहीं।

(6) तूने क्या कहा, ये तो कुफ़्र है। अगर कहेगा तो तू काफ़िर हो जाएगा। ऐ नादान! तुझे मस्तों के राज़ की क्या ख़बर है।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन! रोज़ाना शे'र कहने से अपने आपको रोक। तेरे शे'रों से मुसलमानों और आग की पूजा करने वालों को शिकायतें हैं।

नसीहत न. 5

(1) मुझे उस तन्हाई की आँख पर नाज़ है जो अपने अन्दर दीदारे-इलाही के बाद आने वाले अफ़ीम और ईमान का सुरमा रखती है।

(2) क्या बात है तरीक़त के फुर्तीले सवारों की,

जिन्होंने नौ (9) आसमानों से जंग करने के लिए अपने घोड़ों पर ज़ीन डाली है।

(3) मेरे और महबूब के बीच जो राज़ है उसका तो हिसाब लिखने वाले फ़रिश्तों तक को ख़बर नहीं।

(4) जब मैं महबूब के कूचे में बैठ गया तो मैं जन्नत की एक जगह फ़िरदौस को लेकर क्या करूँगा।

(5) अगर मेरे दिल में एक शोला उठे तो वो जिब्रईल अलैहिस्सलाम के शहर को जला दे।

(6) मैं अपने एक मस्ताने नारे से अर्श को हिला कर रख दूँ। बू-अली शाह क़लन्दर! अब मैं आज़ाद हो गया हूँ इसलिए मैं दीन और कुफ़्र के रस्मो-रिवाजों को नहीं जानता।

नसीहत न. 6

(1) ना तो तेरे मुकम्मल होने का खोलकर बयान करना ख़्यालों में आ सकता है और न ही तेरी ख़ूबसूरती की सिफ़ात बयान करने में आ सकती है।

(2) तेरे राज़ों का एक भी जानने वाला नहीं जो ये राज़ कह डाले। तेरे राज़ के डर से ज़बानें बन्द हो गई हैं।

(3) हम मंज़िल-बमंज़िल नहीं चल सकते। तेरी तारीफ़

बयान करने में आवाज़ें टूट गयी हैं।

(4) तेरा हुस्न अनोखा है और तेरा जमाल अजीब है। दिलों को तूने हैरान और जानों को परेशान कर रखा है।

(5) तेरे सिवा कुछ नहीं है जो जलवा दिखाएँ। हमारी नज़रों में मकान और मकान में रहने वाला दोनों गुम हैं।

(6) हमने एक ज़र्रा भी ऐसा नहीं देखा जो तेरे नूर से रौशन न हो। हमने तो दुनिया में तेरे राज़ों की निशानियाँ तलाश की हैं।

(7) तेरी निगाह के एक तीर का मुक़ाबला मुश्किल है। यहाँ तो कमानो के आग़ोश से सैकड़ों तीर निकले हैं। ऐ महबूब! ये शरफ़ुद्दीन इश्क़ की वजह से सीने में छुपी आग और गले में आह और धुआँ रखता है।

नसीहत न. 7

(1) हमारा दोस्त हरग़िज़ हमारे दर पर दुखी नहीं हो सकता। हमारा वो यार कहाँ है कि हमारे दर पर दुखी नहीं होता।

(2) अगर हमारा मस्जूद जिसको हम सजदा करते हैं, वो हमारे हक़ीक़ी दिल में हो और हम मस्जिद जाएँ तो हमारा ये काम फ़िज़ूल और बेकारी से हरग़िज़ बेहतर नहीं है।

3 हम तो महबूब के कूचे को का'बे की चारदीवारी समझते हैं। ऐ नादान! तक़रीर करने वाले तुझे तो हमारे राज़ों से ज़रा भी वाक़फ़ियत नहीं है।

4 जो हक़ीक़त का मर्द होना नहीं जानते उनकी आँखों में कोई क़द्र और क़ीमत नहीं होती। हमारे यहाँ तो जान बेच देने का रिवाज है।

5 जब से यार ने हमको भुला दिया, हमने अपने आपको भुला दिया। काश! हमें भुलाने वाला भी हमें याद कर ले।

6 हमारे यार में हमसे वफ़ा और एक हो जाने का वादा किया। उसके बाद वो हरगिज़, हमारा दुनिया के लिए जागना हरगिज़ नहीं चाहेगा।

7 ऐ शरफ़ुद्दीन! हम तो उसकी निगाह की तलवार से जख़्मी हैं इसलिए हमारी बातों और किरदार से ख़ून की बू आ रही है

नसीहत न. 8

1 उस शोख़ और बेपरवाह महबूब के जलवे की क्या बात है, हमारे जिस्मों से जानें निकल रही हैं।

2 आसमान के कान एक पल में बहरे हो जाएँ अगर वो हमारी हाय-हाय को सुन ले।

(3) ऐ महबूब! तेरा ख़्याल अन्दर मौजूद है, और वो हमारे दाना दिल में नहीं समाता।

(4) बदन के रेगिस्तान और जंगल के हर ज़र्रे में उसी का जलवा, हमारी देखने वाली आँख को नज़र आता है।

(5) आज हम जुदाई की आग की वजह से दोज़ख़ बने हुए हैं, देखें! हमारे आने वाले कल में हमारा क्या होता है।

(6) हम तो मजनूँ की तरह बयाबान जंगल में चले जा रहे हैं। हमारी लैला तलवारों के घर में छुपी है।

(7) हमें पिलाने वाला थोड़े वक़्त में ही शौक़ की शराब से हमारा जाम भर देता है। हमारी वहशत पागलपन की वजह से कोई हमारे क़रीब नहीं आता। लोग हमारी दीवानगी की वजह से हमसे दूर भागते हैं।

(8) ये दुनिया क्योंकि हमारी जगह नहीं है इसलिए इस दुनिया में हमारी जगह बिल्कुल नहीं होनी चाहिए।

(9) जो शख़्स ''मुझे अपना जलवा दिखा'' कहता है वो हमारे सजे हुए चेहरे से ''तू मुझे हरगिज़ नहीं देख सकता'' सुनता है।

(10) उसके नूर भरे चेहरे के ख़्याल से हमारी रातों के अंधेरे दूर हो जाते हैं।

(11) इश्क़, बीमारियों को दूर करने वाले मसीहा के क्या

कहने, जो हमारी तमाम बीमारियों का इलाज है।

(12) हम ये अच्छा नारा लगाते ही रहते हैं। ऐ हमारे अच्छे इश्क़! तू ख़ुश रह।

(13) हमारे दिल पर इश्क़, चाक़ू चलाता है। हमारी तमाम रगों से ख़ून टपकता है।

(14) हमारी शराब की गर्मी शीशे और जाम दोनों को पिघला रही है। ऐ बू-अली! हम अली के ग़ुलाम हैं। ऐ बू-अली! अली हमारा आक़ा है।

नसीहत न. 9

(1) जब उस महबूब ने चेहरे से नक़ाब हटाया तो एक ज़र्रा नूर से रौशन हो गया। वो बे-पर्दा ख़ूबसूरती सूरज की तरह निकली।

(2) अगर कोई सौ पर्दे भी उसके चेहरे पर डाल दे वो उनको फाड़ देगा। उसका बेपरवाह हुस्न हरगिज़ पर्दे में नहीं आता।

(3) मुझे उस शर्म और हया पर फख़्र है कि वो दिल के फ़रेब देने वाली ख़ूबसूरती कभी रात के वक़्त में भी आशिक़ों के ख़्वाब में नहीं आती।

(4) ऐ ज़ाहिद! नक़ली इबादत करने वाले तू महबूब के

चेहरे को जन्नत में इन हसद भरी आँखों से देखेगा, ये ख़्याल पूरा होना नामुमकिन है।

(5) मेरा सर कोशिश और परहेज़गारी से ख़ाली है, मैं तो वह्दत के मयख़ाने से शराब पीता हूँ।

(6) मैं तो इश्क़ के समुन्दर में ग़र्क़ हूँ, अगर मैं नमाज़ की कोशिश करता हूँ तो ये बहते पानी भर बुलबुले की तरह मुसल्ला बिछाना है।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन! वहाँ ख़ुलूस और आजज़ी के बग़ैर नहीं पूछते, कोशिश व नक़ली इबादत करने वाला, अपनी नक़ली धोखेबाज़ी भरी इबादत से कामयाब नहीं हो सकता।

नसीहत न.10

(1) ऐ शरफ़ुद्दीन! अगर तू अपने महबूब से मिलन चाहता है तो बुलबुल की तरह रोज़ शामो-रात आहें ऊँची करता रह।

(2) मैं इश्क़ का मरीज़ हूँ और अपनी जान से तंग आ चुका हूँ। हकीम मेरी नब्ज़ पर क्यों हाथ रखे।

(3) जो शख़्स इश्क़ के इलाक़े से अजनबी हो जाए वो हमारे रस्मो-राह को नहीं जानता। दिलदारों का शरबते-दीदार बहुत अच्छा होता है लेकिन ये दीदार हमारी

क़िस्मत में नहीं हमारे तो नसीब ही ऐसे हैं।

(4) हम उससे दूर, बहुत दूर हैं और ये अफ़सोस की बात है, लेकिन वो हमारी जान की रग से भी ज़्यादा क़रीब है।

(5) ऐ बू-अली तू शायर हो गया बल्कि जादूगर हो गया तू ये कैसे अजीब-अजीब ख़्यालों की बातें कर रहा है।

नसीहत न. 11

(1) ऐ गुनाहों के माफ़ करने वाले! अगर उस महबूब का देखना गुनाह था तो तूने ऐसे ख़ूबसूरत क़द के साथ हसीन चेहरा क्यों दिया।

(2) अगर मेरी बुराई यही है कि मैं इश्क़ करता हूँ तो मैं चाहता हूँ कि मेरी ये बुराई बढ़ती चली जाए।

(3) मैं बुराई और झिड़कियाँ सुनने वाला हूँ मुझे ताना देने वालों के ताना देने से सब्र नहीं आता। चाहे दिल नर्म होकर लगातार रोने लगे और दामन टुकड़े-टुकड़े हो जाए।

(4) मैं क़लन्दरी ख़ूबसूरती के समुंदर का वो मोती हूँ जिसकी पहचान करने वाला ग़ैब की दुनिया के ख़ुदा के अलावा और कोई नहीं हो सकता।

5 अपनी ख़ूबसूरती की आग से नक़ाब उठा, तू वो है कि तेरे चेहरे से दिलों में आग भड़क उठती है।

6 जुदाई लंबी हो गई और ऐ बेचैनी को दूर करने वाले! तेरी जुदाई की बेचैनी से मेरे सीने की हड्डियाँ जल गईं।

7 मैं तेरी ख़ूबियों से इस तरह हैरत में डूब गया हूँ कि मेरे लिए उत्तर-दक्षिण का फ़र्क़ ख़त्म हो गया। ए बीजों को फाड़ने वाले! तू इस बीज को फाड़ और इसे दरख़्त बना दे।

नसीहत न. 12

1 शाही ताज हमारे लिए ख़च्चरों के पाँव में लगने वाले लोहे की नाल के बराबर है। हमारे लिए बादशाह वो है जो हर बार नया अमीराना लिबास पहनता है।

2 सिमरग पानी के परिन्दे, मैंने इश्क़ के काफ़ में अपना मुँह छुपाया है क्योंकि दोनों जहानों में मेरी रूह के क़ाबिल एक दाना भी न मिला।

3 वह्दत तौहीद अर्श के कँगूरों से भी आगे ले जाती है। वो जान लेने वाला कहाँ है जिसकी नज़र अर्शे-अकबर पर है।

4 मैंने कहा कि मैं तो इल्म और अक़्ल के ज़रिए दूसरे

मुल्क चला जाऊँगा लेकिन जब इल्म और अक़्ल के ज़रिए देखा तो मालूम हुआ कि ये इनके बस का रोग नहीं।

(5) हम इश्क़ का इलाक़ा और बेख़ुदी का शराबख़ाना हैं और ये रस्म और ख़ासियत क़लन्दर की हो सकती है।

(6) ख़ुदा आशिक़ों को इल्मे-लदुनी बख़्शता है क्योंकि हवास में समझ में आने वाला इल्म और पढ़ने से समझ में आने वाला इल्म बहुत कमज़ोर है। शरफ़ुद्दीन का सबक़ अलिफ़, बे, ते की तख़्तियों से तअल्लुक़ नहीं रखता। इसके सामने तो दोस्त की ख़ूबसूरती की तख़्ती है।

नसीहत न. 13

(1) जब तक आँखों में तेरे जमाल के ख़्याल की तस्वीर है दोनों जहानों की बादशाही किसकी इनायत से मुझे मिली हुई है।

(2) रूहानियत तेरे सामने सजदे में है अगर ऐसा सजदा न करें तो वो दम खर है।

(3) जब से तेरी शक्ल का नक़्श मेरी आँखों में उतरा है मेरे ख़ुदा का नूर हमेशा मेरे सामने है।

(4) तेरे इश्क़ ने मेरे सीने में ''मैं अल्लाह हूँ'' अनल्लाह

का शोर बुलंद किया हुआ है, हालाँकि ये बात मज़हब को बिगाड़ने वालों के नज़दीक बुरी है।

(5) तेरा नूर जिस तरह मेरी आँख को दिखाया गया है वो तो नूरे-इलाही है जिसको हश्र के दिन दिखाया जाएगा।

(6) हमने तौहीद के कई हज़ार नुक़्ते उस ख़त से पढ़े हैं जो तेरे हुस्न में लिखे हुए हैं।

(7) अगर ख़ुदा की ज़ात सूरत में ज़ाहिर नहीं होती तो फिर ये क्या है। मैंने तेरे चेहरे को देखा इसमें तो उसके नूर की तस्वीर नज़र आती है। तेरे चेहरे से जो रौशनी मेरी आँख को मिली है उससे मेरी आँख हश्र तक अल्लाह की ख़ूबसूरती से भरी रहेगी।

नसीहत न. 14

(1) जो ख़ुश्बू तेरी ज़ुल्फ़ों से मेरे दिमाग़ तक पहुँची है वो हश्र तक पाक ख़ुश्बू से भरी रहेगी।

(2) मुझे उस आँख से बहुत ग़ैरत आ रही है जिससे तुझे देखा या उस सर से ग़ैरत आ रही है कि जिस सर पर आँख है।

(3) तेरी आरज़ू ने सीने में इस तरह घर कर लिया है कि इससे पहले जो ख़्वाहिशें प्यारी थीं अब वो बेकार हो

गई हैं।

(4) जो शख़्स ख़्यालों में ख़ुदा की नमाज़ पढ़ता है वो ज़ाहिर में तो मोमिन है लेकिन हक़ीक़त में काफ़िर है।

(5) इस ख़्याल से जो मेरे सर में छुपा हुआ है मेरी रूह ख़ुदा के हजारों राज़ खुले हुए देख ले।

(6) जो शख़्स दुनिया में क़लन्दर है वो शरीयत के ज़ाहिरी हुक्मों से आज़ाद है वो बहुत ख़ुशनसीब है।

(7) बू-अली से ख़ुदा को जान लेने के राज़ मत पूछो क्योंकि इसे तो तौहीद के हज़ारों नुक़्ते पसन्द और बेहतर हैं।

(8) उसके लिबास की ख़ूबसूरती अल्लाह का राज़ है क्योंकि वो सफ़ेद या काला होने से ऊँचा और बेहतर है।

(9) उसके इश्क़ में दीन और दिल हार दिए। कुछ अंदेशा न कर क्योंकि इश्क़ के अन्दर ही ये कर और ये न करके हुक्म का राज़ छुपा है।

(10) क्या बात है उस महबूब की जिस पर मैं फ़िदा हूँ, उसके चेहरे का नूर चाँद से लेकर मछली तक हर जगह मौजूद है।

(11) ख़ुदा को बुत-परस्ती में देखा जा सकता है क्योंकि उसके अन्दर ख़ुदा के सारे राज़ छुपे हुए हैं।

(12) ये तो इश्क़े-इलाही को उभारती है इसलिए ये मत

कहो कि गाने वाले की आवाज़ अच्छी है।

(13) क्या शराब पीने की मनाही है ये तो मासूम के अलावा हर चीज़ को भुला देती है।

(14) उससे सवाल करके हम तो सबसे बेख़बर हो गए उसके दर का फ़कीर तो बादशाह है।

(15) दुनिया के हिर्स और लालच के तूफ़ान की वजह से हमारी ज़िंदगी का जहाज़ तबाही में घिरा हुआ है। अपने कलाम में तेरे राज़ खोलने के जुर्म में क़लन्दर माफ़ी चाहने की जगह पर खड़ा है।

नसीहत न. 15

(1) वह्दत की रौशनी बेहद है। बनाने वाले की बनावट पर नज़र डालना ज़रूरी है।

(2) ये ज़ाहिरी इबादत के ज़रिए कोशिश करने वाले ज़ाहिद अल्लाह के बेशुमार हुस्न को देख कि इसकी ख़ूबसूरती में क्या-क्या शामिल है।

(3) मुहब्बत के मक़ामों में दिख रहा बस महबूब और महबूब और महबूब है।

(4) मैं तो हैरत में डूब गया हूँ मुझे तो पता ही नहीं चलता कि इस समुन्दर के मोतियों में कौन सा ज़्यादा

चमकदार है।

(5) हक़ और सच कहने की वजह से अगर तेरे सर पर वार होने लगें तो ग़म न कर तू आशिक़ों के बीच सरदार बन गया है।

(6) ख़ूबसूरती सब उसके हुस्न के अन्दर है मेरी बाक़ी मेरी पाकीज़ा रूह पर आशकार है।

(7) मेरे सर में जलवों का ख़्याल है मेरा दिल रूहानियत का राज़दार है। ऐ शरफ़ुद्दीन! इश्क़ की बिस्मिल्लाह यही है कि दिल आधा गला-कटा परिन्दे की तरह बेक़रार है। शरफ़ुद्दीन! राज़े-इलाही कम कह, इस ज़माने के दोस्त परायों की तरह हैं।

नसीहत न. 16

(1) मैं तो दिलदार के जलवे की बहार से मस्त हूँ। मेरे जैसा कोई शख़्स मयख़ाने में मस्त नज़र नहीं आएगा।

(2) ऐ कोशिश करने वाले! जो शख़्स भरे हुए सागर से मस्त हो उसके दिल में दुनिया का ख़्याल कभी नहीं आएगा।

(3) तूने बहार के दिनों में दूर से अपना मस्ताना जलवा दिखाया इसका नतीजा ये हुआ कि हवा, बुलबुल, नहर, फूल और बाग़ सभी मस्त हो गए।

4 मैं तो ''क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ'' (कुरानी आयात) के जाम से मस्त हूँ हर सुबह और शाम और हर पल मुझे दीवार और दरवाज़े मस्त नज़र आते हैं।

5 उसके इश्क़ में मैं मस्तियाँ क्यों न करूँ हमारा महबूब जो है उसकी बातचीत और रफ़्तार दोनों मस्त हैं।

6 आपको मस्त राज़दार की ज़रूरत है जिससे अगर वो किसी से आपका राज़ कहे भी तो कोई उसकी परवाह न करे।

7 जो शख़्स दुनिया में क़लन्दर की तरह मस्त हो तो दीन और दुनिया जन्नत और दोज़ख़ से बेफ़िक्र होता है।

नसीहत न. 17

1 मेरा दिल उसके जलवों की वजह से परेशान है मेरे पास तो सौ आफ़ताब हैं।

2 बूढ़ों की तरह मुसल्ले पर न बैठ अब शराब पी, कि तेरी जवानी का ज़माना है।

3 ज़माने में हज़ारों फ़ितने बरपा हैं अभी तो उसकी शराबी आँख आधी सोई हुई है।

4 उस शोख़ मय पीने वाले को देखो कि मेरा दिल हर पल उसके इश्क़ में कबाब हो रहा है।

5 दुनिया और दीन से दिल को मायूस कर ले क्योंकि ये दुनिया और दीन पानी पर न टिक सकने वाली लिखावट की तरह है।

6 तू हक़ीक़त के हुस्न पर अपनी जान फ़िदा कर क्योंकि दुनिया का हुस्न तो फ़रेब है।

7 मोलवी और मौलाना तुझे तौहीद का यानी ख़ुदा के एक होने और उसका इसी दुनिया में दीदार करा देने का सबक़ नहीं देता क्योंकि ये राज़ उसकी किताब से बाहर है।

8 अगर पर्दा हो तो हमारे महबूब का बे-पर्दा जलवा उसको बुरी तरह जला डाले।

9 अपनी आँखों के आईने में देख, ये मस्ती शराब के जाम से हासिल नहीं होती।

10 ख़ुदाई के लिए ख़ुदी नक़ाब है, बीच में से उठ जा ताकि वो आ जाए।

11 शरफ़ुद्दीन! ख़ुदा के राज़ बिल्कुल न खोल क्योंकि ये हमारे लिए बहुत बड़ा खाता है।

नसीहत न. 18

1 जब तेरा सजा हुआ बदन याद आया तो शैख़ बड़ी मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़ा हो गया।

〈2〉 उस शोख़ महबूब का बनाव-सिंघार करने वाली कौन है, मैं तो उसका ग़ुलाम हूँ जिसने मेरे महबूब का चेहरा इस तरह सजाया और इसके बाल इस तरह बनाए।

〈3〉 वो महबूब के बाल नहीं हैं बल्कि रूहों का एक सिलसिला है। वो चेहरा नहीं है बल्कि अल्लाह-तआला की कारीगरी का मज़हर है।

〈4〉 चाँद जो अपने कमाल की बदौलत उसका मुक़ाबला करने लगा तो आख़िर वो कम होते-होते घट के रह गया।

〈5〉 अगर तू मोहब्बत की तलवार से हमें क़त्ल करें तो हम ज़िन्दा हो जाएँ और अगर तू बेवफ़ाई करे तो वो मेरे लिए एक वफ़ा है।

〈6〉 क्या सूरज, क्या चाँद दोनों तेरे पाकीज़ा चेहरे से जलवा लेते हैं और क्या उत्तर की हवा हो और क्या सबा, दोनों तेरी ज़ुल्फ से ख़ुश्बुओं को बिखेरती हैं।

〈7〉 लम्बाई और ख़ूबसूरती उसके सामने फ़ख़्र नहीं कर सकते क्योंकि उनमें वो शोख़ी और रफ़्तार कहाँ है।

〈8〉 ऐ शरफ़ुद्दीन! तौहीद का नुक्ता और राज़ उसके चेहरे से पढ़ा जा सकता है उस चेहरे का नूर और वजूद ख़ुदावंद को साबित कर रहा है।

(9) बू-अली! अगर तेरे इश्क़ में जो लानत और मलामत मिलती है उससे दुखी हो जाए तो न वो पाक दिल लोगों में से हैं और न ही ख़ुदा के मर्दों में से है।

नसीहत न. 19

(1) हम हैं और हमारी आँख दोस्त के रास्ते के इंतज़ार में ख़ुदा के वास्ते छोड़ दी है हम दोस्त की राह में बैठे हैं।

(2) अगर दोस्त आज की रात मेरे घर में आ जाए तो मैं सब्र, होशो-हवास दोस्त पर निसार कर दूँ।

(3) ऐ ख़िज़्र! बेक़रार का हाथ पकड़ ले, मैं भटकता फिर रहा हूँ क्योंकि मुझे दोस्त के शहर जाना है।

(4) जहाँ वो लिए जा रहा है मैं वहीं जा रहा हूँ क्योंकि मेरी लगाम दोस्त के हाथ में है।

(5) हम हैं और जुदाई का रंज है जो सुबह-शाम छील रहे हैं ख़ुशनसीब है वो इंसान जो दोस्त वाले किनारे पर हो।

(6) मेरे दिल का परिंदा दुनिया के दाने के लिए नहीं उड़ता क्योंकि मेरी रूह का परिंदा दोस्त के हाथों से शिकार हो गया है।

(7) इस बेकार किताबें जमा होने की जगह को अगर तू ख़त्म कर दे तो ये मुनासिब है क्योंकि तेरा इल्म,

अक़्ल और दीन दोस्त के किसी काम का नहीं।

(8) इस उम्मीद पर कि दोस्त मेरी बाहों में आएगा मेरा दिल मुझसे निकलकर दोस्त के आग़ोश में जा रहा है।

(9) ऐ शरफ़ुद्दीन! अगर तेरे दिल की आँख हक़ीक़त को देखने वाली हो जाए तो दुनिया का हर ज़र्रा दोस्त का आईना बन जाए।

नसीहत न.21

(1) चाहे हक़ीक़त का इश्क़ हो या नक़ली, दोनों से ही मेरा मतलब तो जलाने वाला और पिघलाने वाला है।

(2) तूने ''क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ'' कहा और मैंने ''बेशक'' का नारा लगाया तो देख के तेरे साथ मेरा अहद बँधा है।

(3) जो इंसान इस दुनिया में तेरा राज़दार है उसका दिल ख़ून तो हो जाता है लेकिन वो तेरा राज़ होठों पर नहीं लाता।

(4) इश्क़ है और इसके साथ सैकड़ों आफ़तें और मुसीबतें हैं। ये मंज़िल बड़ी कठिन और रास्ता बहुत लम्बा है।

(5) उसके दिल में गाय है, गधा है और होठों पर ज़िक्र है। काज़ी अपने ख़्यालों में किसी को नमाज़ का हक़

समझता है।

(6) ऐ क़लन्दर! अगर तू उसके दरवाज़े पर जाना चाहता है तो वहाँ जो क़ीमत और तोहफ़ा क़ुबूल होने के क़ाबिल है वो नर्मी, इन्किसारी और दिल की ज़रूरत है।

नसीहत न.21

(1) मेरी जेब में अगर दीन का माल और सरमाया है। तेरी आँख उसकी तरफ़ क्यों घात लगाकर बैठी है।

(2) क्या बात है उस बारगाह के जहाँ आसमान भी अपना माथा ज़मीन पर रखता है यानी सजदा करता है।

(3) वो सितमगर जो हमारी जान और दिल ले गया वो यही है, यही है, यही है।

(4) आसमान पर जो सितारों को ख़ूबसूरत जाल बना है वो इसी के जलवों की रौशनी है।

(5) महबूब के नूर भरे चेहरे के सामने रौशन सूरज और चमकते चाँद की क्या हक़ीक़त है।

(6) जिस शख़्स की आँख ने उसे देखा है वो नहीं कहता कि महबूब ऐसा है या वैसा है।

(7) क़लन्दर बू-अली और तेरे बीच एक ऐसा राज़ है कि हिसाब-किताब लिखने वाले फ़रिश्ते भी इससे बेख़बर हैं।

नसीहत न.22

(1) दिन की रौशनी उसके चेहरे के नूर का फैलाव है बनाने वाली रात उसकी ख़ासियत है।

(2) मैंने क़ुरआन के एक-एक वरक़ को देखा है उसमें कोई सूरत इसकी सूरत जैसी नहीं है।

(3) अपने दिल को इस और उससे अलग रख क्योंकि ये दिल तन्हाई में उसके ठहरने की जगह है।

(4) एक होते हुए भी ज़्यादा होने को देखो जलवा जो है उसके एक होने के नूर की उड़ान है।

(5) जो कोई उसकी मोहब्बत में जल-जल के कुश्ता हो गया, उसे हमेशा की ज़िन्दगी मिल जाती है।

(6) मैं उस पर नाज़ करता हूँ कि क़यामत उसकी ग़ुलाम है।

(7) शरफ़ुद्दीन बू-अली! अगर तू दोनों जहाँ चाहता है तो वो उसकी ग़ुलामी में हैं।

नसीहत न.23

(1) इश्क़ की मंज़िल बहुत ख़तरनाक है यहाँ अक़्ल की चुस्ती और चालाकी काम नहीं आती।।

(2) इश्क़ जब शोला बुलन्द करता है तो उस वक़्त हमारी हस्ती एक दिन के जैसी होती है।

(3) जो शख़्स इश्क़ में चुस्त और चालाक है वो अक़्ल के रास्ते पर क़दम नहीं रखता।

(4) जब से तेरे हुस्न का साया पड़ा है रूह जो है वो इस मिट्टी के जिस्म में रक़्स कर रही है।

(5) तेरे क़दमों की बरकत से हमारे ज़र्रे को भी आसमानों की बुलन्दी नसीब हुई।

(6) ऐ कोशिश करने वाले ज़ाहिद! तू हमारा राज़दार कैसे बन सकता है क्योंकि तेरा सीना तो कीना से भरा हुआ है।

(7) जब दीवानगी ने अपना पंजा बड़ा किया और बढ़ाया तो हमारा गिरेबान दो सौ जगह से फट गया।

(8) जो हक़ीक़त की पाक शराब का आशिक़ है उसकी नज़रों में सौ जन्नतें आबाद हैं।

(9) बू-अली क़लन्दर! दोनों जहानों से तंग हो गया लेकिन अपनी जान से ऊँची उड़ान की उम्मीद रखता है।

नसीहत न.24

(1) मदद फ़रमा, ऐ मुर्शिद जान मदद फ़रमा। हसीन लोग हमारी जान ले गए मदद फ़रमा।।

(2) ऐ महबूब! तेरी गोल पलकों ने हमारा दीन और ईमान ग़ारत कर दिया मदद फ़रमा।

(3) ऐ मुसलमानों! दिलबरो ने हमारा दिल और जान को ग़ारत कर दिया हमारी मदद करो।

(4) ऐ महबूब! तेरी जुल्फ के सिलसिलेवार बालों से हमारा हाल हमेशा परेशान रहता है हमारी मदद करो।

(5) ऐ मुर्शिद! हमें सही रास्ते पर ला, हम जंगल में रास्ता भूल गए हैं हमारी मदद करो।

(6) बू-अली क़लन्दर! एक शोला पैदा करने वाले से कह रहा था हम तो जुदाई की जलन से जल गए हमारी मदद फ़रमा।

नसीहत न.25

(1) हमें तो इश्क़ के हकीम की तलाश है उसके सिवा हमारे दर्द का इलाज नहीं हो सकता।

(2) जब से तेरे जलाल ने हम पर अपना साया डाला है हम दुनिया में आतिश-मिज़ाज के नाम से मशहूर हो गए हैं।

(3) ख़ुदा के नाम पर गुदड़ी पहनने वालों के मुल्क में ख़ुद को बेचने का रिवाज नहीं होता।

(4) अगर तू फ़क़ीरों की ख़ाक ताज की तरह अपने सर

पर रख ले तो अहले-फ़ुक्र के फैज़ से तू हमारा बादशाह बन जाएगा।

(5) अगर तूने का'बे के चारों तरफ़ हाजियों का घूमना देखा है तू अपने ही चारों तरफ़ तवाफ़ कर और का'बे को देख ले।

(6) हमारा चराग़ उससे रौशन हो जाता है क्योंकि हमारा मुर्शिद ख़ुद चराग़ की तरह रौशन है।

(7) ऐ बू-अली क़लन्दर! तेरे हक़ीक़ी को बिना वजह हिलने की आदत है। तो सुकून के लिए ऊँची आवाज़ से ज़िक्र करने की आदत डाल।

नसीहत न.26

(1) आशिक़ों की आँख में ख़ुदा के सिवा सब बेकार है। पानी, हवा, ज़मीन आग सब बेकार है

(2) जिसने अपने दिल का रिश्ता हमेशा के लिए ख़ुदा से बाँध लिया उसके लिए नमाज़ क़िब्ला और क़िब्ला-नुमा सब बेकार हैं।

(3) जिस सवाली ने तेरे दर की मिट्टी अपने सर पर डाली उसके सामने हुमा जिसका साया बादशाह बना देता है भी बेकार है।

4 जिसने सच्चे दिल से ख़ुदा के हुक्म को माना उसकी नज़र में जन्नत, दोज़ख़, डर और उम्मीद बेकार है।

5 जब तक मैं उस मुश्क में डूबी हुई ज़ुल्फ़ को हाथ में नहीं लेता तब तक मेरे लिए मूछों का अंबार भी बेकार है।

6 जब मौत किसी का हाथ पकड़ लेती है तो वहाँ दवा और दुआ दोनों बेकार हैं।

7 क़लन्दर बू-अली का दिल एक आक़ा के इश्क़ में इस क़द्र सबसे हट गया है कि वो तो गुनाहगारों के मुल्क को बेकार समझता है।

नसीहत न.27

1 सुबह जब अज़ान देने वाला बेहतरी के लिए आवाज़ बुलन्द करता है तो हम सुबह की शराब पी लेते हैं।

2 हम इश्क़ का नारा बुलंद करें क्योंकि नमाज़ की अज़ान में कोई बेहतरी नहीं है।

3 हम पाक जाम के बदले शराब न दें चाहे ज़ाहिद हज़ार मन्नत करें क्योंकि ज़ाहिद पाक शराब की उम्मीदों में इबादत करता है।

(4) हमारी कश्ती दरिया के भँवर में है और मल्लाह तूफ़ानी लहरों से बेफ़िक्र है।

(5) जो कोई दोस्त के राज़ को खोलता है उसके ख़ून को सब बेहतर समझते हैं।

(6) हम तुझसे क्या उम्मीद रखें कि तेरे हाथों से किसको कामयाबी मिली है।

(7) बू-अली क़लन्दर को देखो कि सुबह शाम तेरे इश्क़ में नारे लगाता है।

नसीहत न.28

(1) इश्क़ की शुरूआत में चलने का मैदान बहुत फैला हुआ था लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता रास्ता मुश्किल और पथरीला होता चला गया।

(2) मेरा रास्ता बहुत मुश्किल है क्योंकि हर मंज़िल पर मेरी ऊँटनी काँटो और पत्थरों के बीच ठहरती है।

(3) सारी दुनिया न टिकने वाली है। ज़िन्दगी भी न टिकने वाली है। लोग सैलाब के रास्ते में महल क्यों बनाते हैं।

(4) मेरी आँख सूरज और चाँद के दायरे में आग लगाती है मेरा नारा आसमान के कान फाड़ता है।

(5) उसकी चमकदार ज़ुल्फों के ख़ूबसूरत ज़ुल्मों पर फ़रियाद है, उसकी आधी बंद आँखों का ग़फ़लत में आना हाय-हाय!

(6) बू-अली क़लन्दर! तेरे इश्क़ के अन्दर तरो-ताज़ा चेहरा कैसे दिखाएँ, फूल जब शाख़ से जुदा होता है तो वो एक लम्हे में मुरझा जाता है।

नसीहत न.29

(1) मैं इश्क़ से मुँह नहीं मोड़ूँगा चाहे सर चला जाए, मेरे दिल से महबूब की यादें कभी न जाएँ।

(2) मैं इश्क़ के रेगिस्तान से वापस नहीं आऊँगा चाहे मेरा सामान गिर जाए और मेरा ऊँट भी चला जाए।

(3) तेरी जफ़ा की तलवार के हाथों अगर मेरा सर भी चला जाए तो शमा की तरह ऊपर तले हज़ार सर और आ जाएंगे।

(4) अगर मेरी क़िस्मत की स्याही ख़त्म हो जाए तो या रब! ये स्याही रक़ीबों के हिस्से में आए।

(5) उसके कान के ज़ेवर पर मैं फ़िदा कि जब मेरे चेहरे का पीलापन और आँखों की चमक जाए तो वो महबूब के कान की बाली बन जाए।

6 ख़ुदाया मिलन की रात आख़िरी पल तक लम्बी हो जाए और मेरा दिलबर किसी बहाने महफ़िल से न जाए।

7 ऐ महबूब! शरफ़ुद्दीन बू-अली ने जब तेरे दीदार का शर्बत चखा तो इसने कहा ऐसा न हो कि इसके होंठों पर कौसर का नाम आ जाए।

नसीहत न.30

1 क्या बात है उस हुस्न की जो यार के चेहरे पर है उसकी बाँहों में तो सैकड़ों बाग़ हैं।

2 उसकी ज़ुल्फ़ मस्त है पर होशियार दिल के लिए रुकने की जगह बन रही है। बहुत-से मर्दों को महबूब की बीमार कर देने वाली निगाह ने कहीं का नहीं रखा।

3 हर वो घुमाव और छल्ला जो उसकी ज़ुल्फों में बढ़ रहा है साँप के हज़ारों घुमाव रखता है।

4 हर वो लकीर जो उसके चेहरे पर लिखी जाती है उसके हज़ारों मा'ने और राज़ हैं।

5 मेरा दिल तेरी पलकों की याद में ऐसा हो गया है जैसे महबूब चाहता है कि इसे सूली पर लटका दूँ।

6 उसके बालों की ख़ुश्बू से मरियम के बेटे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने इक़रार किया कि ''मैंने अपनी रूह तुझ में फूँक दी। (आयत कुरान शरीफ़)

(7) सुब्हान अल्लाह! महबूब का चेहरा कैसा चेहरा है जो हर पल नूर के हज़ारों जलवे रखता है।

(8) जिस सूफ़ी आरिफ़ ने उसकी आँखों पर नज़र डाली उसे मयख़ाने की आरज़ू हुई।

(9) जो बेकार कोशिश करने वाला ज़ाहिद उसकी ज़ुल्फ में अटका वो काफ़िरों की तरह अपनी कमर में जनेऊ रखता है।

(10) शरफ़ुद्दीन बू-अली उसके इश्क़ में ऐसा क़लन्दर हुआ जो बहत्तर फ़िरक़ो को अपना दोस्त रखता है।

नसीहत न.31

(1) मेरा ख़्याल था कि मैं तुझ पर जान देने वाला न बन सकूँगा क्योंकि तेरे इश्क़ के ग़म ने मुझे तरह-तरह से दुख दिया।

(2) ऐ साक़ी! मैं इसे मसलेहत से ख़ाली नहीं समझता के लोगों के जाम में साफ़ शराब है और मेरे जाम में नीचे की तलछट है।

(3) कभी एक नज़र अपने कूचे पर तो डाल कि तेरे इश्क़ के ग़म के मारे छोटे-बड़े कितने हैं।

(4) जब तेरे आशिक़ ने लानत-मलामत का रास्ता तय कर लिया तो वो हिसाब-किताब करने वाले और तक़रीर

करने वाले से क्या डरेगा।

(5) वो तीर जो तेरी भवों की कमान से निकला उसके सामने कौन है जो इश्क़ का ज़ख़्म अपने सीने पर नहीं खाएगा।

(6) हमने और फ़ारसी शायर सावजी ने हाथ उठा लिया और हममें से हर एक ने मुनासिब हिस्सा लिया।

(7) शरफ़ुद्दीन बू-अली ने इश्क़ में क़लन्दराना ज़िन्दगी बसर की, उसकी दाढ़ी तो तेरी ज़ुल्फ में गुम हो गयी सर नहीं मुंडवाया।

नसीहत न.32

(1) जिस्म उसके ग़म पर सर फ़िदा करता है, जान उसके ग़म को सर का ताज बनाती है।

(2) उसका इश्क़ मेरे दिल में हर पल नया घर बनाता है, फिर जब उसके इश्क़ की लहरों में तेज़ी आती है फिर वो सबको ख़ून में तैरा देता है।

(3) मैं किसी की जुदाई में जल गया, मेरे सीने से शोले निकल रहे हैं। उसके दिल में रहम और शफ़क़त शायद नहीं आते मगर वो ज़ुल्मो-सितम में ग़फ़लत कम ही करता है।

(4) वो शख़्स ख़ुशक़िस्मत जिसे ख़ुदा दुनिया में बे-ज़रूरत रखकर क़लन्दर बना देता है।

(5) ऐ महबूब! तुझ पर मिटने वाला सोते वक़्त आग के दरिया पर बिस्तर बनाता है।

(6) बू-अली क़लन्दर जो तेरे ग़मों का मारा है हरदम एक नई ख़ुशी मनाता है।

नसीहत न.33

(1) तेरे चेहरे के अक्स से आदम में जान डाली गई फिर फ़रिश्तों के पास गिरोह ने इसे सजदा किया

(2) हालांकि फ़रिश्तों ने आदम को सजदा किया लेकिन दुनिया के हज़ारों आदमियों ने तुझे सजदा किया।

(3) तेरे चेहरे के ख़्याल ने जिस सर में जलन और गर्मी की तो दुनिया में इस ख़्याल को सर की आँखों में लाया गया।

(4) आदम की रूह और मिस्र के यूसुफ़ के चेहरे ने तेरे हुस्न की ज़कात ली और उसकी परवरिश की तो आदम, आदम बना और युसूफ़ हसीन हुआ।

(5) जिसकी आँख में तेरा ख़्याल जा बसा तो उसकी आँख से दोनों जहानों का ख़्याल मिटा दिया गया।

(6) तेरे चेहरे की शमा से आशिक़ों को कोई फ़ायदा नहीं हुआ क्योंकि इन सबने अपनी जान परवानों की तरह क़ुर्बान कर दी।

(7) जो लोग आशिक़ों की रुस्वाई पर अफ़सोस करते हैं उन्होंने पहले दिन इश्क़ की शराब नहीं पी।

(8) आशिक़ो ने शुरू में ही तेरे चेहरे का अक्स देखा यही वजह है कि वो आख़िर तक हैरत से पाँव फैलाकर मिलते रहेंगे।

(9) शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर तेरे इश्क़ के सदक़े में ऐसा सरमस्त बना कि मुख़ालिफ़ दावेदार इसके डर से ही मर गए।

नसीहत न.34

(1) दोस्त तो तेरी सूरत को हज़ारों सजदे करते हैं, लेकिन किसी ने तेरी वफ़ा के बाग़ से कोई फल नहीं खाया।

(2) शैतान आज़ाजील तेरी सूरत को न पहचानता था वर्ना वो ये न कहता कि यार सजदे से बे-नियाज़ है।

(3) जो लोग तेरी सूरत परस्ती के मना करने वाले हैं अगर वो अपने आप में अपने लिए अपने वक़्त के ईसा हैं लेकिन हक़ीक़त में गधे की दुम हैं।

(4) जो लोग बुत की इबादत करते हैं वो धोखा खा गए हैं अगर वो तेरे चेहरे के एक नुक्ते से बाख़बर होते तो ऐसा न करते।

(5) आदम को सजदा तो तेरे चेहरे के लिए किया गया क्योंकि तेरे आशिक़ तो हर पर्दे में से देख लेते हैं।

(6) तेरे चेहरे का जमाल तो हम सूखापन और गीलापन में देखते हैं, इस मोहल्ले में अनल-हक़ कहने वाले भरोसे के लायक़ नहीं हैं।

(7) शरफ़ुद्दीन बू-अली को क़लन्दरी तेरे जमाल के अक्स से मिली। ये मक्र करने वाले इसके इश्क़ के राज़ से बेख़बर हैं।

नसीहत न.35

(1) नक़ाब उसके जमाल की ताब नहीं ला सकता। पर्दा उसके हुस्न को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

(2) जान हारकर भी उस महबूब तक नहीं पहुँचा जा सकता क्योंकि जान उसको बर्दाश्त नहीं कर सकती।

(3) परवाना शमा के चारों तरफ़ चक्कर क्यों लगाता है जबकि वो उसकी नाराज़गी एक पल के लिए बर्दाश्त नहीं कर सकता।

(4) ज़ाहिरी आँखों से उसके चेहरे को नहीं देखा जा

सकता क्योंकि चमगादड़ सूरज की रौशनी को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

(5) उसके चेहरे के गिर्द सौ सूरज हैं कैसे एक चमक उसको बर्दाश्त कर सकती है।

(6) तेरे जख़्मी को कहाँ आराम मिलता है क्योंकि जख़्मी आँख में नींद नहीं आती।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! सब्र और बर्दाश्त को अपनी आदत बना ले क्योंकि तेरा मक़सद, महबूब जल्दबाज़ी को बर्दाश्त नहीं करता।

नसीहत न.36

(1) तेरे क़द से बेहतर नहीं मिलता और तेरे चेहरे जैसा चाँद आसमान पर नहीं निकलता।

(2) ये न समझ लेना कि तेरी मोहब्बत आशिक़ के दिल से कभी निकल जाएगी, जब कोई मरता है तो तेरी मोहब्बत में ही मरता है और जब कोई जीता है तो तेरी मोहब्बत में ही जीता है।

(3) जब मेरी मौत के बाद मेरी क़ब्र पर घास उगी देखें तो उगने वाली घास की हर पत्ती पर ''ऐ महबूब'' तेरा नाम लिखा होगा।

(4) तेरे मुनासिब क़द की वजह से हर तरफ़ बलायें उठ

खड़ी हुई हैं जिस क़िस्म का क़द तेरा है उससे बलाएँ ही उठ सकती हैं।

(5) मेरा दिल आसमान की गर्दिश से इस तरह रोता है जिस तरह मासूम दाना, चक्की से पिसने पर रोता है।

(6) जो शख़्स तुझ पर आशिक़ हो वो अपनी जान कैसे बचा सकता है, क्योंकि तेरी आँख से दर्द की आग और तुझसे फ़ितने उठते हैं।

(7) अगर तू शरफ़ुद्दीन बू-अली का ख़ून बहाना चाहता है तो वो सर झुकाता है, उसके ख़ून के टपकने वाले हर क़तरे से वफ़ा पैदा होगी।

नसीहत न.37

(1) अगर तेरा हुस्न अपना साया मिट्टी पर डाल दे तो हर ज़र्रा सूरज के नूर को दुनिया में बिखेरे।

(2) हसद रखने वाले, दूसरों से जलने वालों से कहो कि दूसरों को मुसीबत पर ख़ुश क्यों होते हो। एहसान करने और मोहब्बत करने वाला बन क्योंकि ये हर सीने को कीना से पाक कर देता है।

(3) मैं आशिक़ी पर हाज़िर हूँ कहता हूँ और मरने के बाद भी मेरी मिट्टी क़ब्र से तेरी राह में बिखेर दी जाएगी।

(4) क्योंकि यार हमारे दिल की हालत पर तवज्जो देता

है इसलिए हमारा दिल परायों की लानत से नहीं टूटता।

(5) कोई शख़्स तेरे चेहरे पर एक नज़र भी नहीं डाल सकता क्योंकि नूर ने तेरे चेहरे पर नक़ाब डाल रखा है।

(6) जिसने तेरी मस्त नज़र को देखा वो कई हज़ार नारए-हाय-मस्ताना लगाता है।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! मुमकिन है तेरे महबूब की एक नज़र तेरे दिल और जान के दायरे में बिजली बन कर गिरे।

नसीहत न.38

(1) क्योंकि तेरे घर के राज़दार बहुत से राज़ जानते हैं क्या ही अच्छा हो कि वो एक राज़ मेरे कान में कह दें।

(2) वो लोग कहाँ हैं जो उसकी किताब की तस्वीर पढ़ते हैं अगर वो इल्म पर इत्मीनान करके बैठे रहे तो वो सख़्त नादान हैं।

(3) मैंने दोनों जहानों से इसलिए दामन झाड़ा है ताकि लोग मुझ पर लानत-मलामत न करें।

(4) इंसान का ऐसा हौसला कहाँ कि वो तेरे चेहरे पर नज़र डाले। तेरे जमाल से तो फ़रिश्ते भी हैरान हैं।

(5) तुझे कौन सी मुश्किल है मायूसी को बहाना न बना कि इस दाग़दार आसमान के नीचे हजारों मर्द मौजूद हैं।

6 तेरी आँख मुझ मिस्कीन पर कैसे पड़े जबकि लाखों लोग दिल और जान से तुझ पर फ़िदा हैं।

7 जिन लोगों का तेरी ज़ुल्फों से सिलसिला क़ायम नहीं वो कुफ़्र और दीन की हजारों जंजीर हिलाते हैं।

8 ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! तेरी नज़रों में क्या कशिश है कि तेरे जादू से लोग क्या-क्या कहानी बना लेते हैं।

नसीहत न.39

1 उसके जमाल का नज़ारा आदम की रूह पाक की वजह बना। उस हस्ती के पैदा होने से दोनों आलम बने।

2 पाक, ऊँचा, बुलन्द है अल्लाह, सूरत बहुत अजीब है कि इसकी वजह से आदम को फ़रिश्तों ने सजदा किया।

3 जिस वक़्त उसका जमाल से शुआएँ फैल रही थीं तो उसका सबसे अदना अक्स ईसा बिन मरयम की सूरत में ज़ाहिर हुआ।

4 जो लोग बुतों की पूजा करते हैं वो तुझे पहचानते हैं लेकिन तेरे तसव्वुर के ख़्याल से उनका काम मुश्किल हो गया।

5 जो शोख़ी तू रखता है और जो मस्ती मुझे हासिल है इनसे दोनों जहानों में लगातार फ़ितने बरपा हो गए।

(6) तेरी सूरते-पाक का बयान अक़्ल की हद से गुज़र गया। अक़्ल की क्या मजाल है रूहे पाक तक गूँगी हो गयी।

(7) वो क़लन्दर का'बाए-आज़म की तरफ़ क्या झुके जो तेरे क़िबले जैसी ज़ुल्फ़ों का राज़ न पा सके।

(8) एक मोड़ जो तेरी ज़ुल्फ़ों में डाला गया उससे हज़ार का'बे तेरे सामने झुक गए।

(9) ख़ुदा करे हसीनों में कोई ऐसा न हो जो तेरे सामने अपने हुस्न के बारे में बात करे, क्योंकि दोनों जहानों का हुस्न तुझे दिया गया है।

(10) अक़्ल की हज़ार रौशनियाँ और इल्म के हज़ारों जलवे तेरे इश्क़ के साए में कम से भी कमतर हैं।

(11) वो ज़ख़्म जो तूने शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर के दिल पर लगाएँ हैं इनमें से हर एक सुलैमान इश्क़ के हाथ के लिए मेहर साबित हुआ।

नसीहत न.40

(1) ऐ महबूब! तेरी जलवागाह बहार का जोश रखती है, ज़मीन हर तरफ़ हमारे ख़ून से चमकदार है।

(2) यहाँ माशूक़-आशिक़ और इश्क़ तीनों एक हो गए हैं। जब यहाँ मिलन नहीं समाता तो जुदाई का

क्या काम है।

(3) ऐ महबूब! तेरे शौक़ में फूल भी हाथ में जाम लेकर आता है और नरगिस तेरे इंतज़ार में आँख खुली रखे हुए है।

(4) तू देख के तेरा आशिक़ आँसू और दिल के टुकड़ों के लाल और गौहर तुझ पर निसार करने के लिए अपने दामन में रखता है।

(5) वाह-वाह हमारी मिट्टी को आसमान तक पहुँचा देता है। उस सवार का रुख़ हमारी क़ब्र की तरफ़ है और शौक़ की वजह से हमारी मिट्टी आसमान तक पहुँच रही है।

(6) ग़मों के आने-जाने से कोई दुखी नहीं होता तो इस गर्दिश में भी दुखी नहीं होता जो रात और दिन में मौजूद है।

(7) ज़रा शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर को देख कि फ़रियाद कर रहा है। जुदाई की गर्मी से इसका दिल शोला बना हुआ है।

नसीहत न.41

(1) ऐ दिलरुबा! तेरे सुर्ख़ होंठों का बोसा लज़ीज़ होता है लेकिन तेरे मिलन का शरबत बेहद लज़ीज़ होगा।

(2) जन्नत वालों के लिए कौसर का पानी बेहद लज़ीज़ होगा मगर आशिक़ों के लिए भला वो कहाँ मीठा होगा।

(3) जब तू हमें दीदार का शरबत पिलाता है हमारे लिए मौत का शरबत भी ज़ायक़ेदार हो जाता है।

(4) मैं तेरी जुदाई में कड़वा हो रहा हूँ इसलिए मैं उसका मिलन तलब कर रहा हूँ तो मेरे गले में आबे-हयात का घूँट कब लज़ीज़ हो सकता है।

(5) ऐ साथ रहने वाले! तू शरफ़ुद्दीन बू-अली के शे'र सुन क्योंकि इश्क़ की मस्ती की वजह से इसके शे'र ग़म दूर करने वाली शराब की तरह हैं।

नसीहत न.42

(1) मैंने अपने आपको भुला दिया जबसे मैंने महबूब का चेहरा देखा है। मैं उस महबूब का जमाल हर तरफ़ देखकर मस्त हो गया हूँ।

(2) मैं जब हर तरफ़ देखता हूँ तो उसके सिवा मुझे एक ज़र्रा भी नज़र नहीं आता, इसलिए मेरे लिए हर मोमिन और जनेऊ वाला काफ़िर बराबर है।

(3) न मुझे अज़ाब का डर है न मुझे सवाब की उम्मीद है, इसलिए चाहे मुझे जन्नत में डाल दे या दोजख़ में डाल दे।

4 मेरी जन्नत यार का दीदार है उससे दूरी मेरे लिए दोज़ख़ है। उसका मिलन मेरे लिए नूर की आग है।

5 हमारे दिल को तसल्ली उसके सिवा किसी और से कब हो सकती है। हमारी नज़र में दोनों जहाँ भी मुट्ठी भर धूल से ज़्यादा कुछ नहीं।

6 तू अता भी करता है और मैं ख़ता भी करता हूँ, मेरे गुनाहों की तरह तेरी रहमत भी बे-हिसाब है।

7 किसी भूले हुए की दिल की आँख खुल जाती है तो अलग-अलग नज़र आने की चादर से ख़ुदा का एक होना ज़ाहिर हो जाता है।

8 तूने इश्क़ को आसमान समझा है और तू इसके फैलाव के बारे में भूल में है। अगर तू ग़ौर से देखें तो ये ऐसा समुन्दर है जिसका कोई किनारा नहीं।

9 बू-अली क़लन्दर! अगर मैं उसके इश्क़ में मस्ताना नारा लगाऊँ तो एक पल में दुनिया का निज़ाम नीचे-ऊपर हो जाए।

नसीहत न.43

1 तेरे जंगल से ही दूर पहाड़ का शोला उठा और तेरे नक़ाब ही से चश्मा-चश्मा नूर फूटा।

2 जब तेरे मिलन का लुत्फ़ आता है तो मैं झूम उठता

हूँ क्योंकि इस तरह की लज़्ज़त तो पाक शराब में भी नहीं।

(3) हम मुद्दत से वह्दत की तजल्ली के इंतज़ार में हैं, अपने चेहरे से अनेकता का नक़ाब उठा और जलवा दिखा।

(4) मेरा दिल बुतों के चेहरे से न हटा, मैं तो इनके चेहरे के पर्दे में ख़ुदा देख रहा हूँ।

(5) मुझे ऐ कोशिश करने वाले ज़ाहिद, पत्थर न मार क्योंकि मेरा सीना पत्थर के सीने की तरह चिंगारियों से भरा हुआ है।

(6) तूने जलवा दिखाया, मैं बेख़ूद हुआ, सब्र कहाँ है?अक़्ल और शऊर कहाँ है।

(7) उसकी क़हर भरी निगाह से मत डर और साँस रोक ले। ऐ कोशिश करने वाले ज़ाहिद, तू अपनी कोशिश और इबादत का ग़ुरूर न कर।

(8) शरफ़ुद्दीन बू-अली तू आँख बंद न कर और हर तरफ़ देख क्योंकि उसका चेहरा पर्दे में नहीं छुपाया जा सकता।

नसीहत न.44

(1) दुनिया में हर शख़्स एक-दूसरे तमाशे में लगा है

लेकिन हमें तेरे दीदार के सिवा कोई तमन्ना ही नहीं।

(2) मेहरबान दोस्त के कूचे के सिवा मेरा कहीं ठिकाना नहीं है। हमारे सामने इससे बढ़कर कोई दिलकश ही नहीं।

(3) तेरे दीवाने की दौड़ने की जगह दोनों जहानों से भी आगे है। मजनूँ की नज़र में ऊँची ज़मीन के सिवा कोई रेगिस्तान नहीं।

(4) ज़ाहिद तो चाहता है कि तेरे होंठ जन्नत की शराब से तर हो जाएँ। मैं दिन-रात किसी और ही शराब के रूप में मस्त रहता हूँ।

(5) मैंने शुरू से ही तेरे फ़रमान के ख़त पर सर झुकाया है तेरी मर्ज़ी मेरी मर्ज़ी है। मेरी तो और कोई मर्ज़ी ही नहीं है।

(6) चेहरे से पर्दा हटा और बू-अली क़लन्दर को अपना एक जलवा दिखा, जिससे दुनिया में एक बार फिर इश्क़ का शोर मच जाए।

नसीहत न.45

(1) अपने नूर वाले चेहरे से पर्दे की एक तह उठा ताकि ये बूढ़ी दुनिया एक बार जवान हो जाए।

(2) तेरे क़हर की नज़र ज़मीन और आसमान को

बर्बाद कर देती है और तेरी मोहब्बत की नज़र का हुक्म ज़मीन और आसमान भी मानते हैं।

(3) जब तेरे चेहरे का नूर सूरज की तरह दुनिया की हर चीज़ तक पहुँचता है तो अगर तू मुझ ज़र्रे को अपना जलवा दिखा दे तो क्या बात है।

(4) हम तो क़लन्दर हैं और हमारा आना-जाना हर जगह होता है। हम समुन्दर की लहरों की तरह पाँव में ज़ंजीर डाले हुए नहीं हैं।

(5) हक़ीक़त की नज़र वाले नज़र के असर को समझते हैं तो पत्थर के टुकड़े को नज़र से ही लाल बना देते हैं।

(6) मैं हैरान हूँ कि हूर और ग़ुलामों का ज़िक्र क्यों होता है दुनिया तो तेरे हुस्न की बदौलत तस्वीर का आलम बन गई है।

(7) इश्क़ की दुनिया में तुझे मेरी मिसाल नहीं मिलेगी, जिस तरह मुझे दुनिया में तेरे हुस्न की कोई मिसाल नहीं मिलती।

(8) तेरी ज़ुल्फ़ से लम्बी रात पैदा होती है और तेरे चेहरे से रौशन सूरज निकलता है।

(9) सुबह के वक़्त शायद तूने अपनी पोशाक से बंधन खोले हैं कि दुनिया का दिमाग़ अम्बर की ख़ुश्बू से भर गया।

(10) उठ तलवार लटका और इस हक़ीर का ख़ून बहा क्योंकि मेरा ख़ून हश्र के दिन तेरा दामन पकड़ने वाला नहीं होगा।

(11) अगर मैं नमाज़ नहीं पढ़ सकता तो इसमें मेरा क्या गुनाह है क्योंकि तक़दीर के लिखे को मिटाया नहीं जा सकता।

(12) शरफ़ुद्दीन! तू लोगों की इस दुनिया से क्यों नहीं भागता क्योंकि तेरी मिट्टी को तो ख़ुदाई आलम से गूँधा गया है।

नसीहत न.46

(1) ऐ शहजादे! अगर मैं तेरे इश्क़ से डर जाता तो मैं जानबूझकर मना करने वाला और मुफ़लिस होता, भला क़िस्मत से कौन भाग सकता है।

(2) तेरी अक़्ल ने इसको बेकार समझा। नहीं समझ पाया कि जब सफ़ेद चमकता हाथ दिखता है तो चिंगारी की चमक दिखाई नहीं पड़ती।

(3) जब तेरा जमाल ''तू मुझे हरगिज़ नहीं देख सकता'' की आवाज़ लगाता है तो ''मुझे जलवा दिखा'' की वादी में मेरा गुज़र नहीं होता।

(4) ''क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ'' जब तू ये कहता है

तो मैं हाँ कहता हूँ तेरे हुक्मनामे के सामने मैंने यूँ सर झुकाया है।

(5) तेरा इश्क़ इन्नी इनल्लाह ''बेशक मैं तेरा ख़ुदा हूँ'' सदा बुलन्द करता है। मेरी जान शायद इन्नी अनल् माबूद ''मैं तेरी इबादत के लायक़ हूँ'' कहती है।

(6) अगर मैं तेरे मिलन में जियूँ तो मैं हर ग़म से फ़ारिग़ हूँ और अगर मैं तेरे ग़म में मर जाऊँ तो हर ख़तरे से महफ़ूज़ हूँ।

(7) मेरी जान तेरे चेहरे पर फ़िदा और मेरा दिल तेरी ज़ुल्फों पर सदक़े। तेरा मुखड़ा, तेरी ज़ुल्फ़ें मुझे जानो-दिल से ज़्यादा अज़ीज़ हैं।

(8) तेरे हुस्न को बुरी नज़र से बचाने के लिए मेरी अक़्ल नज़र से बचाने वाला काला दाना बन गई और तेरा इश्क़ चिंगारी बन गया।

(9) इश्क़ रौशन शमा और अक़्ल एक परवाना है। जब परवाना शमा के नज़दीक हो जाता है तो नुक़सान उठाता है।

(10) जब तेरे हुस्न का सूरज जलवागर होता है तो हमारी हस्ती ज़र्रे की तरह ख़ुशी में नाचती है।

(11) तेरी मोहब्बत के जमाल से अज़ाज़ील शैतान भी आदमी बन जाता है और तेरे जलाल से आदमी दूसरा

शैतान बन जाता है।

(12) जब तक तू ज़ाहिर न हो मेरी हस्ती वह्म-सी है। ज़र्रा रौशन सूरज का भरोसेमंद गवाह हो गया।

(13) हम उस दिलदार की ज़बान की तलवार पर नाज़ करते हैं क्योंकि हमारी उम्र के लम्बे हिस्से को छोटा कर दिया।

(14) 'मूसा' तूर के एक दरख़्त पर तजल्ली का जलवा देखकर बेहोश हो गए और मुझे दिन-रात हर दर्द में वही तजल्ली और आग नज़र आती है।

(15) क़लन्दर की बेहूदा बात में भी राज़े-इलाही है। समुन्दर की लहर कूड़ा-करकट के साथ क़ीमती मोती भी लाती है।

(16) ज़माने के पीर जिन मक़ामात में और भी बेबस हो गए वो मक़ाम मैंने लड़कपन में ही तय कर लिए थे।

(17) तुम्हारे दिलो-जान का खलिहान जल्द राख हो जाएगा। तजल्ली की बिजली चमक रही है, ऐ जवानों डरो।

(18) तेरी राह की ख़ाक को हर फ़क़ीर ताज समझकर सर पर रखता है और हर ताज वाला तेरे कूचे में ताज को उतारता है।

(19) मैं अगर गली-गली भागता फिरुँगा तो तेरे गुज़रने

की राह पर कैसे पहुँच पाऊँगा। अगर मैं दर-बदर फिरता रहा तो तेरे आस्ताने पर कैसे पहचुँगा।

〈20〉 एक दुनिया-दार दिल में सैकड़ों कच्चे ख़्याल बनाता है उसके दिल में फ़ानूस ख़्याल की तरह से तस्वीर घूमती है।

〈21〉 जो ख़ुदी में रहता है वो ख़ुदा के साथ नहीं होता, जो ख़ुदा को पा लेता है वो ख़ुद से बेख़बर हो जाता है।

〈22〉 जो ये समझता है कि हर अच्छाई और बुराई ख़ुदा की तरफ़ से है तो उसे न ख़ुशी हरकत में लाती है न ग़म उसे तकलीफ़ देता है।

〈23〉 तू हर मामले में सुलह करने वाला, क़ुबूल करने वाला रह और दुनिया के ग़म से फ़ारिग होकर बैठ। अगर बशर-बे-शर हो जाए तो दुनिया में इसे कोई ख़तरा नहीं रहता।

〈24〉 तमन्ना से हाथ धो ले के मुराद हासिल हो क्योंकि तमन्ना के पौधे का फल हसरत और महरूम रहने के सिवा कुछ नहीं।

〈25〉 तुझे क्या मालूम भी है कि दुनिया के हिर्स का क्या रंग है। हिर्स ऐसी चीज़ है कि देखने और समझदार लोगों को भी अंधा कर देती है।

〈26〉 जब एक इश्क़ का जुनून आया तो वो हमारी

अक़्ल छीनकर ले गया अगरचे हम लोग मैदाने-हुनर के मर्द थे।

(27) उसके एक होने का सूरज शायद फिर जलवागर हो, बहुत रूप होने का अंधेरा दुनिया में एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ तक फैल जाता है।

(28) तेरा ख़ून करने वाली तलवार का बादल बरसे और हमें ख़ून के दरिया में कमर तक डुबो दे।

(29) मैं तेरी मोहब्बत चाहता हूँ और तेरे क़हर से काँपता हूँ न मुझे जन्नत की परवाह है न दोज़ख़ का डर है।

(30) बू-अली क़लन्दर तेरे इश्क़ में हर दम एक नई कैफ़ियत से गुज़रता है कभी वो क़ैद में, कभी मक़्तूल, कभी नीचे और कभी ऊपर होता है।

नसीहत न.47

(1) जब तू शौक़ के पाँव ही नहीं रखता तो दोस्त के रास्ते में न चल क्योंकि उल्फ़त के रास्ते में बड़े उतार-चढ़ाव होते हैं।

(2) सुरूर शाहिद और साक़ी छुपे नहीं रहते। शमा पर्दा फाड़ देती है और सुबह होने का राज़ खोल देती है।

(3) मेरा महबूब अच्छा भी है और मस्त कर देने वाला

साथी भी गुज़रने की जगह की सब वारदातें हक़ीक़त हैं।

(4) क्योंकि मेरे महबूब के हुस्न की कोई इन्तिहा नहीं इसलिए हमारे सारे अंजाम, शुरुआत हो जाते हैं।

(5) साक़ी की हथेली क्योंकि जाम से ख़ाली नहीं होती तो मेरा दिमाग़ मस्ती से कैसे बाज़ आए।

(6) रात है, शमा है और शराब है लेकिन ऐ साक़ी! मैं तो डरता हूँ कि तेरे चेहरे के अक्स से फिर सुबह न हो जाए।

(7) अगर तू हक़ीक़त के रास्ते का रुख़ नहीं करता तो तुझे रोज़े से क्या हासिल और तुझे नमाज़ का क्या फ़ायदा।

(8) मेरे सामने तो तेरी भवों का क़िब्ला है इसलिए न तो मैं दौड़कर मस्जिद जाता हूँ और न मक्का शहर की तरफ़ रुख़ करता हूँ।

(9) अबू-अली तो तौहीद का दम भरता है, तो होशियार रह नक़ली कोशिश करने वाले शहीदों की तरह अपनी कोशिश पर मत इतरा।

(10) इश्क़ की पोशाक जो बू-अली क़लन्दर के बदन पर सी दी गयी है उसके दामन पर लानत-मलामत और गालियों के नक़्शो-निगार हैं।

नसीहत न.48

(1) तेरी हाज़री में मेरी लम्बी रात मिन्नत और ख़ुशामद में गुज़र गई लेकिन तूने मुझे मिलन से नहीं नवाज़ा।

(2) फ़ख़्र और हाजत, ज़रूरत को अपनी आदत बना। इन बातों से शायद तुझ पर हक़ीक़त का दरवाज़ा खुल जाए।

(3) छत के ऊपर तू बिना सीढ़ी नहीं चढ़ सकता। तू नक़्ल के रास्ते ही से हक़ीक़त का तलबगार हो जा।

(4) परवाने की तरह तेरा मरना कोई अच्छी बात नहीं, शमा की तरह तेरा काम जलना और पिघलना भी होना चाहिए।

(5) मुझे नसीहत करने वाले, तक़रीर करने वाले कोशिश करने वाले ज़ाहिद के तारों की परवाह नहीं। मैंने तो तेरी बाहों के क़िब्ले की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ी है।

(6) अगर सितम, ज़ुल्म और सर काटना तेरी आदत है तो तेरे सामने मेरा काम भी नर्मी और हाजत है।

(7) अगर बू-अली क़लन्दर दुनिया आख़िरत की तरफ़ तवज्जो कर लेता तो वो दोस्त के चेहरे के सिवा हर एक से परहेज़ करता।

नसीहत न.49

(1) मैं अभी ''क्या मैं तुम्हारा'' की शराब से मस्त हूँ। मेरा जाम अभी तक शराब से भरा है।

(2) हवस करने वालों के पाँव उखड़ गए मैं तेरे इश्क़ में अभी भी साबित-क़दम हूँ।

(3) ऐ ज़ाहिद! तू अपने आप से ग़ाफ़िल हो जा लेकिन महबूब की निगाह में अब भी अपना मक़ाम नहीं बना सका है।

(4) मैं रास्ते की ख़ाक हो गया मगर उस तक न पहुँच पाया, उसका दामन भी अभी हाथ नहीं आया।

(5) क्योंकि मन्दिर में भी तू ही जलवागर है इसलिए लोग अभी तक बुतों को पूजने वाले हैं।

(6) मेरी आँखों की आवाज़ अर्श पर गयी लेकिन हक़ीक़ी महबूब तक न पहुँची, क्योंकि वो आवाज़ अभी तक कमज़ोर है।

(7) बू-अली क़लन्दर महबूब के तीरों से मेरा सीना छलनी हो गया लेकिन उसकी उंगली अब भी निशाने पर लगी हुई है।

नसीहत न.50

(1) ऐ शैख़! एक लम्हे के लिए इश्क़े-इलाही में नाच, बे-अक़्ल ऊँट भी घंटी की आवाज़ सुनकर नाचता है।

(2) जब इश्क़ आता है तो अक़्ल सर से निकल भागती है, नहीं तो मेरे इश्क़ का घोड़ा अक़्ल के रास्ते में कब दौड़ता है।

(3) बाग़ में मेरे साथियों से कोई कह दे कि मैं नया गिरफ़्तार परिंदा हूँ और पिंजरे में तड़प रहा हूँ।

(4) तेरे चेहरे के जलवे की रौशनी ने मेरे इल्म और अक़्ल को जला डाला, उसी तरह जिस तरह आग का शोला घास और काँटों को जला देता है।

(5) अगर तुझे गाने-सुनने का शौक़ है तो मेरी ये फ़रियाद सुन, किसी और की आवाज़ ऐसी दिल लुभाने वाली न होगी।

(6) अगर लाखों लोग मेरी तरह तेरे दीवाने होते, मिलन का वादा करते हुए, तो तू सोच-विचार न करता।

(7) बू-अली क़लन्दर को तेरी नरगिसी आँखों की क़सम, तेरी एक नज़र दुनिया और दीन से फ़ारिग़ कर देने के लिए काफ़ी है।

नसीहत न.51

(1) मेरे कान से फ़रिश्ते की आवाज़ आई कि ऐ क़लन्दर! शराब का जाम पी।

(2) वो शराब कि जाम के अन्दर जोश में आए तो उसकी रौशनी दुनिया को जला डाले। ऐसी शराब जिसका एक घूँट बिला शक फ़रिश्तों की अक़्ल और होश को बाक़ी न रहने दे।

(3) ऐसी शराब कि जिसके जलवे से जन्नत का दारोग़ा शराब का दुकानदार बन जाए, वो शराब ऐसी है कि काँधे पर मुसल्ला रखने वाले नेक और परहेज़गार का मुसल्ला उतार देती है।

(4) वो शराब जिसके डालने की आवाज़ से ''अल्लाह की रहमत से मायूस न हो'' आयत की आवाज़ कानों में आती है।

(5) वो शराब जो अपनी तेज़ी की वजह से पहले ही दिन से पीने वालों का पर्दा रखने वाली है।

(6) वो शराब कि जिसकी तारीफ़ में शरफ़ुद्दीन बू-अली तुझे हरगिज़ ख़ामोश न रहना चाहिए।

नसीहत न.52

(1) जिस पर तेरी ख़ास इनायत हो, वो तेरी पकड़ से आज़ादी नहीं पाता। जो शख़्स ख़ास तअल्लुक़ का बखान करता है उसे अपनी जान से हाथ धो लेनी चाहिए।

(2) अगर तू मुझे क़त्ल करना चाहे तो कर दे मैं अपनी ज़बान पर बदले की बात नहीं लाऊँगा।

(3) कल एक ज़ाहिद मुझसे पूछ रहा था कि गुलाब के रंग की शराब की क्या ख़ासियत होती है।

(4) मेरे कानों में सीसा पिघलाकर डालना चाहिए ताकि मैं लोगों की बेकार बातें न सुनुँ।

नसीहत न.53

(1) मैं तेरे कूचे से मुँह नहीं मोड़ सकता क्योंकि तेरा कूचा जन्नत का एक बाग़ है और मैं उसकी बुलबुल हूँ।

(2) जब तेरा जलवा, हर जलवे के बाद ज़ाहिर होता है तो मैं रियाज़त करने वाले ज़ाहिद की तरह तन्हाई में नहीं बैठ सकता।

(3) जब वो पिलाने वाला जाम देता है तो उसके बदले तू जान और दिल देता है। जब तू कंजूस हो जाए तो ग़म नहीं क्योंकि साक़ी बहुत सख़ी है।

(4) दुनिया से तअल्लुक़ ख़त्म कर लेना चाहिए बिल्कुल इस तरह जैसे क़ैंची से कपड़े काटे जाते हैं।

(5) उसकी ज़ातो-सिफ़ात का जमाल जलवा-फ़रमा है। तो तू देख सकने वाली आँख से देख उसको जो ख़ुद क़ायम है और उसको जो सहारे से क़ायम हैं।

(6) वसवसे बुरे ख़्याल रूह और दिल पर हमला कर रहे हैं, जिस तरह बीमारियाँ जिस्मो-जान पर हमला करते हैं।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! ख़ुदा और ख़ुदी इस तरह कैसे जमा हो सकते हैं, जैसे दुनिया की आँख में कालापन और सफ़ेदी है।

नसीहत न.54

(1) हवस करने वाला इंसान जो रंग और चेहरे का ग़ुलाम होता है, हमारा इश्क़ इस ख़ुशी का नहीं है।

(2) हमारी नज़र में दुनिया एक ही है वो लोग नुक्तों की तरह ख़त के अन्दर छुपी है।

(3) जब नज़र की पहचान उसके अलग-अलग जलवों से हो जाती है तो ख़त छुप जाता है, और नुक्ते ज़ाहिर हो जाते हैं।

(4) अगर तू ग़ोताख़ोर हो जाए और और दरिया के किनारे न बैठे तो तू समुन्दर की गहराई के राज़ जान ले।

(5) मोती जो है वो समुन्दर की गहराई में छुपा है और तू बत्तख़ की तरह सतह पर तैरना चाहता है।

(6) अगर ज़िन्दगी की तख़्ती की सफ़ाई चाहता है तो अपने आपको ग़लत लफ़्ज़ की तरह मिटा दे।

(7) कभी शराब पी और कभी नमाज़ पढ़, ऐ ज़ाहिद बराबर रहने के लिए भलाई ही भलाई है।

(8) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! जो दुनिया से अलग हो जाता है वो दुनिया पर ज़ुल्म नहीं करेगा।

नसीहत न.55

(1) ऐ ज़ाहिद! परहेज़गारों को शराब के जाम से क्या मज़ा आएगा और इसी तरह पीने वालों को नमाज़, रोज़े और हज से क्या मज़ा आएगा।

(2) हम तो शराब से बे-ख़ुद थे और कभी महबूब के दीदार से, ऐ नसीहत करने वाले! ऐसी बेखुदियों से होशियारों का क्या तअल्लुक़।

(3) रातों को जागने वालों ने मालूम है उस दोस्त के चेहरे का थोड़ा सा जलवा देखा होगा, वर्ना रातों को जागने से इन लोगों को क्या मिलता है।

(4) चूँकि उनका हुस्नो-जमाल साबित नहीं है तो हसीनो को ग़फ़लत में रहने से क्या मिलता है।

(5) क्योंकि यार से मिल जाने के अलावा मेरा कोई इलाज नहीं तो मेरा ग़म बाँटने वालों को अपनी आदत से क्या मिलेगा।

(6) तू अगर कभी-कभी अपने चेहरे से पर्दा न उठाए तो तेरे मिलन की उम्मीद से उम्मीद रखने वालों को क्या मिलेगा।

(7) छुटकारा पाने वालों का रुख़ शरफ़ुद्दीन बू-अली की तरह तेरी नाज़ वाली गिरह पर है, वर्ना छुटकारा पाने वालों को छुटकारे से क्या मिलेगा।

नसीहत न.56

(1) जब मेरी जान पर जन्नत की किरनें पड़ती हैं, जान हमें अलविदा कहती है और हम उसे अलविदा कहते हैं।

(2) शैख़ क़व्वाली सुनने से कोई लुत्फ़ नहीं उठाता क्योंकि उसके कान बहरे हैं और उसका सर यार के ख़्याल से ख़ाली है।

(3) अगर हम ख़ाली हाथ हैं तो ऐ साथ बैठने वालों! ये कोई कमी की बात नहीं है। यार का ग़म हमारा माल-दौलत सब लूटकर ले गया।

(4) अगर तेरी ज़ात से मुझको कोई लुत्फ़ नसीब न हो तो मैं ज़िन्दगी की लज़्ज़त से हरगिज़ फ़ायदा नहीं

उठाऊँगा।

(5) सूफ़ी और वाइज़ नसीहत करने वाले के बीच मुझे झगड़ा नज़र आता है। क्या ही अच्छा हो कि वो बा-होश सरापा होश वाला अपने चेहरे से नक़ाब हटा दे।

(6) ऐ नसीहत करने वाले वाइज़! अगर तुम उससे तअल्लुक़ क़ायम रखना चाहते हो तो तुम्हें दुनिया और दिन से रिश्ता ख़त्म करना पड़ेगा।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! हम पाक का'बे की चहार-दीवारी के राज़ों को जानते हैं। हमारे राज़ों की किसी को ख़बर नहीं।

नसीहत न.57

(1) मैं हर रात महबूब के चेहरे की याद में चिराग़ जलाता हूँ। मुझे परवाने की तरह जलने से बिल्कुल फ़ुर्सत नहीं।

(2) हर वो शख़्स जिसका दिमाग़ तुझसे ख़ाली हो, ख़ुदा करे उसके सर पर आसमान से पत्थर और ख़ाक बरसे।

(3) महबूब के चेहरे की वजह से हमारा बाग़ हमारे सीने के अन्दर है। हम बाग़ की सैर से बिल्कुल लुत्फ़ नहीं उठाते।

(4) उस शोख़ के चेहरे और आँखों के ख़्याल से मेरी आँखें आँसुओं से भरी और मेरा सीना दाग़-दाग़ है।

(5) फूल, इत्र, अम्बर और मुश्क जैसी ख़ुश्बुओं से मुझे तेरी ज़ुल्फ़ की ख़ुश्बू का कहीं पता नहीं मिलता।

(6) ऐ नसीहत करने वाले वाइज़! जिस तरह बुलबुलों के बीच कौवे का शोर अच्छा नहीं लगता, उसी तरह आशिक़ों के बीच ग़ुरूर और तकब्बुर के नारे अच्छे नहीं लगते।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! अगर तू दुनिया और दीन से नहीं निबट गया तो फिर दिन-रात बाग़ और जंगल में मस्तों की तरह क्यों फिरता है।

नसीहत न.58

(1) साक़ी ने अलग-अलग रंग की शराब का जाम हाथ में लिया और गाने वाले ने बाजे और दफ़ की लय पर गाना शुरू किया।

(2) अगर हम गाना न सुनें और शराब का जाम न पियें तो फिर हम अपनी क़ीमती उम्र को बर्बाद कर रहे हैं।

(3) कल मैं अपनी तौबा के टूटने पर परेशान हो रहा था। ग़ैब से आवाज़ आई कि ख़ौफ़ न कर।

(4) पीरे-मुग़ाँ का एक राज़ मेरे दिल में है, वो राज़ उस

मोती की तरह है जो सीप से बाहर न निकले।

〈5〉 अगर ग़म के मारे हुए का एक तीर निशाने पर लगे तो मैं अपने दिलो-जान को निशाना बनाने के लिए तेरे सामने ला रहा हूँ।

〈6〉 हम आशिक़ जब क़तार-दर-क़तार खड़े हों मुझे तलवार मयान से निकाल देनी चाहिए।

〈7〉 ऐ शोख़ गुड़िया! जो पत्थर दिल भी होती है शरफ़ुद्दीन बू-अली के दिलो-जान पर ज़रा रहम नहीं करती।

नसीहत न.59

〈1〉 तेरा चेहरा छुपे हुए इश्क़ की आग से मुझे जलाता है। तेरे बाल मेरे लिए इश्क़ का आता हुआ, हिलने वाला सिलसिला हैं।

〈2〉 जब मैंने इश्क़ के हुक्मनामे पर सर झुका लिया, तो मैं दुनिया में किसी के सामने सर नहीं झुकाता।

〈3〉 जिसका हाथ इश्क़ के दामन के कोने तक पहुँचा हो, वो हाथ ज़रूरत के वक़्त ख़िज़्र के दामन की तरफ़ कब जाता है।

〈4〉 अगर मंज़िल का मक़सद तेरी नज़र में है तो शौक़ का एक क़दम बयाबाने इश्क़ की तरफ़ बढ़ा।

(5) ऐ नसीहत करने वाले वाइज़! अगर तू इश्क़ के दस्तरख़्वान से लुक़मा खाना चाहता है तो दुनिया का लुक़मा अपने मुँह और हलक़ में न रख।

(6) जब अक़्ल और समझ पर इश्क़ के बादशाह का हमला होता है तो अक़्ल और समझ जल्दी भाग जाते हैं।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! अगर तू इश्क़ के मस्तों की तरह नारा लगाए तो मग़रूर नसीहत करने वाला वाइज़ के होश उड़ जाएँ।

नसीहत न.60

(1) तेरे चेहरे मुबारक पर ज़मीन और आसमान फ़िदा है। तेरे नूरानी सर पर लौलाक का ताज है।

(2) ऐ यशरब के चाँद! चेहरे से नक़ाब उठा और मेरे गिरेबान और दामन को फाड़ दे।

(3) मेरे सीने में आग लगा दे जो सब्र के खलिहान को जला दे। मैं इसलिए आहो-फ़रियाद कर रहा हूँ कि अगर तेरे रास्ते की मुट्ठी भर ख़ाक मिल जाए तो मैं उसे चेहरे पर मल लूँ।

(4) मेरा बदन कूड़ा-करकट की तरह है तो आ और इस पर अपने जमाल की तजल्ली गिरा।

(5) मेरे सर पर आँख के इशारे की तलवार मार। मेरी

ग़मनाक जान पर ज़रा रहम कर। जब मैं हर पल तेरी जुदाई की आग में जल रहा हूँ तो मुझे भला दोज़ख़ की आग से क्या डर होगा।

(6) अगर कोई अरबी में तेरी तारीफ़ पढ़ने वाला मिल जाए मेरा ऊँट चुस्त और चालाक हो जाए।

(7) अपने दामन की जेब में सैकड़ों चाक रखता हूँ। क़लन्दर बू-अली क्या बात है तेरे इश्क़ की क्या बात।

नसीहत न. 61

(1) हम उन लोगों की सोहबत से तंग आ गए हैं। हम, नाम और निशान के हरगिज़ ख़्वाहिशमंद नहीं हैं।

(2) अगर तू अपने बुरे नफ़्स से जंग कर ले तो हर बुरे-भले से सुलह कर ले। आबिद का रास्ता सफ़ाई के रास्ते के सिवा कुछ नहीं और आशिक़ का रास्ता गर्दन दे देने के सिवा कुछ नहीं।

(3) तेरी जुदाई की वजह से मेरा दिल पत्थर से लगा तेरे इश्क़ की वजह से मेरे हाथ पत्थर तले आ गए।

(4) तेरी गुज़री हुई उम्र वापस नहीं आएगी कमान से निकला हुआ तीर वापस नहीं आता।

(5) इसलिए तू हर साँस को ग़नीमत समझ, तू नातिक़े-क़ुरआन की दस आयतें न छोड़।

(6) गाने की आवाज़ पर नग़मा गा और लाल रंग की शराब के जाम पी।

(7) दिल तो आईना होता है और आईने को हर दाग़ और ज़ंग से पाक करना चाहिए, ताकि इस आईने में तू जमाले-सरवरी को बिना देर किए और बिना शक के ज़ाहिर देखें।

(8) इश्क़, अक़्ल और इल्म को बर्दाश्त नहीं करता। इसका घोड़ा इस वादी में चल नहीं सकता।

(9) शोख़ महबूबा के बीच ज़ाहिदों का ईमान बर्बाद हो जाता है।

(10) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली इश्क़ अक़्ल पर छा जाता है बिल्कुल इस तरह जिस तरह चीता हिरण पर हमला करता है।

नसीहत न. 62

(1) बुलबुल मस्ती के आलम में फ़रियाद कर रही है कि तेरी ख़ुश्बू, कि तेरी ख़ुश्बू कली और फूल में छिप गई है।

(2) अगर मुझे कोई शराब का एक प्याला देता तो उसके बदले सुलैमान की सल्तनत बख़्श देता।

(3) जब मैंने उस मस्त महबूब का जलवा देखा तो मेरे

हाथ से सब्र और बर्दाश्त का दामन छूट गया।

(4) मैं नहीं जानता कि सुब्ह की हवा घास और अनाज की बालों की ज़ुल्फों में किस तरह गोलाई और ताक़त गलती है।

(5) मैं नहीं जानता कि चाँद ने ऊँचाई पर बैठकर बाग़ में शोर क्यों मचाया।

(6) मैं नहीं जानता कि पीने वालों की महफ़िल में कल-कल की आवाज़ क्यों आती है।

(7) मैं नहीं जानता कि फूल अपने दामन और गिरेबान में बाग़ के अन्दर सौ-सौ चाक क्यों डालता है।

(8) मैं नहीं जानता कि फूलों की झाड़ी पर बुलबुल नग़मे क्यों गाती है।

(9) शरफ़ुद्दीन बू-अली! तू अगर इस राज़ को समझना चाहता है तो ग़ौर और फ़िक्र के गिरेबान से सर बाहर न निकाल।

नसीहत न. 63

(1) ''तेरी उम्र की क़सम'' ख़ुदा ने हुज़ूर की उम्र की क़सम खाकर आपको सरफ़राज किया। क़सम एक ताज है तेरे दर पर जिब्रईल ने अपना माथा रगड़ा। आपके सर पर इस क़सम का ताज है जो आपकी पहचान है।

(2) अर्श तेरे बैठने की जगह है कि तू उस पर जलवा-फ़रमा है। तेरे नूर से दरो-दीवार क़ंदील की तरह रौशन है।

(3) अगर ईसा दो सौ मुर्दों को जल्दी से ज़िंदा करता तो, तू एक नज़र से एक नई दुनिया और एक आदम ला सकता है।

(4) अगर मैं तेरे इश्क़ में एक नारा बुलन्द करूँ तो लोगों का ख़्याल इसराफ़ील के सूर की तरफ़ जाएगा।

(5) ये जो हरा रंग हर चेहरे पर लिखा हुआ है इसके अन्दर जमा तौर पर पाँच तफ़्सीरी किताबें हैं।

(6) जो कोई ये तेरा हरा रंग पढ़ ले उसकी समझ में तौरेत, ज़ुबूर, इंजील और क़ुरआन आ जाते हैं।

(7) सारे दोस्त जल्दी-जल्दी हज के लिए मक्का जा रहे हैं लेकिन मुझे तो तेरी भवों के क़िब्ले का सफ़र करना है।

(8) तेरे इश्क़ में शरफ़ुद्दीन बू-अली ने ऐसी-ऐसी अजीब चीज़ें देखी हैं कि उनकी मिसाल भी बयान नहीं की जा सकती।

(9) हाँ, ऐ बू-अली क़लन्दर! दुश्मनों से हरगिज़ रंजीदा न हो आदम की सूरत को शैतान ने सजदा नहीं किया।

नसीहत न. 64

(1) ऐ महबूब! तेरे होठों की तरावट से शराब की ताज़गी क़ायम है और तेरे चेहरे की लताफ़त से फूल की नज़ाक़त है।

(2) तेरा जलवा फ़रिश्तों की दुनिया से बढ़कर है। तेरे चेहरे की ख़ूबसूरती से अक़्ल हैरान है।

(3) हमारा रोना हमारी ताक़त से बाहर है, समुन्दर की कमर पर हम पुल नहीं बना सकते।

(4) हर ज़र्रे को सूरज के अक्स से बेक़रारी है। हमने थोड़ा और थोड़े का सब तेरे चेहरे के जमाल में डूबा देखा।

(5) हमें तेरी बन्दगी के सिवा कोई चारा नहीं हमारे पाँव में ज़ंजीर है और गले में तौक़ है।

(6) वाइज़! तू नसीहत करने के लिए मेरे नजदीक़ न आ क्योंकि मेरे लिए दूर के ढोल सुहाने हैं।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर! हम किसी की इबादत में सर नहीं झुकाते। हम तो रसूल सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम के दायरे में बैठे हैं।

नसीहत न. 65

(1) मैं इश्क़ का प्यासा हूँ मेरा जिगर चल रहा है इसकी गर्मी से मेरा दिमाग़ जल रहा है।

(2) मैंने उसके हुस्ने-करम पर एक नज़र डाली तो क़यामत तक मेरी वो नज़र जलती रही।

(3) उसके चेहरे की शमा का साया मुझ तक पहुँचा इसलिए कि ..... तरह मेरा जिगर जलता रहा।

(4) अगर मैं उसकी ख़्वाहिश में उड़ुँ तो सैंकड़ों तजल्लियाँ मेरे बाल और पर जला दे।

(5) ज़िंदगी की क़ैद में तेरी जुदाई से मैं दिन-रात जहन्नुम की आग में जलता हूँ।

(6) उसके इश्क़ के दाग़ मेरे दिल में हैं। हाय ये मुट्ठी भर चिंगारियाँ मुझे जला रही हैं।

(7) ऐ बू-अली क़लन्दर! उसके नूर भरे चेहरे की याद का शोला मुझे सुबह-शाम जलाता है।

नसीहत न. 66

(1) साफ़ शराब हो और महबूब मेरे आग़ोश में हो तो मुझे दोनों जहानों में किसी का डर नहीं।

(2) तेरे इश्क़ के ग़म की शराब मेरी रूह ने पी ली है। मैं आख़िर तक ख़ुमार में हूँ।

(3) मैं तो तेरी मस्त आँखों की तरह हूँ, तू सारी उम्र मुझे होशियार नहीं पाएगा।

(4) अगर तू मुझे सूली की तरफ़ मेरी रहनुमाई करें तो मैं सौ बार ''अनल हक़'' का नारा बुलन्द करूँ। ।

(5) उस महबूब के होते हुए जो मैं रखता हूँ, मुझे अच्छा लगता है कि दोनों जहानों में मेरा सर ऊँचा है।

(6) जब वो अपने चेहरे से नक़ाब हटाता है तो मुझे तजल्ली बेक़रार कर देती है।

(7) मैंने तो दीन और दुनिया से किनारा कर लिया लेकिन वो अभी तक मेरी बग़ल में नहीं आया।

(8) अगर मेरी मुट्ठी भर ख़ाक को पर भी लग जाएँ और वो परवाज़ भी करें तो भी उसके दामन के कोने को नहीं पकड़ सकती।

(9) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर! मैं उसकी हाज़िरी में क्या कहूँ कि वो मेरी छुपी हुई और ज़ाहिर सब हक़ीक़त को जानता है।

नसीहत न. 67

(1) आदम के चेहरे में तेरा जमाल मौजूद है इसीलिए

इसे तमाम इंसानों पर इज़्ज़त हासिल हुई।

(2) अगर इबलीस ये नुक्ता जानता तो वो लगातार हज़ारों सजदे करता।

(3) आदम पर सब नाम ज़ाहिर हो गए सब फ़रिश्ते वहाँ बहरे थे।

(4) जिसकी ज़बान बन्द न हो बारगाहे-इलाही में उस का कोई राज़दार नहीं होता।

(5) वो कौन सा नाम है कि इसकी तारीफ़ के कुछ हिस्से अर्शे-आज़म की पेशानी पर लिखे हैं।

(6) इस नाम के सदक़े मेरी जान, इस नाम के अलावा इस्मे-आज़म क्या होगा।

(7) उसके इश्क़ में अगर मैं एक मस्ताना नारा बुलन्द करूँ तो दीन और दुनिया मस्त हो जाए।

(8) शरफ़ुद्दीन बू-अली ने उसकी सूरत में साफ़ तौर पर न ख़त्म होने वाली ख़ूबसूरती को हक़ीक़त में देखा।

नसीहत न. 68

(1) पर्दा उठा ताकि हम तेरे सूरज जैसे चेहरे को देखें वर्ना जिगर की आग से दुनिया का पर्दा फाड़ दें।

(2) तू पर्दा उठा ताकि मैं तेरी दोनों भवों को देखूँ तेरी

तलवार के सामने हम सब सरासर ढाल हैं।

(3) तेरे जलवों की आग ने रूहों के बाग़ जला डाले लेकिन हमसे क्या हो सकता है, हम तो कम नज़र वाले हैं।

(4) तेरे चेहरे का साया अपना पर्दा खुद फाड़ देता है फिर हम तेरे चेहरे को पर्दे के पीछे से क्यों देखें।

(5) तेरी ख़ूबसूरती हर जहान से बेहतर है तो हम तेरे चेहरे के मुक़ाबले दोनों जहानों को एक जौ के बदले न ख़रीदें।

(6) हम तेरे जमाल का दुनिया में ऐलान करने वाले बनें जबकि तेरे दीदार के जलवे से हम बेख़बर हैं।

(7) दोस्तों की तारीफ़ और दुश्मनों के ताने सुनते हैं लेकिन हम इस जगह से नहीं जाएंगे और ग़फ़लत से गुज़र जाएंगे।

(8) जो इश्क़ में मरता है वो कभी मुर्दा नहीं होता तेरे इश्क़ में मरने वाले को हम हमेशा ज़िन्दा समझते हैं।

(9) जन्नत तेरे कूचे का मुक़ाबला नहीं कर सकती तेरे कूचे को छोड़कर हम जन्नत नहीं जाएंगे।

(10) बू-अली क़लन्दर मलामत की राह मर्दाने-ख़ुदा की राह है मुनासिब नहीं कि हम ये राह नफ़रत से तय करें।

नसीहत न. 69

(1) दिन के वक़्त अपनी औलादों के साथ वफ़ा की बाज़ी खेलता हूँ। रात के वक़्त सारी रात शराब पीने और शमा जलाने में गुज़ारता हूँ।

(2) दोस्त के जलवों ने मुझे दोनों जहानों से बेख़बर कर दिया। उसके चेहरे में इस क़द्र डूब गया हूँ कि दो जहानों पर तवज्जो नहीं देता।

(3) मैंने तुझे सज्दा किया और खुद जिसको सज्दा हो वो हो गया। इस सज्दे में फ़रिश्ते मेरे साथ शरीक नहीं हैं।

(4) उसके ग़म के दर्द की वजह से हमेशा ये बात मेरे दिमाग़ में रहती है कि मुझे शमा की तरह पहले अपने सर की क़ुर्बानी देनी चाहिए।

(5) मैं तो इश्क़ का परिन्दा हूँ जिसे ख़ुदा के एक होने का ताना दिया जाता है। अर्श के हर कंगूरे के नीचे मेरी उड़ान होती है।

(6) उसकी ख़ूबसूरती की एक लहर मुझे अचानक ले गयी। हक़ीक़त की नज़र रखने वालों की आख़िरी हद तो मेरी शुरुआत है।

(7) मैं तो अर्श की बुलन्दियों का एक शहबाज़ हूँ। मैं हादसे की जगह दुनिया में कब परवाज़ करता हूँ।

(8) मैं कश्फ़ का दावा कब करता हूँ क्योंकि ये भी छुपा हुआ शिर्क है। मैं फ़ालतू बेकार बातों के लिए बुलन्द आवाज़ नहीं हूँ।

(9) न मैं आरिफ हूँ, न आलिम हूँ, न आशिक़ हूँ, और न ही पीने वाला हूँ। मेरे राज़ के बारे में सब बेख़बर लोग बेहूदा बातें करते हैं।

(10) बू-अली क़लन्दर! मैं बेवफ़ाई की राह से ख़ुद को निकाल लूँगा क्योंकि मैं तो वफ़ा करने वाले गिरोह में मशहूर हूँ।

नसीहत न. 70

(1) मैं पीने वाला हूँ या बुतों को पूजता हूँ मैं जो कुछ भी हूँ, ऐ ख़ुदा! मुझे कुबूल कर।

(2) मेरे सीने में एक बुत मौजूद है मैं दिन-रात उस बुत की पूजा करता हूँ।

(3) क़यामत का हंगामा भी मुझे होश में न ला सकेगा क्योंकि मैं तो पहले ही दिन से मदमस्त हूँ।

(4) मुझे बुत-परस्ती से परहेज़ नहीं क्योंकि मेरा यार बुत था और मैं बुत-परस्त हूँ।

(5) मैं इश्क़ के चक्कर में उस वक़्त से हूँ जब से मैंने अपना दिल तेरी घुमावदार जुल्फों में बाँधा।

(6) अगर मौत भी आए तो मेरे पास नशे को नहीं तोड़ सकती, क्योंकि मैं इश्क़ की शराब से मस्त हूँ।

(7) शरफ़ुद्दीन बू-अली! जब से मैंने उसकी नर्गिस जैसी आँखों को देखा तो मस्ती से मैंने सागर और मीना तोड़ डालें।

नसीहत न. 71

(1) मैं तो उसके जमाल में डूबा हुआ हूँ मैं नहीं जानता मैं कहाँ गया मैं उसके मिलन में ग़र्क़ हो गया, मैं नहीं जानता मैं कहाँ गया।

(2) मैं उसके चेहरे का ग़ुलाम और उसकी ज़ुल्फों से बँधा हूँ मैं उसके कूचे का ग़ुबार था मैं नहीं जानता मैं कहाँ गया।

(3) मैं उस चाँद को जानता हूँ जान और दिल से उस पर फ़िदा हूँ मैं फ़िदा हो गया, मैं नहीं जानता मैं कहाँ गया।

(4) जब मैं उसके इश्क़ में डूबा हुआ हूँ तो मैंने सर उसके क़दमों में रख दिया मैं उसके चेहरे की मोहब्बत में गुम हो गया मैं नहीं जानता मैं कहाँ गया।

(5) मैं क़लन्दर अली हूँ दोस्त के नाम पर मस्त हूँ मैंने दिल उसके इश्क़ से जोड़ लिया मैं नहीं जानता मैं कहाँ गया।

नसीहत न. 72

(1) मुझे तो अपनी आँखों पर भी शर्म आती है, मैं उन्हें तेरा चेहरा नहीं देखने देता, मैं कान को भी तेरी बात सुनने नहीं देता।

(2) अगर किसी रात तेरा मिलन नसीब हो जाए तो सुबह नहीं निकलने दूँगा।

(3) अगर मलकुल-मौत मेरी जान लेने के लिए आए जब तक मैं तेरा चेहरा न देख लूँ मैं अपनी जान निकलने नहीं दूँगा।

(4) अगर तेरे कूचे तक मेरी पहुँच हो तो मैं किसी ग़ैर को तेरे कूचे तक पहुँचने न दूँगा।

(5) अगर दोनों जहाँ तेरे दीदार की नज़र के तौर पर दें अल्लाह जानता है मैं तेरा एक बाल उन्हें देखने न दूँ।

(6) अगर वो पाक उड़ने वाला मेरे जाल में आ जाए, चाहे वो सौ हमले करें मैं फिर भी उसे उड़ने न दूँ।

(7) शरफ़ुद्दीन बू-अली! अगर हवा चले और उस ज़ुल्फ की ख़ुश्बू को ले उड़े, मैं हवा को भी इस शहर में चलने न दूँ।

नसीहत न. 73

(1) हम तो ग़ुलाम और तेरे गिरोह में हैं, चाहे तू हम पर मेहरबानी करे या नाराज़ हो।

(2) हमारे सीने में बहुत से राज़ हैं हालाँकि हम तेरी मजलिस में ख़ामोश हैं।

(3) हम अपने दोस्त के साथ हम-आग़ोश हैं लेकिन हम यार को कभी नहीं देखते।

(4) हम किसी जगह ये इक़रार नहीं करते कि तेरे इश्क़ की वजह से हम दर-बदर हैं।

(5) अगर हम महबूब से मिलन का शरबत पी लें तो मौत की तजल्ली कब महसूस होगी।

(6) वो हमारे अन्दर और हमने उसके अन्दर अपने आपको मिटा दिया। इसलिए हमदर्द की दुआ के लिए कोशिश नहीं करते।

(7) मयख़ाना जन्नत से बेहतर है हम शराब के जाम को तौबा के बदले नहीं बेचते।

(8) बूढ़ी दुनिया सूखी घास की तरह है और हम समुन्दर के तूफ़ान की तरह जोश में हैं।

(9) हम क़लन्दरों जैसे और पीने वालों की तरह हैं, इसलिए हम शहीदों की गुठली नहीं पहनते।

(10) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! इश्क़ को क़ाबू में रखना हमारी आदत है हम दीवानों की तरह शोर नहीं करते।

नसीहत न. 74

(1) हम तेरे इश्क़ में कमज़ोर हो गये हैं हम जिस्म थे और अब जान की तरह हो गए हैं कि नज़र नहीं आते।

(2) जब से हमने तेरी आँख में जगह बना ली है हम दुनिया की आँख से ओझल हो गए हैं।

(3) हम उसके शौक़ की शराब का एक घूँट पीकर बुढ़ापे में फिर से जवान हो गए हैं।

(4) हम किसके दस्तरख़ान पर मेहमान हुए कि हमें रोटी-पानी की कोई परवाह ही नहीं।

(5) जब से उसने हमें अपने आस्ताने पर बैठाया है हम बुलन्दी में आसमान की तरह हो गए।

(6) जब से हमें तेरा मिलन नसीब हुआ है हमें दोनों जहानों की परवाह नहीं है।

(7) जब से हमने इश्क़ में तेरा निशान पाया हम इस जहान में बेनिशान हो गए हैं।

(8) जब तेरी तलवार के नीचे हमने सर रखा तो हम न ख़त्म होने वाली उम्र के क़ाबिल हो गए।

(9) जब हम दीन और दुनिया से अलग हो गए तो नफ़ा-नुक़सान से अलग हो गए।

(10) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! दोस्त के जलने की ख़्वाहिश में हम दोज़ख़ और जन्नत से फ़ारिग हो गए।

नसीहत न. 75

(1) चूँकि हम सज्दे में तेरी भवों के घुमाओ के सामने हैं नमाज़े-इश्क़ में हमने तो अपना मुँह तेरी तरफ़ कर लिया है।

(2) हूर और ग़िलमान और परी हमारी नज़र में नहीं है क्योंकि हम तो शुरु से ही तेरे चेहरे के आशिक़ हैं।

(3) हमारा पाँव ज़ंजीर में है और हम ग़ुस्सा खा रहे हैं क्योंकि हम शुरू से ही तेरे बालों से बंधे हैं।

(4) हमारा सर तेरे बालों की याद की कमन्द है, इसलिए हम हर किसी के सामने अपना सर नहीं झुकाते।

(5) हम शराब का जाम हरगिज़ नहीं पीते, हम फूल को नहीं सूँघते, तेरे चेहरे में हमें बेख़ुद और तेरी ख़ुश्बू ने हमें मस्त किया है।

(6) ऐ कामिल पीर! अगर तू हमें शराब का एक घूँट अता करे तो हम कहीं भी हों दिन-रात तेरे लिए दुआ

करने वाले रहेंगे।

(7) ऐ दोस्त! तेरा ग़ुस्सा भी दूसरों की मेहरबानी से बेहतर है तू चाहे हमें भगाएँ चाहे बुलाएँ हम तो तेरी मर्ज़ी पर हैं।

(8) तेरी जुदाई की कड़वाहट हमारे ज़ायक़े को पसन्द नहीं है। हम तो तेरी मीठी अदाओं के आदी हो गए हैं।

(9) अगर नसीहत करने वाला हमें जन्नत का लालच देता है तो वो बेकार बातें करने वाला है, क्योंकि हम तो बू-अली क़लन्दर की तरह तेरे कूचे में पड़े हुए हैं।

नसीहत न. 76

(1) ऐ आशिक़! तू उठ और रास्ते में क़दम रख, इस रास्ते में अक़्ल लूट लेने वाली है इसलिए इससे बच।

(2) अगर तू मर्द नहीं है तो इश्क़ के क़रीब न फटक, हिजड़ों की तरह दूर से वाह-वाह कर।

(3) सब्र के खलिहान को आग के हवाले कर, अहमक़ अक़्ल के मुँह पर ताने मार, इश्क़ की वजह से जो भला बला तुझ पर आए उसे ख़ुशी से क़ुबूल कर और क़हक़हा मार।

(4) अगर तू युसूफ़ कनआन की तरह मिस्र चाहता है तो कुएँ में तन्हाई में बैठ जा।

(5) जान क़ुर्बान कर और महबूब की राह ले, कायनात से ऊँचा उठकर ख़ेमा लगा।

(6) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर! पहले तू अपनी जान से अलग हो जा फिर इसके रास्ते में क़दम रख।

नसीहत न. 77

(1) क्या तू जानता है दुनिया क्या है? ख़ुदा से दिल का तअल्लुक़ तोड़ लेना, इसके इश्क़ के सिवा किसी और को चुन लेना और इसके सिवा किसी के ज़िक्र को सुनना।

(2) क्या तू जानता है कि न नाज़ रखने वालों के इश्क़ में मस्ती क्या है? रक़्स भी करना और कपड़े भी फाड़ना।

(3) क्या तू जानता है लज़्ज़त क्या होती है? उसके सर को सूँघना और उसके गाल और होठों को देखना।

(4) क्या तू जानता है उस शोख़ नौजवान के लिए क्या ज़रूरी है? फूल की तरह हँसना और नई उम्र की तरह नाज़ से चलना।

(5) क्या तू जानता है कि इश्क़ से आशिक़ों का मक़सद क्या होता है? यार की तरफ़ जाना भी और उसका मुखड़ा देखना भी।

(6) क्या तू जानता है कि तेरे इश्क़ से शरफ़ुद्दीन बू-अली का क्या मक़सद है? ख़ंजर को दिल में ही तोड़

देना और आँखों से ख़ून टपकाना।

नसीहत न. 78

(1) अपना चेहरा कोशिश करने वाले ज़ाहिदों और नसीहत करने वालों से छुपा, शराब बेचने वालों से शराब का जाम माँग।

(2) ग़ैब से आवाज़ देने वाला हर नौजवान को आवाज़ देता है कि शराब का एक जाम पी और पिला।

(3) मेरे होंठ फ़रियाद को रोक लेने की वजह से बन्द हैं मेरा दिल तेरे इश्क़ के राज़ों की वजह से जोश में आया हुआ है।

(4) उसके आशिक़ों में मेरे जैसा पीने वाला बुरा मस्त नज़र नहीं आता और ऐसा जोश वाला भी नज़र नहीं आता।

(5) ऐ ज़ाहिद! अगर तेरा मक़सद दीदारे-इलाही है तो हम जैसे नीचे की शराब पीने वालों की सोहबत में आ।

(6) मैंने शराब पीने वालों में ख़ुलूस और मोहब्बत ही देखी और चोग़ा पहनने वालों में नक़ल ही नक़ल देखी।

(7) अगर बू-अली क़लन्दर के सर पर ख़ंजर बरसें फिर भी वो तेरी रज़ा हासिल करने की कोशिश करेगा।

नसीहत न. 79

(1) अगर तू ख़ूबसूरती में बेमिसाल है लेकिन हमारे जैसा शख़्स तुझे पाक देखने वालों में नज़र नहीं आएगा।

(2) मुझे न तो हमदर्दी रखने वालों से कोई उम्मीद है, न ही कमियाँ निकालने वालों की कोई परवाह है।

(3) ए शेख़! अगर तेरे दिल में दर्द मौजूद है तो फिर तू ख़ूबसूरती से आँखें क्यों चुराता है।

(4) तू चेहरे पर पर्दा डाल बैठता है अपने साथ बैठने वालों से ग़फ़लत और बे-परवाही बरसता है।

(5) जब वो शेख़ ख़ानक़ाह से गुज़रा तो मेरा दिल ज़ाहिदों और नसीहत करने वालों से भर गया।

(6) हमने उसके इश्क़ के समुन्दर में अपना दिल डाल दिया। हम दूर का सोचने वालों जैसी अक़्ल नहीं रखते।

(7) ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली! अगर तू क़लन्दरी के रास्ते पर हैं तो तन्हाई में बैठने वाले शहीदों की सोहबत में मत जा।

नसीहत न. 80

(1) ऐ वो हस्ती के तू वो है जो सब आलमों के लिए रहमत हैं। तेरे फ़ैज़ का एक भिखारी जिब्रईल है।

(2) ऐ वो हस्ती की ख़ुदाई ज़ुल-जलाल ने तेरे नाम को

अर्श की पेशानी पर लिखा।

(3) तेरा आस्ताना आली है बेमिसाल है वो तो ज़मीन पर एक आसमान है।

(4) तेरे हुस्न के आलम की तारीफ़ है दुनिया को पैदा करने वाला तुझ पर फ़िदा है।

(5) उसके नूर भरे दरवाज़े की मुट्ठी भर ख़ाक हमारे लिए ताज और हुकूमत से बेहतर है।

(6) तेरे जमाल की बदौलत ऐनुल यक़ीन के आईने में रात को जलवा देखता हूँ।

(7) बनने वाली चीज़ों की शुरुआत भी तुझसे है और अंजाम भी, शुरुआत और आख़िरत के इमाम।

(8) तेरे सलाम और सलात और नात के सिवा, बू-अली क़लन्दर के सीने में कुछ और होने की जगह नहीं है।

नसीहत न. 81

(1) इंसान से फ़रिश्ते तक सब तेरे दीवाने हैं हर काम वाले और बेकार के होंठों पर तेरा ही अफ़साना है।

(2) सब मस्ती और ख़ुमार की वजह से क़ुदरत में रक़्स कर रहे हैं तेरे जान से ज़र्रा-ज़र्रा मस्त है।

(3) जो शख़्स तेरा मस्ताना जलवा देख लेता है उसके होश उड़ जाते हैं और वो क़यामत तक होश में नहीं आता।

(4) ऊँची दुनिया की राह के दर्द पर बैठने वाला परिन्दा जब तेरा परवाना बना तो तेरे हुस्न की शमा से इसके पर और बाल जल गए।

(5) जो शख़्स अपनी ज़ुबान से तेरी ख़ासियत और सिफ़ात की बात करता है वो तेरे राज़ से नावाक़िफ़ है और तुझसे अलग है।

(6) मकान का होना और मकान का न होना भी बहुत पीछे रह गया। ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर! तेरी मर्दाना हिम्मत देखने के क़ाबिल है।

नसीहत न. 82

(1) मैं उसके ख़्यालों में डूब कर ''ला इला-ह इल्लल्लाहु'' का नारा खुल्लम-खुल्ला बुलन्द करता हूँ।

(2) जो कोई दिल के ख़ून से वुज़ू करता है। आशिक़ उसे सज्दा करते हैं।

(3) ऐ ज़ाहिद! अगर तू दिल से फ़ारिग़ होना चाहता है तो नदी के किनारे बैठकर शराब के दो जाम पी।

(4) उसके इश्क़ ने मेरे दिल को पारा-पारा कर दिया।

शराब ने जोश मारा और मटका टूट गया।

(5) मेरा महबूब! ऊँची उड़ान भरने वालों को अपनी ज़ुल्फों के दायरे में फँसता है।

(6) उसके मुखड़े को सामने वो देखता है जो दोनों जहानों से मुँह मोड़ लेता है।

(7) हम उस कूचे में अगर अदत की हद से एक बाल बराबर भी पाँव बाहर निकाले तो हमारी जान, दिल, अक़्ल, इल्म और दिन उसकी तजल्ली की बिजली से जल गए।

(8) बू-अली क़लन्दर यार के जलवे के ख़्याल में नारा ''या-हू'' बुलन्द करता है।

नसीहत न. 83

(1) कल गाने वाला ये तराना गा रहा था कि ये दुनिया अफ़साना और अफ़सोस है, इसकी कोई हक़ीक़त ही नहीं है।

(2) अगर तू हमेशा का ऐशो-आराम चाहता है तो साज़ की धुन पर पी।

(3) तलछट पीने वाले यारों के सिवा मुझे ज़माने में कहीं वफ़ा नज़र नहीं आती।

(4) शराब बेचने वालों की शराब का एक घूँट पी लो,

कोशिश और इल्म से एकदम फ़ारिग हो जाओ।

(5) अगर मैं ख़ुद को मिटा दूँ और बीच में न रहूँ तो दुनिया को जला देने वाले हुस्न के चेहरे का जलवा नज़र आए।

(6) अगर तू दिल के घर में नज़र नहीं आता तो मुझे तू किसी घर में नज़र नहीं आता। शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर तुझे हमेशा हमेशा के लिए इसी आस्ताने पर ख़िद्मत का सर झुका देना चाहिए।

नसीहत न. 84

(1) मैं तो एक जाम में ही मस्त और शराबी हो गया। मैं किसी हलाल या हराम को नहीं जानता।

(2) मैं शराबख़ाने में नमाज़ पढ़ता हूँ इस नमाज़ में न सज्दा है न क़याम।

(3) जब मैं उसके रास्ते में एक दो क़दम चला तो मैंने कुफ़्र और ईमान छोड़ दिया।

(4) ऐ लड़के! मुझे वो शराब दे जो अपनी मज़बूती की वजह से हर मस्त और कच्चा सामान जला डाले।

(5) अगर मुझे ज़िन्दगी का नाम मिले तो कोई हर्ज नहीं जब मैं मस्त हूँ तो कोई भी नाम मेरे लिए नेक नहीं।

6 मेरी हिम्मत के परिन्दे का तअल्लुक़ क्योंकि अर्श से है इसलिए वो कभी जाल में नहीं गिरता।

7 तेरे जैसा हमारा कोई आक़ा नहीं होगा और हमारे जैसा तेरा कोई ग़ुलाम न होगा।

8 ऐ शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर! तेरे शे'रों में ज़िन्दगी और मस्ती है। कोई शख़्स तेरे जैसा कलाम नहीं कहता।

नसीहत न. 85

1 अगर इश्क़ न होता तो इसका ग़म न होता फिर इतनी अच्छी बातें कौन कहता और कौन सुनता।

2 अगर इश्क़ न होता तो ख़ुदा तक कोई न पहुँचता शुरुआत का हुस्न अपने चेहरे से पर्दा न हटाता।

3 अगर महबूब पर्दा हटाकर अपना रुख़सार दिखा देता तो वो आशिक़ों के जिस्म से दिल और जान निकाल लेता।

4 अगर हवा न होती तो उसकी ज़ुल्फों को कौन हटाता माशूक़ का रुख़सार आशिक़ को कौन दिखाता।

5 अगर साक़ी के मयख़ाने का दरवाज़ा खोलता तो दुनिया में ..... और होशियार न होता।

6 मैं मस्त शराबी जो नमाज़ पढ़ता हूँ इससे न क़याम है न रूकू और न सज्दा।

7 अगर तेरे दिल में नमाज़ की उल्फ़त न हो तो हक़ को नमाज़ में खड़े होना और बैठने से नहीं जान सकता।

8 ऐ वो हस्ती के न होना तेरे हाथों से कुछ हो जाता है तेरे सिवा किसी और का होना नज़र नहीं आता।

9 ऐ बू-अली क़लन्दर अगर तू अपने जले हुए दिल का धुआँ बाहर निकालेगा तो दोनों जहानों को जलाकर खाक कर देगा।

नसीहत न. 86

1 तू बेगुनाहों की जान ले रहा है ये सर-बुलन्दी तुझ पर अच्छी नहीं लगती आशिक़ों की जान से खेलना तेरे लिए बहुत आसान है।

2 मैंने तेरे इश्क़ के ग़म को हर किसी से छुपा कर रखा है मैंने सुबह की हवा से इसका ज़रा भी ज़िक्र किया या उसने भी बता दिया।

3 वो अपनी ज़ुल्फ़ से अगर गेंद के खेल की तरह खेलें आशिक़ों के बहुत से सर उसके खेल के लिए गेंद बन जाएँ।

(4) उसकी दो मस्त काफ़िर आँखें हमारे साथ लड़ाई करती हैं ये मुसलमान एक काफ़िर ग़ाज़ी के हाथों फ़रियाद है।

(5) मैंने एक रात तेरे ख़्याल को देखा और मैं उससे मदहोश और हैरान हूँ। मुबारक होगा वो दिन जब किसी दोस्त से दोस्ती करेगा।

(6) बलखाती हुई घास उसकी ज़ुल्फ़ की बराबरी नहीं कर सकती और सूरज उसके चेहरे का साथ कब तक दे सकता है।

(7) शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर! हक़ीक़त का राज़ कोई खोल नहीं सकता। क्या बू-अली सीना की अक़्ल हो चाहे फख़रुद्दीन राज़ी का इल्म हो।

नसीहत न. 87

(1) जैसा चेहरा उस महबूब का है वैसा किसी हूर और फ़रिश्ते का नहीं। इंसानों और जिन्नों में उस जैसा कोई होशियार नहीं।

(2) तू आदम की हक़ीक़त था अगर इब्लीस तुझे हक़ीक़त में देख लेता तो पहले दिन से क़यामत तक सज्दे में रहता।

(3) इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अगर तेरी सूरत देख लेता

तो वो हक़ीक़त तुझसे पा लेता और अपने बुत बनाने वाले बाप की तारीफ़ करता।

(4) अगर तेरे जमाल का अक्स आदम और हव्वा की ख़ाक पर पड़ जाता तो उस ख़ाक के हर ज़र्रे से हज़ारों रूहानी जिस्म पैदा होते।

(5) शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर! तेरे मुखड़े के इश्क़ में पाक आलम से कलाम लाया है। न तो ये निज़ामी की नज़्म की तरह है और न ख़ाक़ानी के शे'र जैसा है।

नसीहत न. 88

(1) सौ जानें तेरे ग़म में हार दूँ। फिर भी इंसाफ़ का तक़ाज़ा न करूँ। बदन में जान क्या चीज़ है तू ही दूसरी जान है।

(2) उसके जमाल का नूर बेशक दिखाई नहीं देता कभी तो वो ख़ुदाई दुनिया है और कभी आज़र के बनाए हुए बुतों में दिखाई देता है।

(3) जब मैं तेरा जमाल देखता हूँ तो मैं ख़ुदाई का वह्म कब करता हूँ। मैं मोमिन हूँ या क़ाफ़िर हूँ। बा-ख़ुदा तू इससे भी बढ़कर है।

(4) अर्श तेरा महल है रुहुल-अमीन जिब्रईल तेरा दरबान है। दुनिया तेरा हुक्म बजा लाती है। तू सारी

दुनिया का सरदार है।

5 तेरे इस हसीन चेहरे की वजह से शरफ़ुद्दीन बू-अली क़लन्दर की तरह फ़रिश्ते, जिन्न, परी सभी तुझसे मोहब्बत करते हैं।

फ़रमान

1. मरहबा ऐ पुराने बाग़ की बुलबुल, ख़ुशनुमा फूल की बात हमसे कह!
2. मरहबा ऐ हमारे उड़ने वाले क़ासिद, हमें तू हरदम हमारे यार की ख़बर देता है!
3. मरहबा ऐ मुबारक निशानी हुद-हुद, मरहबा ऐ मीठी बात करने वाली तूती!
4. एक लम्हे में तू सात आसमानों को पार करती है, हिर्स और लालच की सवारी को ख़त्म करती है।
5. दिल में हरदम तू चिराग़ रौशन करती है, हर लम्हा इश्क़ से सीने को दाग़-दाग़ करती है।
6. तुझसे मेरे तन का फ़ानूस रौशन हो गया तुझसे मुझे महबूब से मिलन नसीब हो गया।
7. मरहबा ऐ दिन के रास्ते को दिखाने वाले तुझसे मेरे यक़ीन की आँख रौशन हो गई।
8. जिस्म को तुझसे बात बनावट मिली आदम ख़ाक का बना हुआ तेरी वजह से परेशान हुआ।
9. मरहबा एक कायनात को फ़ैज़ पहुँचाने वाले तेरे वजूद से ज़िंदगी ने तरग़ीब पायी यानी ज़िंदगी के बिखरे हुए हिस्से जमा हो गए।
10. तू ख़ुदा की ज़ात के समुन्दर में ग़र्क़ थी मेरी ये

अंधेरी ख़ाक तुझसे रौशन हो गई।

11. ऐ के बिना मकान की चहारदीवारी में थी तू ख़ुदा कैसे हुई ये छुपा हुआ राज बता दे।

12. तू किब्रिया की चहारदीवारी में पाक थी तुझसे लालच और हिर्स कैसे पैदा हुई।

13. ना होने के पर्दे से तू शान से टहलती आई तूने ज़िंदगी के मैदान में अपना क़दम बहुत अच्छी तरह रखा।

14. कभी तू दोज़ख़ में जाती है और वहाँ अपना मक़ाम बनाती है और एक अच्छी चाल वाली कभी तू जन्नत पर जाती है।

15. कभी तू फ़ना के मकान में जलवा दिखाती है कभी तू बक़ा के मुल्क में जाती है

16. ऐ मेरी जान! अपने राज़ मुझसे कह दिल की आँख अपने दीदार से रोशन कर।

17. ख़ुदा ने तुझे नज़र ना आने वाली जीन्स में पैदा किया तुझसे दुनिया में एक शोर मच गया।

18. इस लानत नफ़्स के सर पर ख़ाक डाल दिल की आँख यतीम के नूर से रौशन कर।

19. आईने की तरह महबूब का अक्स दिखा ताकि महबूब के चेहरे का जलवा नज़र आए।

20. दिल के आईने को गर्दो-ग़ुबार से साफ़ रख इस

इस बेक़रार दिल में इश्क़ की आग भड़का।

21. ऐ हिदायत के रास्ते की रहनुमा रास्ता दिखा क्योंकि तू हक़ीक़त का रास्ता दिखाने वाला है।

22. अगर तूने हक़ की राह चाहने वालों का हाथ ना पकड़ा, चाहने वाले जो है वह हरगिज़ पीर का हाथ ना पकड़ पाएंगे।

23. तुझसे मेरे ईमान का सितारा रौशन हुआ मेरी जान के चेहरे से पर्दा हटा दे।

24. ख़ुश-आवाज़ बुलबुल के ज़रिए कलाम शुरू किया उसने कहा सुन ताकि मैं राज़ों को बयान करूँ।

25. मैं वह्दत के बाग़ में बे-निशान थी जब मैं ज़्यादा होने में आयी तो ज़ाहिर हो गयी।

26. तुझे कुछ मालूम है पर्दे के पीछे कौन है? नग़मा-चंग-रबाब ये सब साज़ क्या है?

27. खुदा ने अपने हुस्न को देखने को देख लेने वाली आँख से देखा, वजूद के मुल्क में उसने ख़ुद अपना जलवा दिखाया।

28. मेरे रब के हुक्म ने हमारा नाम रूम रखा साक़ी वह्दत ने हमारा जाम भर दिया।

29. मैं उसके साथ हमेशा इश्क़बाजी करती हूँ आदम ने इश्क़ के तुफ़ैल में ही अपना मक़सद पाया।

31. कमाल का सूरज हर ज़र्रे पर चमका, उसके जमाल से जलाल पैदा हुआ।
32. जो ख़ुदा के क़हर से ज़ाहिर हुआ उसने शैतान की तरह बेहतरी का मुँह न देखा।
33. पहले दिन जो लिखा जा चुका उसके बाद लिखा हुआ हर्फ़ नहीं मिटेगा।
34. ऐ फ़क़ीर आदमी! कोशिश और परहेज़गारी क्या है? सुलतान व अमीर से कोई लालच न रखना है।
35. तू रोटी के लिए दर-बदर न फिरे, दौलत के लिए अपनी आबरू न गवाएँ।
36. दौलतमन्दों की सोहबत तर्क कर दे, गोशा अपना ले ताकि तू ख़लल में न पड़े।
37. बादशाह के दरवाज़े पर न जा उसका मुँह ना देख अगर वो तुझे क़ारून का ख़ज़ाना भी दे उसकी तरफ़ मत देख।
38. अगर फ़ाक़े की वजह से जान, जिस्म के पिंजरे से निकल जाए मक्खी की तरह अपना हाथ किसी की रोटी पर न मार।
39. कड़वाहट बेहतर है गुलाब का मीठा शरबत न चख, कमीनों के सामने रोटी के लिए ख़्वार न हो।
40. थोड़ी चीज़ पर रज़ामन्दी के दस्तरख़्वान पर हाय मार तन्हाई के गोशे से क़दम बाहर ना निकाल।

41. बादशाह के तख़्त को ठोकर मार दे सर दे दे मगर अपनी आबरू हाथ से न दे।

42. अगर नक़द ख़ज़ाना तेरी हाथ आ जाए और तूने बुलन्द हौसला न रखा हो तो इस ख़ज़ाने का क्या फ़ायदा।

43. दुनिया की मोहब्बत से परहेज़ कर परहेज़, रोटी और दौलत के लिए जिगर का ख़ून मत पी।

44. कंजूस लोग बेहतरी कभी नहीं देखते क्योंकि इनकी हिम्मत की जेब ख़ाली होती है।

45. वो चाँदी सोने के लिए अपनी आबरू गँवाते है। कंजूसों को गधे और बैल की तरह समझ।

46. कम हिम्मत आदमी लोगों की नज़र में हक़ीर होता है। चाहे वो सौ ख़ूबियाँ रखता हो फिर भी ख़्वार होता है।

47. जो कोई आला हिम्मत और सख़ी होता है, ख़ुदा उसके गुनाहों को माफ़ कर देता है।

48. लोग उसकी दिलबरी की वजह से उसके मतीअ हो जाते हैं वो हलक़ादार आसमान में सर बुलन्द होता है।

49. ऐ फ़क़ीर आदमी! कोशिश और हदों में न रहना क्या है, सुल्तान और अमीर से तमा न रखना।

50. ये कोशिश और परहेज़गारी नहीं है के लोगों के

लिए तू सूफ़ी बने और पुरानी गुदड़ी पहने।

51. कंघा, मिस्वाक और दिखावे की तस्बीह जुब्बा, पगड़ी पहने और दिल खोट से भरा हो।

52. नालायक़ मुरीद आगे-पीछे फिरता है, जिस तरह बेवक़ूफ़ गधा ख़ुराक़ और चारे के लिए फिरता है।

53. जब तू कुछ लोगों को बेहूदा फिरने वाला देखता है। अपने आपको कहता है मैं मर्दों की ख़ासियत रखने वाला मर्द हूँ।

54. तू मर्द और औरत के लिए जाल बिछाता है, अपने आपको ज़माने का शैख़ कहता है।

55. तू वाज़ तो कहता है लेकिन उस पर ख़ुद अमल नहीं करता मक्कार और शैतान की तरह तू आँखें छुपाता है।

56. मकर-फ़रेब और रियाकारी तेरा काम है, हरदम शैतान तेरा साथी है।

57. जब तू नमाज़ में खड़ा होता है तो ऐ बहानेबाज़! तेरा दिल तेरे माल की तरफ़ होता है।

58. तेरी वो नमाज़ आख़िर तबाह हो जाती है बुरी सोच तेरा मुँह काला कर देती है।

59. जब तेरे ईमान में आख़िर कमी हो ही गयी भला ऐ बे-शऊर तू नमाज़ क्यों पढ़ता है।

60. जब तू क़िब्ला रुख़ होकर मुसल्ले पर बैठता है तू

आँख बन्द कर लेता है लेकिन तेरा दिल किसी दूसरी जगह गिरवी होता है।

61. ख़ादिम कहते हैं ये ज़माने का शैख़ है, इसने दुनिया और दुनिया वालों से आँख बन्द कर रखी है।

62. शैख़ की मंज़िल ऊँचा रूहानी आलम है, इसकी ज़ात फ़ना हो गई और इसे बक़ा हासिल हो गई।

63. तारीफ़ से अपने आपको गुम न कर, अपनी कमी देख लोगों की कमी न देख।

64. ऐ नफ़्स की क़ैद में आने वाले, इस काफ़िर नफ़्स को क़त्ल कर और पिंजरा तोड़ दे।

65. ताकि तू अपने अस्ल की तरफ़ उड़ान भरे और अपने अस्ल के आशियाने में जगह पाए।

66. ये कुछ ख़ुशामद करने वाले बेवक़ूफ़ राहज़न हैं, राहज़न हैं, राहज़न।

67. तू कब तक अपने मकान से अलग रहेगा, ऐ बे-हया तू कब तक दर-बदर फिरता रहेगा।

68. ऐ फ़रेबी! तू ख़ुद ही इंसाफ़ कर। तेरा दिल तो मकर से भरा है लेकिन तेरी बग़ल क़ुरआन है।

69. शैतान हरदम तेरा हमराज़ है, तू हक़ के रास्ते में साबित क़दम कब हो सकता है।

70. दुनिया की मोहब्बत तेरे लिए जनेऊ का धागा है तेरी दाढ़ी और पगड़ी तेरे रास्ते की रुकावट है।

71. दिल हिर्स और लालच से पाक न हो सका, तेरे हुज़ूर क़ल्ब के साथ नमाज़ नहीं पढ़ी।

72. तूने कभी नियाज़मन्दी के साथ सज्दा नहीं किया ताकि रहमत के दरवाज़े तुझ पर खुल जाएँ।

73. तूने आजिज़ी से ज़मीन पर कभी सज्दा नहीं किया। तू अंधा है और तेरी यक़ीन की आँख की रौशनी न मिल सकी।

74. तू रियाकारी से इबादत करता है, तूने ख़ुदा के लिए कभी सज्दा नहीं किया।

75. ताकि लोग जाने तू वली मर्द है। तक़वे वाला, परहेज़गार और पारसा है।

76. तू कहता है मैं सूफ़ी हूँ लेकिन तेरा सीना साफ़ नहीं है। ऐ शेख़! अपनी करामतों की ढींगें न मार।

77. काफ़िर मज़हब नफ़्स तेरी ताक में है। ऐ लानती तू शोहरत के लिए बैठता है।

78. तू दुआ के लिए हाथ फैलाता है। रियाकारी से की गई इबादतों का बदला चाहता है।

79. मकर से दुनिया को ग़ुलाम बनाता है। तू लोगों को ये तसल्ली देता है के मैं कल तुम्हारी शफ़ाअत करूँगा।

80. अपने आपको शेख़ बताता है और तेरे हाथ में तस्बीह हैं। लेकिन ऐ बुत परस्त! तू सौ छुपे हुए

बुत रखता है।

81. तेरा एक दिल है और इसमें हज़ारों आरज़ुएँ हैं, दिल का चाक सौ जगह से तेरे हाथ से सिला है।

82. ऐ वो शख़्स! के तेरा चेहरा बुग्ज़ और तकब्बुर से जुड़ा है वो निफ़ाक़ और हसद से सज्दा हुआ है। ऐ जहलात से जुड़े बुरे और नापाक शख़्स।

जारी...

1. तू अपने आपको बा-यज़ीद जैसा अज़ीम सूफ़ी क़रार देता है, तू तकब्बुर से हर तरफ़ देखता है।

2. अपने बारे में कहता है कि मैं बाख़बर हूँ। तू बुत पूजता भी है, बनाता भी है।

3. तेरे दिल आज़र के तराशे हुए बुतों के लिए भी धड़कते हैं, तू बुत तोड़ डाल और बुतख़ाने को तहस-नहस कर दे।

4. हज़रत इब्राहीम की तरह ख़ुदा के ख़ाने को तामीर कर तू अपने हसब-नसब का ग़ुरूर कब तक करता रहेगा।

5. ऐ बे-अदब तकब्बुर से दूर रह। तू बूढ़ा हो गया है लेकिन दिल में हज़ारों चाहतें रखता है।

6. तू नादान है, गधे की तरह कीचड़ में धंस जाएगा, तेरी आरज़ुएँ कभी ख़त्म नहीं हुईं।

7. तेरी हिर्स और लालच का क़द नहीं झुका जब दिल हिर्स अैर लालच से भरा हो तो ख़ुदा के राज़ कैसे ज़ाहिर हो सकते है।

8. ऐ बेहूदा शख़्स तेरे दिल में सौ आरज़ुएँ हैं, तेरे दिल में ख़ुदा का नूर क्योंकर आ सकता है।

9. दीन और दुनिया दोनों कब हाथ आते हैं। ऐ ख़ुदा-परस्त ये फ़िज़ूल हरकतें मत कर।

10. ऐ बेख़बर तुझे तेरा हिस्सा मिल जाता है, फिर तू ख़ुश्क और गीले पर सब्र क्यों नहीं करता।

11. तेरी हिर्स ने सब्र की गुदड़ी चाक कर डाली, नफ़्से-अम्मारा ने तुझे आवारा दर-बदर कर दिया।

12. दुनिया एक बुढ़िया और फ़रेब से भरी है। बूढ़े और जान लोगों को बेक़रार कर देती है।

13. हक़ीक़त जान लेने वालों ने इस दुनिया को सौ बार तलाक़ दी। जो इस दुनिया का बना वो ख़ुदा का नाफ़रमान बन गया।

जारी...

1. ऐ जवान! ये बात कान में डाल ले, मौलाना रूम ने ये बात तर्जुबा करके कही है।

3. तू ख़ुदा को भी चाहता है और कमीनी दुनिया को भी ये सिर्फ़ ख़्याल है मुश्किल है और

पागलपन है।

4. वो मुस्तफ़ा के वसीयत वाले हुए और अल्लाह के शेर व अली के हज़रत फ़ातिमा जैसी पारसा बीवी के शौहर हुए।

5. उन्होंने दुनिया की बुढ़िया को ऐसी ठोकर मारी ताकि वो औलिया के निकाह में ना आए।

6. उस बे-अदब औलाद यज़ीद ने दुनिया के लिए अपने दीन को बर्बाद कर दिया।

7. दुनिया की बुढ़िया जब निकाह में आई उसने सय्यद के ख़ून को अपने ऊपर जायज़ कर लिया।

8. इस बूढ़ी दुनिया ने जब किसी की मदद की दोनों जहानों में उसे बर्बाद कर दिया।

9. जब तू यज़ीद के दस्तरख़्वान का बचा हुआ खाता है तो यज़ीद की रोटी से अपना मुँह कड़वा करता है।

10. अगर नक़लीपन के चेहरे से पर्दा हट जाए तो इस मक्कार दुनिया से तू नफ़रत करेगा।

11. जब इसकी बदसूरती तुझे नज़र आएगी, ऐ बेख़बर तू ख़ुदा से पनाह चाहेगा।

12. आग दूर से बाग़ की तरह नज़र आती है, हक़ीक़त में वो बिल्कुल झाड़ लगती है।

13. माल और असबाब तुझे मग़रूर बनाते हैं, अगर

तेरे पास माल और अस्बाब नहीं है तो अपनी मुफ़लिसी पर गिरया जारी कर।

14. दौलतमन्दों के दिलों में रहम नहीं होता। दौलतमन्दों का तरीक़ा मकर और फ़रेब होता है।

15. तूने वो सुना के इज़्ज़त और मर्तबे के लिए हज़रत यूसुफ़ अलैहि० को बिना ख़ता की कुएँ में डाला गया।

16. हसद की वजह से भाईयों के बेरहमी देख, कनआन के रहने वाले यूसुफ़ की हालत के ज़ार देख।

17. अगर तेरे सर पर सोने का ताज होगा, तो तकब्बुर की वजह से तुझे नज़र नहीं आएगा।

18. बल्कि तू नमरूद की तरह अपने ख़ुदा से मुँह फेर लेगा। तू अपने आपको गुम कर देगा और तुझे बदले के दिन का ख़ौफ़ न होगा।

19. माल और ज़र से हिर्स बढ़ती है, बेटे और बाप की मोहब्बत भी ख़त्म हो जाती है।

20. बादशाहों को देख कि वो माल के लिए भाईयों और बाप का ख़ून हलाल जानते हैं।

21. तूने किसी बे-सरो-सामान के फ़क़ीर को देखा है जिसने फ़िरऔन की तरह ख़ुदा से मुँह मोड़ा हो।

22. दौलत तकब्बुर पैदा करती है, इंसान को बे-दीन

बनाती है। काफ़िर नफ़्स को कुफ़्र का सबब सिखाती है।

23. ख़ुदा के दोस्त इससे बेज़ार हैं, क्या तू जानता है कि इसमें हिकमत क्या है?

24. दुनिया की मोहब्बत जब दिल पर नज़र डालती है दिल पत्थर की तरह सख़्त और काला हो जाता है।

25. यक़ीन की रौशन आँख अंधी हो जाती है इसके बाद दीन के दरवाज़े बन्द हो जाते हैं।

26. इबादत के लिए लुक़मा हलाल ज़रूरी है ताकि तेरा रंज और मलाल न बढ़े।

27. जब शक वाला लुक़मा पेट में जाता है उसकी क़ुव्वत असल मक़सद को कम कर देती है।

28. ऐ नादान! जब तू हिर्स का लुक़मा चाहता है तो नफ़्स हिर्स का मुँह खोलता है।

29. अगर ये बहाने बाज़ नफ़्स तुझ पर क़ाबू पा लेता है तो ज़ुल्म के लिए हाथ उठ जाता है।

30. जब वो मलऊन नफ़्स शह्वत की आँख खोलता है तो यक़ीन वालों की आँख अंधी हो जाती है।

31. ये तुझको नमरूद की तरह रुस्वा करता है, हिर्स और लालच पैदा करता है।

32. फिर इल्म और अक़्ल तेरे काम न आएगा, खोटेपन की वजह से तेरे ईमान में ख़लल पड़ेगा।

33. जब तक ये काफ़िर नफ़्स तेरे साथ रहेगा तो दोज़ख़ की आग तेरा ठिकाना बनेगी।

34. अगर तू मर्द है तो काफ़िर नफ़्स को मार डाल। अगर ये ताक़त नहीं रखता तो ख़ामोश बैठ।

35. अगर तू दुनिया वालों की सी भी हिम्मत नहीं रखता तो औरतों की तरह पर्दे के पीछे बैठ।

36. अगर तुझसे मर्द का काम नहीं बन पड़ता तो फिर हिजड़ों की तरह मर्दों के पीछे मत फिर।

37. ऐ किन्नर! न तू मर्द है और न औरत है, तू शैतान की तरह मर्दों का रास्ता ख़राब न कर।

38. मर्द को चाहिए के वो नफ़्से-अम्मारा को क़ाबू में कर ले और हिर्स और लालच की शह्वत को छोड़ दे।

39. मर्द को चाहिए कि के हिम्मत के हाथ को बुलन्द करके नफ़्स को शिकार की तरह कमन्द में लाए।

40. हाथ को हवस से खींच ले। इस पिंजरे को हिम्मत के पंजे से तोड़ दे।

41. अगर तू हलाल के पैसे का एक लुक़मा भी खाएगा तो कमाल के आफ़ताब का नूर तेरे दिल पर चमकेगा।

42. अगर तू शक वाले लुक़मे से नफ़रत करेगा तो तू अपने नफ़्से अम्मारा को ख़ुदा के फ़ज़्ल से क़ैदी

बनाएगा।

43. दिल नूर के आईने की तरह रोशन हो जाएगा। महबूब का अक्स दिल के आईने में नज़र आएगा।

44. ऐ यक़ीन के मालिक! जब तू आँख खोलेगा तो तू हर तरफ़ यार का जमाल देखेगा।

45. तू हर आईने में यार का जमाल देखेगा, हर आवाज़ में उसी का दर्द और साज़ देखेगा।

46. ख़ैर और शर में से जो कुछ तुझे नज़र आता है, ऐ बेख़बर! वो सबकुछ ज़ाते-हक़ है।

47. ज़मीन और आसमान और ला-मकाँ में वो ही है वो ही हर ज़र्रे में ज़ाहिर और छुपा हुआ है।

48. ऐ अक़्लमन्द! अपनी साँसों का ख़्याल रख ताकि ये क़ाफ़िला तुझे मंज़िल पर ले जाए।

49. वो ही है ज़ाहिर, छुपा हुआ और फिर ज़ाहिर हर-हर चीज़ में महबूब अपना जलवा दिखा रहा है।

50. ऐ मर्दे ख़ुदा! हरदम होश का यार बनके रह ताकि तेरे दिल में ख़ुदा के सिवा कोई न समाए।

51. अल्लाह के सिवा को अपने दिल से निकाल दे, एक लम्हे के लिए भी ख़ुदा से जुदा न हो।

52. दिल के ज़ंग को "ला" की चमक से पाक कर अपने सीने को मोहब्बत की तलवार से चाक कर।

53. जब उसके नाम ने दिल पर अपना नक़्श बना

लिया मोहब्बत की टकसाल का सिक्का ख़ूब ढला।

54. जब दिल के नक़्श पर ख़ुदा का नक़्श बैठा तो ऐ दिल अल्लाह के नक़्श के अलावा किसी और नक़्श की ख़्वाहिश न कर।

55. जब तू ख़ुदा के ज़िक्र में फ़ना हो जाए तो तू ख़ुदा की बारगाह में राह पाएगा।

56. जब तू ख़ुदा के साथ रहेगा तो तुझे मिलन नसीब होगा इसलिए ऐ साहबे-कमाल अपने आपको गुम कर दे।

57. जो कोई मारेफ़त-पहचान के समुन्दर का तैराक हो वो क़तरे के ज़र्रे-ज़र्रे को ख़ुदा ही की तरफ़ से जानता है।

58. जब दरिया का पानी दूसरी मौज मारता है, हक़ीक़त में वो पानी ही जलवागर होता है।

59. तेरा नफ़्स पानी है और तेरा जिस्म बुलबुले की तरह है जब तू पानी हो जाएगा तो तेरा जिस्म बाक़ी नही रहेगा।

60. जिस तरह अलिफ़, लाम में छुप जाता है तू अपने आपको गुम कर दे कि हक़ ज़ाहिर हो जाए।

61. जब नदी का पानी दरिया में पहुँचा, फिर नदी के पानी को बीच में तलाश न कर।

62. जब तक तू है यार तेरा यार कब होगा, जब तू

नहीं होगा तो यार तेर यार होगा।

63. मौलाना रूम ने अपनी मस्नवी में ये बयान फ़रमाया तुझ पर ये छुपे हुए राज़ ज़ाहिर हो जाएंगे।

64. तू अपने आप को मिटा दे, अस्ल में कमाल यही है बस तू उसके अन्दर गुम हेा जा, मिलन ये है और बस।

65. अगर तू होशियार है तो मुझसे सुन, मैं तुझे ये बात बताता हूँ तू ग़ौर से सुन।

66. जिसने मुझ आशिक़ से ये बात सुनी, वो बेशक महबूब की महफ़िल में जा बैठा।

67. जो शख़्स अपने आप से तंग आ गया, बेशक वो अल्लाह के राज़ों को जानने वाला हुआ।

68. जिसने उसके कूचे में अपना सर दिया तो महबूब उसकी तरफ़ सौ बार देखता है।

69. अगर महबूब मेरी तरफ़ एक बार देखे एक जान की क्या हक़ीक़त उस पर सौ जानें निसार।

70. हम दीवाने आशिक़ और सरफिरे हैं। यार को तलाश करते हुए हम दर-बदर फिर रहे हैं।

71. मैं जब उस महबूब की एक महक सूँघू तो मैं उसके कूचे में मस्त-मस्त हो जाऊँगा।

72. बाल छड़ घास उसके गेसू से ताबदार हुआ फूल

उसके रुख़्सार से दाग़-दाग़ हुआ।

73. ज़बान जैसी पंखड़ी वाले नीले फूल ने उसकी तारीफ़ में सौ-सौ ज़बाने बाहर निकाली, ग़ुन्चे ने शौक़ के मारे अपना लिबास फाड़ दिया।

74. नरगिस बीमार ने नए सिरे से आँख खोली उसने सुनहरा जाम, चाँदी जैसी हथेली पर रखा।

75. सख का दरख़्त उसके ज़ेबा क़द से सर से पाँव तक सरसब्ज़ और शादाब हुआ।

76. बुलबुल और फ़ाख़्ता बाग़ में नौहे पढ़ रही हैं, हर एक की बोली और इक़रार का तरीक़ा अलग है।

77. इससे हर तरफ़ ऐ शोर और हलचल है, उनकी ज़बान पर उसी का ज़िक्र जारी है।

78. मैंने साज़ और रबाब का एक नग़मा सुना, उसके दर्द से सीना भुन गया, दिल कबाब हो गया।

79. गाने वाले ने शौक़ की वजह से जब गाने के लिए साज़ छेड़ा उसने इस नग़मे को दर्द से गाना शुरू किया।

80. यार को तू हर आईने में देखता रह, उसका दर्द और साज़ हर आवाज़ में है।

81. जो कुछ तुझे नज़र आता है हक़ीक़त में सब वो ही है। शमा, फुल परवाने सब उसी से है।

82. कुछ और सब में से जो चीज़ भी नज़र आती है

मसलन रेगिस्तान में चमन, बाग़ मे बुलबुल और फूल।

83. आरिफ़ों के क्या ख़ूबसूरत, क्या बद्सूरत नक़्श सब बराबर है। हर नेक और बद् की सूरत, ख़ुद उसकी लिखी हुई है।

84. मुर्ग़ और मछली साँप और च्यूँटी शेर और बब्बर आबे-हयात का चश्मा, बारिश, बिजली और अब्र।

85. सख़्त पत्थर, लाल याक़ूत और मोती अंधेरी रात का अंधेरा, चाँद और सूरज की रौशनी।

86. पानी, आग, हवा और मिट्टी का जो कुछ है उसने सब अपनी कारीगरी से बनाया है।

87. जान का गौहर और उसके निकलने की जगह है जान की खान उसके राज़ों का ख़ज़ाना है।

88. ऐसी क़ुदरत वाला कि जिसने पानी की बूँद पर सीप के अन्दर चमकदार मोती का नक़्श बनाया।

89. यार तो तेरे अन्दर है, फिर तू बेख़बर क्यों है, यार तो तेरे अन्दर है, तू किसलिए दर-बदर फिरता है।

90. ऐ बद्नामी और नाम की क़ैद में गिरफ़्तार नामों के शीशे को पत्थर से तोड़ डाल।

91. वो तुझमें ज़ाहिर है और तू अपने आपसे बेख़बर है। अचानक मौत आएगी और तुझे कहेगी उठ।

92. तू अचानक उठेगा और क़ब्र में जा पड़ेगा, हश्र के दिन क़ब्र से शर्मिंदा उठेगा।

93. एक बार तेरी क़ब्र से आवाज़ आएगी हाय अफ़सोस! हाय अफ़सोस! हाय अफ़सोस!

94. अफ़सोस के तू अंधे की तरह जाए, अंधे और बहरे की तरह उठे और बद्नाम हो जाए।

95. ऐ ख़लीफ़ा, हज़रत आदम के नालायक़ बेटे, तू कब तक बेगाना रहेगा, होश में आ जा।

96. ऐ हवस करने वाले! अपनी हालत पर रहम कर। हर दम तौबा कर और अपने बनाने वाले की तरफ़ लौट आ।

97. तू ख़ुदा से हरदम झूठ बोलता है, झूठ से तू क्या तरक़्क़ी पाएगा।

98. तू हर वक़्त कहता है मैं तौबा करता हूँ ग़ैरों की जड़ अपने दिल से उखाड़ता हूँ।

99. जब कल का दिन आए तो नए सिरे से काम शुरू करूँगा और दिल को उसके इश्क़ के काँटे से ज़ख़्मी करूँगा।

100. दिल के चेहरे को एक बार फिर तौबा के पानी से धोऊँगा, फिर दिल के ख़ून से वुज़ू करके नमाज़

पढ़ूँगा।

101. अपने नफ़्स को सज़ा दूँगा, अपनी ख़्वाहिश और ख़ुदी से ख़ुद को आज़ाद कराऊँगा। इन सारी बातों के बावजूद जब रात आती है तो सारे अहद और वादे तोड़ देता है।

102. दिल इस बात की खोज लगाने में होता है अब जो कुछ कम या ज़्यादा है उससे गुज़र जा।

103. दिल से अपने झूठ, मकर को धो डाल, चाँद जैसे चेहरे वाले साक़ी और ख़ालिस सुर्ख़ शराब।

104. गाने वाला और महबूब और रबाब का आलाप सूरज जैसे चेहरे वाला तेज़ रफ़्तार और तेज़।

105. दिन ग़ारत करने वाला नाज़ नख़रे वाला महबूब अगर तेरे हाथ में आ जाए तो तू उसको अपने आग़ोश में ले लेता है।

106. हर कड़वे और मीठे शरबत को तू चखता है, अगर ऐशो-इशरत का सामान मयस्सर आ जाए।

107. तो तू रात का सारा वक़्त बे-फ़िक्री में गुज़ार देता है। ऐ फ़क़ीर! अगर ये सबकुछ तुझे मयस्सर न हो।

108. तो सुबह तक इस ग़म में डूबा रहता है, अगर तुझे ये चीज़ें हासिल नहीं होतीं तो दिल का ख़ून पीता है।

109. ये बात दुरुस्त है के बीबी की पाकदामनी चादर की वजह से है। ऐ वादा तोड़ने वाले! तेरे अन्दर शर्म सिरे से ही नहीं।

110. इसलिए तू फिर अपनी मुराद चाहने लग जाता है। तू उम्र भर अपने कच्चे मिज़ाज की वजह से सर टकराता है।

111. सच पूछिये तो तू लानती शैतान से भी कमतर है। तेरी बुरी शख़्सियत नफ़्स के कुत्ते की तरह पलीद है।

112. उसने तेरे ईमान के हाथ को काट लिया है, तू हमेशा शह्वत और खाने-पीने में लगा रहता है।

113. इबादत के मामले में तू काहिल और अधूरा है ऐ बेहूदा फिरने वाले! तू गधे की तरह नादान है।

114. जो कुछ तूने किया वो तो कभी शैतान ने भी नहीं किया। शैतान ने तुझसे मकर और फ़रेब सीखा।

115. लड़के और देव तुझसे खेल सीखते है, शैतान भी तुझसे धोखा खा जाता है।

116. हर दम मकर और फ़रेब की सौ घड़ियाँ बाँध ले जाता है जब तक नाफ़रमान नफ़्स तेरे साथ रहेगा।

117. तेरी तक़दीर में हराम-मुरदार लिखा है ऐ आदम की औलाद! इसीलिए तू कुत्ते जैसी आदत रखता है।

118. ऐ मुरदार खाने वाले कुत्ते, तू एक लुक़मे के लिए तू जंगल-जंगल, गली-गली दौड़ता फिरता है।

119. तू रोटी पानी के लिए ज़लील और ख़्वार फिर रहा है। तू कुत्ते के पीछे कब तक दौड़ता रहेगा।

120. तेरे साथी चले गए और तू अकेला रह गया तू एक लंगड़े-लूले की तरह बेबस हो गया है।

121. तू यहाँ से चलने की फ़िक्र कर क्योंकि चीता आ रहा है अपने लंगड़ेपन से तंग आकर तू कब तक बैठा रहेगा।

122. जब मौत का चीता तेरे पीछे लगा है, तो ऐ बेहया तुझे नींद कैसे आती है।

123. ठहर जा कि तुझे नाबूद करने के लिए मगरमच्छ आ रहा है और तू क़यामत तक तंग क़ब्र में सोता रहेगा।

124. जब तक तुझे फ़ुर्सत है कोई काम कर ले अरबी घोड़े पर ज़ीन कस ले और खेलना शुरू कर।

125. चल ताकि तू हमेशा रहने वाले मुल्क का सुल्तान बन जाए उस महबूब को दिखने वाला और देखा जाने वाला बन जाए।

126. आशिक़ों के सर पर बादशाही ताज होता है और उसके लिए साक़ी हरदम भरा प्याला लिए खड़ा होता है।

127. जो शख़्स अपने नफ़्स के मकर से रिहाई पा गया वो आख़िर अपने मक़सद की कुर्सी पर जा बैठा।

128. ऐ शरफ़ुद्दीन! तूने नहीं सुना के सालिक ने क्या कहा वो रोया और उसने बड़े दर्द से तड़पकर ये बात कही।

129. आँख बन्द कर ले और होंठ बन्द कर ले, अगर फिर भी ख़ुदा का राज़ तुझे नज़र न आए तो हम पर हँस।

130. ऐ दीवाने! कोशिश और ये तक़वा क्या है कि तू शोहरत के लिए ख़ुद को झुका रहा है सर नीचे और पाँव ऊपर कर रहा है।

131. इस रियाज़त से लोगों को अपना शैदा बना रहा है तू मजनूँ की तरह मिज़ाजी इश्क़ रखता है।

132. लैला की तरह ख़ुलूस से चेहरा दिखाता है कभी शीरीं की तरह जिगर को ख़ून करता है। कभी फ़रहाद की तरह तेशा सर पर मारता है।

133. ऐ हक़ीक़त को जानने वाले मजाज़ की मंज़िल से गुज़र जा तू हिर्स और लालच के मक़ाम पर कब तक खड़ा रहेगा। तू कब तक कली-नसरीन और गुलाब के फूल चुनता रहेगा। तू कब तक लाल-हरा और पीला रंग देखता रहेगा। तू अपने आप को कब तक कसरत में देखता रहेगा।

134. एक लम्हे के लिए वह्दत एक होने के घर में आ जा अपने यार से ऐसा आशना हो जाए कि तू अपने काम में अपने आपको गुम कर दे।

135. जब तक तू है यार तेरा यार कब बन सकता है। जब तू नहीं रहेगा तो यार तेरा यार बन जाएगा। ऐ ख़ुदा अपने इश्क़ से दिल को ज़ख़्मी रख ज़िन्दा को अपने इश्क़ से मुरदा रख।

136. अपना ऐसा आशना बना कि मैं एकदम भी तुझसे जुदा न होऊँ मुझे अपनी तरफ़ ले चल क्योंकि मैं रास्ता भूल गया हूँ मेरे मुर्दा जिस्म के हमेशा ज़िन्दा रहने वाला कर दे।

137. इस मुरझाये हुए दिल को ज़िन्दा कर दे। मुर्दा को इश्क़ से ज़िन्दा कर दे। जिस दिल ने इश्क़ से जान पाई। उसने हमेशा के लिए जारी रूह पाई जिसके दिल पर इश्क़ का नूर चमका। उसने अपने आपको महबूब की वजह से ज़िन्दा पाया।

138. क्या बात है इस दिल को जिस पर इश्क़ ने नक़्श बाँधा और इस मुआवज़ा देकर इसको सजाया। वही दिल दिल है जो इश्क़ के दर्द से दिलबर तक पहुँचे। जान वो ही जान है जो महबूब के पास पहुँच कर इश्क़ की आवाज़ लगाए, महबूब अपनी दिलबरी से तुझे इश्क़ देगा।

139. इश्क़ कहाँ है ताकि तुझे ज़िन्दगी का लिबास दे इश्क़ कहाँ है कि बिना बाल और पर, परवाज़ करे इश्क़ कहाँ है कि अपने मकान न होने पर भी तेज़ी दिखाए। इश्क़ कहाँ है कि ताजे-सुलतानी पहनाए। इश्क़ कहाँ है कि सुलैमान की सल्तनत दे। इश्क़ कहाँ है कि दिल की आँख को रौशन करे। इश्क़ कहाँ है कि सीने को जुनून से भर दे। इश्क़ कहाँ है कि अक़्ल को ख़त्म करे। इश्क़ कहाँ है कि मदहोशी का जाम दे। इश्क़ की ज़रूरत है कि वो फ़रामोशी अता करे। इलाही मुझे इश्क़ अता कर ताकि वो मुझे बाख़बर कर दे।

140. मुझे बेहूदा-गो और बे-सरोपा बना दे। हमें इश्क़ ज़रूरी है ताकि शराब का जाम दे। इश्क़ शराब के प्याले को सूरज बना देता है। इश्क़ की शराब महबूब के ग़म से तैयार होती है। जिसने वो शराब पी अपने आपसे बेगाना हुआ। इश्क़ कहाँ है कि हमें मस्तों की हालत अता करे। इश्क़ कहाँ है कि हमें महबूब के हाथों से जाम अदा करे।

141. क्या कहने उस शराब के जो ख़ुदी से रिहाई दिलाती है। नेकी और बदी का फ़र्क़ साफ़ कर देती है। तुझे कुछ पता भी है इश्क़ की अस्ल क्या है। इश्क़ को महबूब के हुस्न से ज़िन्दगी मिलती

है। महबूब के हुस्न ने जब अपने आप पर एक नज़र डाली वो अपना शैदा बना और उसने इश्क़ को ज़ाहिर किया।

142. इश्क़ हुस्न की मेराज में ''ला'' जिब्रईल की तरह आशिक़ के सर पर हुस्न के सौ ताज रखता है। आशिक़ और माशूक़ दोनों एक हो जाते हैं। तू ही आशिक़ तू ही माशूक़ इसमें कोई शक नहीं। ऐ के तू इश्क़ के राज़ों से वाक़िफ़ हुआ। इश्क़ के काम में मर्दाना वार क़दम रख। सर उठाकर इश्क़ के नीचे रख। इसके बाद इश्क़ की आरज़ू में मशग़ूल हो जा। इश्क़बाज़ी हवसनाक आदमी का काम नहीं। कमज़ोर इरादे वालों को इसमें मक्खी समझ।

143. अगर तू अपनी जान को महबूब पर निसार करता है, इसके बदले में महबूब तुझे सौ जानें देगा। इश्क़ में मरने वालों को दूसरी जान मिलती है। हर लम्हा ग़ैब की तरफ़ से उन पर नए-नए एहसान होते हैं। ऐ बहादुर! अगर हो सके तो इश्क़ के मैदान में कोशिश कर और आशिक़ की इस बात को कान में डाल। मुबारक हो वो जान जिसने इश्क़ में ख़ुद को हार दिया। अपने आप को जलाकर वो हक़ से जा मिली। उस शख़्स के क्या कहने जिसने इश्क़ का जुआ खेला। उसने

अपने आपको मिटाकर महबूब को पा लिया।

144. ऐ बेख़बर! परवाने की हिम्मत देख, तू परवाने की तरह जल ताकि तुझे हक़ीक़त की ख़बर मिल सके। जब परवाना जलकर दोस्त के हम-रंग हो गया तो वो राज़दार हो गया उसने दोस्त के पंजे पर पंजा मारा, जब तक तू मोहब्बत में बाल पर नहीं जलाएगा।

145. तू आग के जैसा कब बनेगा। परवाने की तरह जिस्म के पिंजरे में जल जा ताकि महबूब की जान का हमदम बन जाये। ऐ बुलन्द मर्तबा तक़वा क्या? अपने मक़सद को हासिल कर लेना। दुनिया में एक लम्हे के लिए भी ख़ुशदिल न बैठ। इसको और उसको छोड़ दे और फ़ारिग़ हो जा।

146. दिल को ग़म के हाथों इस तरह गिरवी रख दे कि दुनिया की ख़ुशी आधे जौ के बराबर भी ख़ुशी न रखती हो। दिल दोनों जहानों से बे-नियाज़ हो। हक़ीक़त के ख़्याल में नक़ल से गुज़र जा। हाय अफ़सोस! तेरी उम्र ग़फ़लत में गुज़र गई। थोड़ी सी रह गई है, इसको जल्द पा ले। तेरी उम्र नहर के पानी की तरह है, गया हुआ पानी नहर में वापस कब आता है।

147. जब तू इस दुनिया में चन्द रोज़ का मेहमान है तो

इस दुनिया को ख़्वाब की तरह जान। तू लोगों को पानी के नक़्श की घड़ियाँ जान। तू एक बार छींकेगा ये टूट जाएगी। तू दुनिया के भँवर में जो कुछ देखता है। ये सब बुलबुले की तरह तेरी आँखों से ओझल जो जाएंगे।

148. तू अपने किए से ग़ाफ़िल है ''ला'' की तलवार से गर्दन को उतार दे। बेहूदा फ़िक्रों से दिल को काला मत कर। ख़ुदा से ख़ुदा के सिवा ग़ैरों की आरज़ू न कर। जिस्म का हर बाल ज़बान की तरह बोलने वाला है। हर बाल से ख़ुदा का ज़िक्र भी कर।

149. बेवफ़ा दिलबरों को दिल मत दे। इसलिए कि ज़ोर और जफ़ा इनकी आदत है। दुनिया से मेहर और वफ़ा नापैद हो गयी। एक-एक आदमी का हाल मालूम हो गया। दुनिया से दोस्ती मिट गई। लोगों की आँख से शर्म जाती रही। हाय अफ़सोस के नेकों का ढंग बदल गया।

150. बुर्द-बारी के मुल्क में गड़बड़ हो गई। सख़ावत के मुल्क में अकाल पड़ गया। मेहरो-वफ़ा की खेती ख़ुश्क हो गई। कंजूस की तलवार ने एहसान के दरख़्त को काट दिया। परिन्दे की तरह हिम्मत दुनिया से उजड़ गई। शाह और गदा दोनों की

हिम्मत चली गई।

151. ईनाम देने वाले लोग ख़ाली हाथ हो गए। दिल वालों की हिम्मत जाती रही। ज़माने के हाथों में सौ-सौ फ़रियाद रखता है। ये क़यामत की निशानियाँ ज़ाहिर हो गई हैं। ताकि दुनिया में क़यामत ज़ाहिर हो जाये। खेती-बाड़ी से बरकत कम हो गई। करम और सख़ावत का क़दम कम हो गया। लोगों के दिलों से रहम ग़ायब हो गया।

152. लोगों में एक सख़्ती आ गयी। नेक लोग दुनिया से कम हो गए। लोगों की तबियत कुत्तों की तरह ख़राब हो गई। बीबी और बेटे के दिल से मोहब्बत घट गई। इस पुराने बुतख़ाने यानी दुनिया में फ़ितना बरपा हो गया। जब ऐसा हुआ तो दुनिया तंग हो गई।

153. बेटियाँ माओं से लड़ रही हैं। हर ख़ासो-आम के दिल में मोहब्बत न रही। बस अपने आप को जाल और फ़न्दे में ना फँसा। जब मेहर और वफ़ा का दाना खो गया तो ख़्वाहिश के परिन्दे की तरह जाल में न जा। बन्द को तोड़ दे और जाल को दरहम-बरहम कर दे।

154. हिर्स के आशियाने में आग लगा दे। ख़ुदा के सिवा कोई तेरा मेहरबान नहीं। ख़ुदावन्दे जहाँ के

सिवा किसी को दिल न दे। नेमत का शुक्र कर कि बन्दों के इस ख़ुदा ने हर वो चीज़ अता की जो अता की जाती थी। तुझे आँख दी, कान, नाक और ज़बान भी दी। तुझ पर छुपे हुए राज़ ज़ाहिर किए।

155. ऐ बेख़बर! तू अपने यार से ग़ाफ़िल है। तू गाय, बैल और गधे की तरह कब ते बेख़बर रहेगा। तू ख़ुदा के लुत्फ़ से आगाह नहीं है कि वो तुझे हरदम आशिक़ की तरह देखता है। मजाज़ी माशूक़ जब मेहरबान हुआ तो वो आशिक़ की तरफ़ नाज़ से देखता है। सच्चा आशिक़ उस पर अपनी जान फ़िदा करता है। आशिक़ों पर शाबासी है सौ शाबासी।

156. जो आशिक़ महबूब के पीछे जाता है वो आँख बन जाता है और महबूब के चेहरे को देखता है। अगर तुझे उसके इश्क़ की ख़बर हो वो तुझसे मुश्ताक़ बल्कि मुश्ताक़-तर है। अगर तेरी मोहब्बत की आँख खुल जाए तो वो महबूब तेरा दीवाना हो जाए। वो जाने जहाँ।

157. ऐ अंधे! अगर तेरी आँख ही भैंगी है तो तुझे महबूब का चेहरा कैसे दिखाई दे सकता है। ऐ मेरे पर्दे में छुपे हुए, ये पर्दा तुझ ही से है। वर्ना

मेरा वो महबूब तो बे-पर्दा है। ऐ नेक आदतों वाले! मरने से पहले मर जा। अपनी जान महबूब पर क़ुरबान कर और अपने हाल से गुज़र जा।

158. अपने जिस्म को जान से ख़ाली कर दे तभी तेरे अन्दर महबूब की जान जलवागर होगी। फिर अपने आपको माशूक़ की आँख से देख। एक ख़ुदा को पहचान लेने वाले ने ग़ुस्से में कहा, ग़ौर से सुन! इस मामले को समझ ले। अगर ख़ुदा से मिल जाने की ख़ुशी तुझे हासिल नहीं तो उठ, ख़ुद पर जुदाई का मातम कर।

159. ऐ शरफ़ुद्दीन! तू कब तक चक्कर लगाता रहेगा। ऐ हाज़िर ना रहने वाले! मंज़िलों को तय कर ले। तू कब तक दूर-दराज़ के रास्ते तय करता रहेगा नीची जगह से कब कब ऊँचाई पर जाता रहेगा। दोस्त की बारगाह बस एक क़दम पर है। ऐ हवस करने वाले! तू कब तक बेख़बरी में घूमता रहेगा महबूब की मंज़िल तेरे एक क़दम पर है।

160. पहचान लेने की शराब तेरे प्याले में भरी है। हर दम उसकी याद में क़दम रख। हरदम उसके इश्क़ का जाम पी। मौलाना रूम ने जो कुछ फ़रमाया, वो तूने सुना नहीं। अगर तू पत्थर होता तो उसमें भी असर हो जाता। ऐ शख़्स! कमान

तीरों से भरी पड़ी है। शिकार तो नज़दीक है तू तीरों को दूर फेंक रहा है।

161. ऐ फ़्लाँ! तू किससे दूर रहा और बिछड़ा हुआ है आह! में तेरे हाथो सौ-सौ फ़रियादें करता हूँ। ऐ शख़्स! तेरी कमान का तीर शिकार से दूर गिर रहा है। दिल की आँख खोल और यार का जमाल देख। हर तरफ़ और हर जानिब महबूब का चेहरा देख ऐसे तो शिकार से तू बिछड़ा ही रहेगा।

162. आँख चाहिए ताकि यार को देखे। महबूब ने हर चीज़ में अपना जलवा दिखाया हुआ है। तेरे दिलदार का चेहरा छिपा हुआ नहीं है। लेकिन बस तेरे देखने की कमी है। ऐ ग़मज़दा! दिल में गर्मी कहाँ है। तू गधे की तरह दलदल में फँसा जाता है। ऐसा दर्दमन्द कहाँ है, जिसे इलाज नसीब न हो।

163. ऐसा परेशान कहाँ है जिसको इत्मिनान न मिला हो। ऐसा मुश्ताक़ कहाँ है जो जाँ-बलब हो। उसकी जुदाई में तड़प रहे हो। जब तक ये तेरा शैतानी नफ़्स तेरे साथ रहेगा। तो तेरे देखने की आँख देखने वाली न बन सकेगी। जब तू कामयाब होने की ताक़त नहीं रखता। तू क़यामत तक अपने ख़राब हाल पर रोता रह।

जारी...

1. एक शख़्स ख़ुदा को पहचान लेने वाला था। उस ने अपने दिल को वहम और बेकार ख़्यालों के लिए बन्द कर रखा था।

वो दिल की विलायत में बादशाही करता था वो अपनी ग़फ़लत में रहे बीते दिनों से शर्मिन्दा था। उसने बरसों बिना किसी को दिखाये हक़ीक़त की इबादत की थी। उसके दिल में ख़ुदा की याद के सिवा कुछ न था। जब उसके कई साल गुज़र गए तो उसने ख़ुदा को कामिलों में गिनना शुरू कर दिया। उसने कहा मेरे जैसा कामिल दुनिया में नहीं है। मैं कोतवाल की तरह अपने दिल पर निगाह रखता हूँ। ख़्वाहिशात-हिर्स और हवस को दूर कर दिया। सब तअल्लुक़ात से मेरा दिल मर गया जब उस ख़ुदा के मर्द ने ये ख़्याल किया।

2. तो उसके कान में यह आवाज़ आई जब तूने अपने आप को तो तकब्बुर की नज़र से देखा तो हमसे दूर जा पड़ा और तेरे आगे पर्दा आ गया। जब तक तुझ से वो पर्दा नहीं हटता। तू इस असीम बारगाह में क़दम नहीं रख सकेगा। वो शैख़ अपने इन ख़्यालों से शर्मिंदा हुआ, उसने परेशान होकर इस काम से तो बाक़ी उसने फिर ख़ुदा के साथ नया अहद और वादा किया ताकि ख़ुदा की राह में अपनी जान क़ुर्बान कर दी दिल के आईने को धूल से साफ़ किया ताकि

उस महबूब के चेहरे का अक्स नजर आए।

3. ऐ बहानेबाज़! जो तेरा दिल चाहता है तेरा नफ़्स उसकी हिमायत में सौ-सौ दलीलें लाता है। अगर तू हराम चीज़ को अपने ऊपर हलाल करता है तेरे दिल को सौ ख़्यालों से तसल्ली मिलती है। जब यह बीमारी तुझ पर छा जाती है फिर तेरा अद्ल और इंसाफ गर्ज़ से ख़ाली नहीं होता, अपने नफ़्स के साथ कामयाबी हासिल कर ताकि इंसाफ़ वाला हो जाए, तो इंसाफ़ कर ताकि हक़ीक़त के दिल का मालिक हो जाए।

4. ऐ इलाही! मुझे हक़ीक़त देखने वाली आँखें अता कर, मेरे सिर को इश्क़ को सौदा दे। मेरे दिल में तूर की आग लगा दे। इस तरह के शोला उठे और ज़ंग दूर हो जाएँ, बरसों हो गए कि मैं तुझे-तुझसे चाहता हूँ। तू मेरी ज़रूरत पूरी क्यों नहीं करता। ग़ैब की ज़बान से ये ख़ुशख़बरी मिल रही है कि तेरे दरवाज़े से कोई नाउम्मीद ना फिरा जो तेरी दरगाह का रुख़ करेगा तो तेरी दरगाह से नाउम्मीद क्यों जाएगा। जो शख़्स तेरे दरवाज़े पर उम्मीद लेकर आता है। वह शाहिद मक़सूद को अपने आग़ोश में पाता है। ऐ मेरे ख़ुदा! मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम के तुफ़ैल और आले अबा पंजतन के तुफ़ैल क़यामत के दिन आले रसूल का साथ नसीब फ़रमा मेरी दुआ मक़बूलों के तुफ़ैल क़ुबूल हो जाए।

गुज़ारिश

समझ कर पढ़ा है ना भाई, अगर समझकर नहीं पढ़ा तो दोबारा पढ़ लीजिए और हाँ समझ में आना भी चाहिए।

ये तसव्वुफ़ है अगर पेशवाओं की हक़ीक़त मौजूद न रहती तो हम कैसे समझ पाते, हक़ को, हम तो फ़िरक़ों की तालीम में ही अटके रहते। ये नज़राना-ए-अक़ीदत है उसकी बारगाह में जिसने हक़ीक़त की तालीम के निशान अल्फ़ाज़ की शक्ल में हमारे लिए छोड़े और हमसे ये उम्मीद लगाई कि हम इसको समझकर फ़ैज़याब हो सकें। ये इल्मे-बातिन है इल्मे-ज़ाहिर की अक़्ल और समझ रखने वालों को कुफ़्र लगेगा, लेकिन हक़ीक़त तो यही है।

आपके लिए ये अल्फ़ाज़ सिर्फ़ इसलिए पेश किए जा रहे हैं कि आप पढ़ें, समझें और अमल में लाएँ। बस आपकी की गई ख़िदमत क़ुबूल हो। आमीन!

सय्यद अमीरुद्दीन
सज्जादा-नशीन मरकज़े-तसव्वुफ़
9899943607

ख़ादिमे-तसव्वुफ़
सूफ़ी ग़यासुद्दीन
मरकज़े-तसव्वुफ़
दरगाह सरकार ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन
बा-इख़्तयार काकी कु.सि.अ.
मकान न. 1011-ई, फ़र्स्ट वार्ड न. 7,
महरौली, नई दिल्ली-110030
मोबाइल : 7838116286

दुआए बा-इख़्त्यार काकी कु.सि.अ.

कुत्बे दीं, कुतबुल हिन्द, बा-इख़्त्यार काकी के वास्ते
खोल दे मेरे लिये तरक्की के सब रास्ते

मरकज़े तसव्वुफ को, तसव्वुफ का मरकज़ दे बना
इल्मे बातिन का हमेशा बोलबाला हो सदा

रस्मी, तकलीदी, रिवायती, इल्म से मुझको बचा
माफ फरमा दे मेरे मौला मेरी हर इक ख़ता

शुक्रिया सद शुक्रिया, सूफी गयासुद्दीन पर,हर लुत्फों करम के लिये
हर रहम और हर करम, हर फैज़याबी के लिये

किबला अमीरूद्दीन की कर, सादगी मुझको अता
पाक दिल और साफ दिल से करूँ सबका भला

या इलाही कुबूल फरमा मुझको तसव्वुफ के लिये
इल्मे मुकाशफा, इल्मे बातिन, इल्मे लदुनी के लिये

लफ्ज़ कम हैं, हालते दिल को सुनाने के लिये
कर कुबूल मेरी हर दुआ, कादरी, चिश्ती,
शुत्तारी घराने के लिए

आमीन आमीन

मरकज़े तसव्वुफ

ख़ानक़ाह शरीफ कादरिया-शुत्तारिया-चिश्तिया
दरगाह सरकार ख्वाजा कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.)
1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली- 110030
7838116286, 9899943607

MARKAZE TASAWWUF

دُعائے با-اختیار کاکی قدس سرہٗ العزیز

قطبِ دیں، قطب الہند، با۔ اختیار کاکی کے واسطے
کھول دے میرے لئے ترقی کے سب راستے

مَرکزِ تصوف کو تصوف کا مرکز دے بنا
عِلمِ باطن کا ہمیشہ بول بالا ہو سدا

رسمی، تقلیدی، روایتی، علم سے مجھ کو بچا
معاف فرما دے میرے مولیٰ میری ہر اک خطا

شکریہ صد شکریہ، صوفی غیاث الدین پر ہر لطف وکرم کے لئے
ہر رحم اور ہر کرم، ہر فیض یابی کے لئے

قبلہ امیر الدین کی کر سادگی مجھ کو عطا
پاک دل اور پاک خیال سے کروں سب کا بھلا

یا الٰہی قبول فرما مجھ کو تصوف کے لئے
عِلمِ مکاشفہ، عِلمِ باطن، عِلمِ لدونی کے لئے

لفظ کم ہیں حالت دل کو سنانے کے لئے
کر قبول میری ہر دعا قادری، چشتی،
شُطاری گھرانے کے لئے

اَمین اَمین

مَراکزِ تَصَوُّف
خانقاہ شریف: قادریہ، شطاریہ، چشتیہ
درگاہ سرکار خواجہ قطب الدین بااختیار کاکی قدس سرہٗ العزیز مہرولی، نئی دھلی-۱۱۰۰۳۰
7838116286, 9899943607

शजराये क़ुतबिया - चिश्तिया - आलिया

1. इल्तजा सुन ले खुदा ख़ैरूल वरा के वास्ते → सरवरे आलम इमामुल अम्बिया के वास्ते
2. दिल से जो आती है लब पे वो दुआ करले कुबूल → शाफाए महशर मोहम्मद मुस्तफा के वास्ते
3. हामिले मन कुन्तो मौला, जा नशीने मुस्तफा → फातेह ख़ैबर अली मुश्किल कुशा के वास्ते
4. नय्यर बुरजे तरीकत मआदने बहरूल उलूम → ख़्वाजाए-ख़्वाजा हसन बसरी शहा के वास्ते
5. काबाए मकसूदे इमाँ, मख़जने सिर्रे निहां → अब्दे वाहिद पेशवाये असफिया के वास्ते
6. रहनुमाये दीनो-इमाँ, राज़दारे कुन फकाँ → शाह फज़ील इब्ने अयाज़ हक नुमा के वास्ते
7. रहबरे गव्वास, बहरे कुन्तो कनज़न, मख़फिया → ख़्वाजा इब्राहीम अधम बल्ख़ी, हक नुमा के वास्ते
8. आरिफे असरारे कुल्ली, महरमे राज़े ख़फी → बू-हुजैफा मरअशी इल्मुल हुदा के वास्ते
9. किबलाए इमान ओ दीन, आईनाए हक्कुल यकीं → बू-हुरैरा, ख़्वाजा बसरी बे रिया के वास्ते
10. साहिबे इरफाँ व हैदर उल असर, शाने औलिया → ख़्वाजाए मुमशाद दीनूरी, शहा के वास्ते
11. आफताबे सिर्रे इरफाँ, महरमे राज़े निहाँ → ख़्वाजा बू इसहाक शामी दिलरूबा के वास्ते
12. कुद्दरतुल हक, वालीये अकलीम, असरारे बका → शाह अबी अहमद लकाये, हकनुमा के वास्ते
13. मम्बये अनवारे इरफां, मज़हरे सिर्रे निहाँ → नासेहउद्दीन, बू मोहम्मद बे रिया के वास्ते
14. रफअते शाने अता, औजे कमाले इत्तका → नासिर उल हक ख्वाजा बू यूसुफ शहा के वास्ते
15. पासबाने इल्मो हिकमत रहनुमाये मआरफत → ख़्वाजा मौदूद चिश्ती बा सफा के वास्ते
16. मज़हरे जूदो करम, नूरे बका, शम्माए हरम → ख़्वाजा जिन्दनी शहा, सदक व सफा के वास्ते
17. ताजदारे मिल्के इरफाँ, ग़रके बहरे ला मकाँ → ख़्वाजा उसमान हारूनी, शहा के वास्ते
18. दिल रूबाये औलिया, ख़्वाजा मौईनुद्दीन हसन → हिन्द के वाली, शहा जूदो सख़ा के वास्ते
19. मसदरे इरफाँ, शहीदे इश्क, रूहे आश्की → ख़्वाजा कुतबुद्दीन, बा इख़्त्यार काकी मे-लका के वास्ते
20. पेशवाये अहले हक, गंजुल शकर बाबा फरीद → गोहरे ताजे विलायत, हक नुमा के वास्ते
21. खुसर-वे खूबां निज़ामुद्दीन महबूबे इलाह → रहनुमाये सरगिरोहे औलिया के वास्ते
22. गरके बहरे हक, नसीरूद्दीन चराग़े देहलवी → ना-खुदाये कश्तीये, अहले सफा के वास्ते

(23) मम्बाए सिर्रे बका, इमाने तसलीमो रज़ा → शाह कमालुल हक, कमाले इत्तेका के वास्ते
(24) हज़रत ख़्वाजा सिराजुल हक, अमीने सिर्रे हक → चश्माए असरारे हक, शैखुल असफिया के वास्ते
(25) साहबे इल्मे हुदा, रूहे र-वाने औलिया → शैख़ इल्मुल हक, चराग़े इन्नमा के वास्ते
(26) रूए नूरे यज़्दी, अनवारे सोते सरमदी → ख़्वाजाए महमूद राजन हक नुमा के वास्ते
(27) कामिल ओ अकमल, जमाले हक, जमाले अहमदी → शैख़ जुम्मन राहबरे शाहो-गदा के वास्ते
(28) ख़्वाजा शैख़ मोहम्मद या कहें शैखे हसन → काशिफे असरारे कुत्बे औलिया के वास्ते
(29) वालीये मिल्के हकीकत, मज़हरुल्लाह अस्समद → हज़रत शैख मोहम्मद, बे रिया के वास्ते
(30) तलअते ईकाने हक, कुतबुल मदीना, शाने हक → आरिफे अल्लाह शैख याहया मदनी शहा के वास्ते
(31) हज़रते सूफी कलीमउल्लाह शैखुल औलिया → मज़हरे शाने फना, शाने बका के वास्ते
(32) चश्माये इरफाँ, निज़ामुद्दीन शैखुल आशेकीन → अज़मते औरंगाबादी रहनुमा के वास्ते
(33) मम्बए असरार, फख़्रे अव्वलीन वा आख़रीन → ख़्वाजा फख़्रुद्दीन मोहम्मद हक नुमा के वास्ते
(34) फख़्रे हक, फख़्रे जहाँ, नूरे मोहम्मद नूरे हक → ताजदारे किश्वरे, अहले सफा के वास्ते
(35) इल्मे बातिन के अमीन, गुन्जीनाए असरारे दीं → हज़रत ख़्वाजा सुलेमान बे रिया के वास्ते
(36) वाकिफे राज़े इलाही, आलिमे इल्मे ख़फी → शाह मोहम्मद ख़ैराबादी खुश लका के वास्ते
(37) दस्त गाहे तारीकुद्-दुनिया लकब सरदार बेग → ख़्वाजाए-ख़्वाजा हुसैन अहमद शहा के वास्ते
(38) हज़रत मिर्ज़ा मोहम्मद बेग शाहे मआरफत → हादीये राहे तरीकत, हक नुमा के वास्ते
(39) हज़रत मिर्ज़ा महबूब बेग फरदुल फरीद फी तौहीद → माहताबे चिश्तिया, कलन्दरी बा सफा के वास्ते
(40) हज़रत ख़्वाजा क़िबला अमीरुद्दीन अनवारे यकीं → दीन के हकीकी अमीर बहरे लका के वास्ते
(41) ख़ादिमे तसव्वुफ सूफी गयासुद्दीन नूरे मआरफत → आरिफे कामिल, चराग़े पुर ज़िया के वास्ते
(42) आजज़ी अहकर अमीरुद्दीन की मकबूल कर → दीन हक के इन नफूसे कुदसिया के वास्ते

सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी सय्यद अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : 9899943607

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ादिमे तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : 7838116286

1011-E-First, Landmark दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बा-इख़्त्यार काकी (कु.सि.अ.) महरौली शरीफ, नई दिल्ली-110030

(23) منبعِ سرّ بقا، ایمانِ تسلیم و رضا شاہ کمال الحق، کمالِ اتّقا کے واسطے

(24) حضرت خواجہ سراج الحق، امینِ سرّ حق چشمائے اسرارِ حق، شیخ اصفیاء کے واسطے

(25) صاحبِ علمِ ھدیٰ روحِ روانِ اولیاء شیخ علم الحق، چراغِ انمّاء کے واسطے

(26) روئے نورِ یزدی، انوارِ صوتِ سرمدی خواجۂ محمود راجن حق نما کے واسطے

(27) کامل و اکمل، جمالِ حق، جمالِ احمدی شیخ جمّن راہبرِ شاہ و گدا کے واسطے

(28) خواجۂ شیخ محمد یا کہیں شیخ حسن کاشفِ اسرارِ قطبِ اولیاء کے واسطے

(29) والیِ ملکِ حقیقت، مظہر اللہ الصّمد حضرت شیخ محمد، بے ریا کے واسطے

(30) طلعتِ ایقانِ حق، قطب المدینہ، شانِ حق عارفِ اللہ شیخ یحییٰ مدنی شہا کے واسطے

(31) حضرتِ صوفی کلیم اللہ شیخ الاولیاء مظہرِ شانِ فنا، شانِ بقا کے واسطے

(32) چشمۂ عرفاں، نظام الدین شیخ العاشقین عظمتِ اورنگ آبادی رہنما کے واسطے

(33) منبعِ اسرار، فخرِ اوّلین و آخرین خواجہ فخرالدین محمد حق نما کے واسطے

(34) فخرِ حق، فخرِ جہاں، نورِ محمد نورِ حق تاج دارِ کشورِ، اہلِ صفا کے واسطے

(35) علمِ باطن کے امین، گنجینۂ اسرارِ دیں حضرت خواجہ سلیمان بے ریا کے واسطے

(36) واقفِ رازِ الٰہی، عالمِ علمِ خفی شاہ محمد خیرآبادی خوش لقا کے واسطے

(37) دست گاہِ تارک الدنیا لقب سردار بیگ خواجۂ خواجہ حسین احمد شہا کے واسطے

(38) حضرتِ مرزا محمد بیگ شاہِ معرفت ہادیِ راہِ طریقت، حق نما کے واسطے

(39) حضرت مرزا محبوب بیگ فردالفرید فی توحید ماہتابِ چشتیا، کلندری با صفا کے واسطے

(40) حضرت خواجہ قبلہ امیرالدین، انوارِ یقیں دین کے حقیقی امیر بحرِ لقا کے واسطے

(41) خادمِ تصوف صوفی غیاث الدین نورِ معرفت عارفِ کامل، چراغِ پُرضیاء کے واسطے

(42) عاجزی احقر امیرالدین کی مقبول کر دین حق کے ان نفوسِ قدسیہ کے واسطے

مرکز تصوف
خادمِ تصوّف
سرکارِ صوفی غیاث الدّین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ھاشمی، حسنینی، محبوبی
فون نمبر: 7838116286

سجادہ نشین
مرکز تصوف
صوفی سید امیرالدین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ھاشمی، حسنینی، محبوبی
فون نمبر: 9899943607

۱۰۱۱، فی - پہلا، درگاہ سرکار قطب الدین بہ اختیار کاکی قدس سرالعزیز مہرولی شریف، نئی دہلی - ۱۱۰۰۳۰

شجرئے قطبیہ - جشتیہ - عالیہ

(1) التجا سن لے خدا خیر الوریٰ کے واسطے ← سرورِ عالم امام الانبیاء کے واسطے
(2) دل سے جو آتی ہے لب پہ وہ دُعا کرلے قبول ← شافعِ محشر محمد مصطفیٰ کے واسطے
(3) حاملِ مَن کنتُ مولیٰ، جانشینِ مصطفیٰ ← فاتحِ خیبر علی مشکل کشاء کے واسطے
(4) نیّر بُرجِ طریقت ، معدنِ بحر العلوم ← خواجۂ خواجہ حسن بصری شہا کے واسطے
(5) کعبۂ مقصودِ ایماں، مخزنِ سرِ نہاں ← عبدِ واحد پیشوائے اصفیاء کے واسطے
(6) رہنمائے دین و ایماں، رازدارِ کن فکاں ← شاہ فضیل ابنِ عیاض حق نما کے واسطے
(7) رہبرِ غوّاص، بحرِ کنتُ کنزاً مخفیا ← خواجہ ابراہیم ادہم بلخی، حق نما کے واسطے
(8) عارفِ اسرارِ کلیّ، محرمِ رازِ خفی ← بو حزیفہ مرعشی علم الہدیٰ کے واسطے
(9) قبلۂ ایمان و دین، آئینۂ حقُّ الیقیں ← بو ہریرہ، خواجہ بصری بے ریا کے واسطے
(10) صاحبِ عرفاں و ہیدر العصر، شانِ اولیاء ← خواجۂ ممشاد دینوری شہا کے واسطے
(11) آفتابِ سرِّ عرفاں، محرمِ رازِ نہاں ← خواجہ بو اسحاق شامی دلروبا کے واسطے
(12) قدرت الحق ، والیِ اقلیم، اسرارِ بقا ← شاہ ابی احمد لقائے، حق نما کے واسطے
(13) منبعِ انوارِ عرفاں، مظہرِ سرِّ نہاں ← ناصح الدین، بو محمد بے ریا کے واسطے
(14) رفعتِ شانِ عطا، اوجِ کمالِ اِتّقا ← ناصرالحق خواجہ بو یوسف شہا کے واسطے
(15) پاسبانِ علم و حکمت ، رہنمائے معرفت ← خواجہ مودود چشتی با صفا کے واسطے
(16) مظہرِ جودو کرم ، نورِ بقا، شمعِ حرم ← خواجہ زندنی شہا، صدق و صفا کے واسطے
(17) تاجدارِ ملکِ عرفاں، غرقِ بحرِ لامکاں ← خواجۂ عثمان ہارونی، شہا کے واسطے
(18) دلرُبائے اولیاء، خواجہ معین الدین حسن ← ہند کے والی، شہا جودو سخا کے واسطے
(19) مصدرِ عرفاں، شہیدِ عشق، روحِ عاشقی ← خواجہ قطب الدین با-اختیار کاکی مہ لقا کے واسطے
(20) پیشوائے اہلِ حق، گنج الشکر بابا فرید ← گوہرِ تاجِ ولایت، حق نما کے واسطے
(21) خُسروے خوباں نظام الدین محبوبِ الٰہ ← رہنمائے سَرگروہِ اولیاء کے واسطے
(22) غرقِ بحرِ حق ، نصیر الدین چراغِ دہلوی ← ناخدائے کشتئے ، اہلِ صفا کے واسطے

दुआ-ए-मरकज़े तसव्वुफ

① जानता हूँ हद से बढ़ कर हैं मेरी बद फेलियाँ → तू मगर है रहम वाला और बड़ा ही मेहरबाँ
② तेरी रहमत की कोई हद है ना कोई इन्तेहा → बारिशे इकराम कर दे बख्श दे मेरी ख़ता
③ कर मुझे इल्मे लदूनी की ज़िया से फैज़याब → दूर हो जाए नज़र से सिर्रे हस्ती का हिजाब
④ हाँ वही इल्मे तसव्वुफ जो बुज़ुर्गों को मिला → जिस से इनके गुलशने हस्ती का हर गुन्चा खिला
⑤ जिस ने अहले मआरफत को आशनाए हक किया → जिस की सूरत पर हुए गरवीदा सारे औलिया
⑥ बख्श दे मौला उसी इल्मे सफा की रोशनी → दिल से मिट जाये मेरे गुमराहियों की तेरगी
⑦ नासमझ ना फहम हूँ नूरे बसीरत कर अता → सारे पीराने तरीकत की मोहब्बत कर अता
⑧ नूरे इश्के पन्जतन से दिल मेरा मामूर कर → बादऐ ईमाँ की लज्ज़त से मुझे मस्तूर कर
⑨ कर बला की याद दिल में रोशनी बन कर रहे → उमर भर शब्बीर का ग़म ज़िंदगी बन कर रहे
⑩ दिल मेरा दुनिया की हर आलूदगी से पाक कर → मुझ को अहले मआरफत के रास्ते की ख़ाक कर
⑪ कर अता तौफीके कामिल हक परस्ती के लिये → मुन्तखब कर ले मुझे इरफाँ की मस्ती के लिये
⑫ दूर रख आमाले बद से, अहले शर के काम से → फितना परवर इल्मे रस्मी के सुनहरे दाम से
⑬ दुख, मुसीबत, कर्ज, बीमारी, बलाए नागहाँ → इन से रख महफूज़ हर दम ऐ ख़ुदाए मेहरबाँ
⑭ सबर ऐसा दे के मैं साबिर रहूँ हर हाल में → तेरे हर अहसान का शाकिर रहूँ हर हाल में
⑮ तुझ से उम्मीदे करम है वास्ता क्या तूर से → जगमगा दे दिल मेरा रुहानियत के नूर से
⑯ क्या बयाँ तुझ से करूँ मैं ए ख़ुदाए ज़लजलाल → सब अयाँ है तुझ पे मेरे ज़ाहिर व बातिन का हाल
⑰ अपनी शाने किबरियाई की झलक मौला दिखा → मुफलिसों को सदकऐ आले अबा कर दे अता
⑱ दस्त बस्ता मुल्तजी हैं ख़ाके पाए औलिया → हो करम इन पर ब फैज़े बारगाहे चिश्तिया
⑲ मेरे मौला लाज रख ले बन्दऐ रन्जूर की → हाथ फैलाए हुए इस नातवाँ मजबूर की
⑳ अपनी रहमत का दिले 'फारूख़' पर कर दे नज़ूल → करबला वालों के सदके ये दुआ कर ले कुबूल

सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी सय्यद अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : 9899943607

मरकज़े तसव्वुफ
ख़ादिमे तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
फोन : 7838116286

1011-E-First, Landmark दरगाह सरकार कुतबुद्दीन बा-इख्त्यार काकी (कु.सि.अ.) महरौली शरीफ, नई दिल्ली-110030

دعائے مرکزِ تصوف

(1) جانتا ہوں حد سے بڑھ کر ہیں مری بد فعلیاں ← تو مگر ہے رحم والا اور بڑا ہی مہرباں
(2) تیری رحمت کی کوئی حد ہے نہ کوئی انتہا ← بارشِ اکرام کر دے بخش دے میری خطا
(3) کر مجھے علمِ لدونی کی ضیا سے فیض یاب ← دور ہو جائے نظر سے سرِ ہستی کا حجاب
(4) ہاں وہی علمِ تصوف جو بزرگوں کو ملا ← جس سے ان کے گلشنِ ہستی کا ہر غنچہ کھلا
(5) جس نے اہلِ معرفت کو آشنائے حق کیا ← جس کی صورت پر ہوئے گرویدہ سارے اولیاء
(6) بخش دے مولیٰ اُسی علمِ صفا کی روشنی ← دل سے مٹ جائے مرے گمراہیوں کی تیرگی
(7) نا سمجھ نا فہم ہوں نورِ بصیرت کر عطا ← سارے پیرانِ طریقت کی محبت کر عطا
(8) نورِ عشقِ پنجتن سے دل مرا مامور کر ← بادۂ ایماں کی لذّت سے مجھے مستور کر
(9) کربلا کی یاد دل میں روشنی بن کر رہے ← عمر بھی شبّیر کا غم زندگی بن کر رہے
(10) دل مرا دنیا کی ہر آلودگی سے پاک کر ← مجھ کو اہلِ معرفت کے راستے کی خاک کر
(11) کر عطا توفیقِ کامل حق پرستی کے لئے ← منتخب کر لے مجھے عرفاں کے مستی کے لئے
(12) دور رکھ اعمالِ بد سے، اہلِ شر کے کام سے ← فتنہ پرور علمِ رسمی کے سنہرے دام سے
(13) دکھ، مصیبت، قرض، بیماری، بلائے ناگہاں ← ان سے رکھ محفوظ ہر دم اے خدائے مہرباں
(14) صبر ایسا دے کہ میں صابر رہوں ہر حال میں ← تیرے ہر احسان کا شاکر رہوں ہر حال میں
(15) تجھ سے امید کرم ہے واسطہ کیا طور سے ← جگمگا دے دل مرا روحانیت کے نور سے
(16) کیا بیاں تجھ سے کروں میں اے خدائے ذوالجلال ← سب عیاں ہے تجھ پہ میرے ظاہر و باطن کا حال
(17) اپنی شانِ کبریائی کی جھلک مولا دکھا ← مفلسوں کو صدقۂ آلِ عبا کر دے عطا
(18) دست بستہ مُلتجی ہیں خاک پائے اولیاء ← ہو کرم ان پر بہ فیضِ بارگاہ چشتیہ
(19) میرے مولا لاج رکھ لے بندۂ رنجور کی ← ہاتھ پھیلائے ہوئے اس ناتواں مجبور کی
(20) اپنی رحمت کا دلِ فاروقؔ پر کر دے نزول ← کربلا والوں کے صدقے یہ دُعا کر لے قبول

مرکز تصوف
خادم تصوف
سرکار صوفی غیاث الدین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ھاشمی، حسینی، محبوبی
فون نمبر: 7838116286

سجادہ نشین
مرکز تصوف
صوفی سید امیر الدین شاہ
قادری، شطاری، چشتی، ھاشمی، حسینی، محبوبی
فون نمبر: 9899943607

۱۰۱۱، فی - پہلا، درگاہ سرکار قطب الدین با-اختیار کاکی قدس سرہ العزیز مہرولی شریف ، ڈی دھلی- ۱۱۰۰۳۰

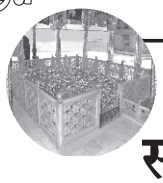

ख़ादिमे तसव्वुफ

सरकार
सूफी ग़यासुद्दीन शाह

कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी

پڑھنا ہے، پڑھانا ہے، سیکھنا ہے، سکھانا ہے
خود کو اور سب کو آگے لے جانا ہے

पढ़ना है, पढ़ाना है, सीखना है, सिखाना है।
खुद को और सबको आगे ले जाना है।

چاہے آدھی روٹی کھایئے
لیکن بچوں کوضرور پڑھایئے

चाहे आधी रोटी खाइये।
लेकिन बच्चों को ज़रूर पढ़ाईये।

मरकज़े तसव्वुफ

दरगाह हज़रत ख़्वाजा कुतबुद्दीन
बा-इख्त्यार काकी (कु.सि.अ.)
1011-E-First, दरगाह शरीफ, महरौली, नई दिल्ली-110030
फोन : 07838116286, 011-26646216

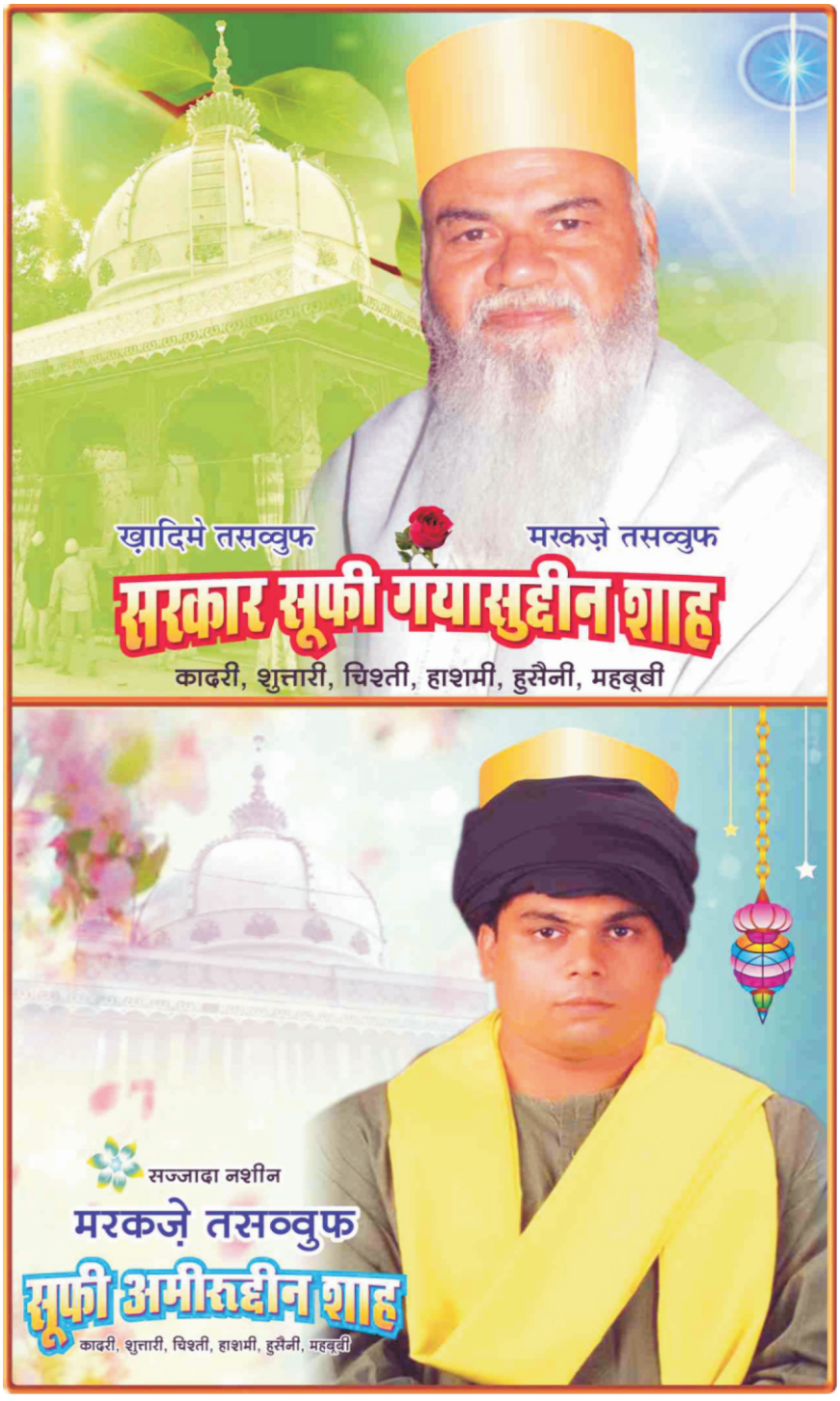
ख़ादिमे तसव्वुफ
मरकज़े तसव्वुफ
सरकार सूफी गयासुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी
सज्जादा नशीन
मरकज़े तसव्वुफ
सूफी अमीरुद्दीन शाह
कादरी, शुत्तारी, चिश्ती, हाशमी, हुसैनी, महबूबी

SARKAR SUFI
GHYASSUDDIN SHAH

سرکار صوفی غیاث الدین شاہ

MARKAZE TASAWWUF

Khanqah Sharif Qadriya, Shuttariya, Chishtiya

DARGAH KHWAJA QUTBUDDIN BA-IKHTIYAR KAKI (Q.S.A.)

1011-E-First, Ward No. 7, Dargah Mehrauli, New Delhi-110030